ज्योतिष में हस्तरेखा-शास्त्र सबसे कठिन माना गया है। ज्योतिष के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली ने इस विज्ञान को चित्रों के माध्यम से इतनी सरल भाषा में समझा दिया है कि इस विषय के अनभिज्ञ व्यक्ति को भी ज्योतिष में रुचि हो जाती है।

हमारा दावा है कि इसके मनन से पाठक न केवल सड़क-किनारे के ठगों से बचे रहेंगे बल्कि अपना एवं अपने मित्रों-परिचितों के जीवन भी हाथ की रेखाओं से पढ़ सकेंगे और अपने क्षेत्र में लोकप्रियता व प्रसिद्धि का साधन भी पा जायेंगे।
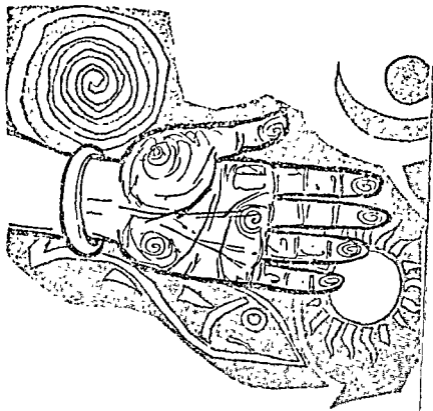
सुबोध पब्लिकेशन

सुबोध हस्त रेखा

डा० नारायणदत्त श्रीमाली
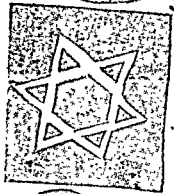
ज्योतिष में सामुद्रिक शास्त्र सर्वाधिक दुष्कर और कठिन माना गया है। रेखाओं को पढ़ पाना और तदनुसार सही-सही अर्थ निकाल लेना अत्यन्त परिश्रम, प्रतिभा और अध्ययन की अपेक्षा रखता है। मैंने इस पुस्तक में इसी जटिल और दुरूह विषय को सरल-से-सरल बनाकर सर्वसाधारण के लिए बोधगम्य बनाने का प्रयास किया है।

मैंने इस पुस्तक में कुछ विशेषताएँ रखी हैं—एक तो यह कि प्रत्येक विषय को चित्रों के माध्यम से बोधगम्य बनाकर समझा जाय; दूसरे, इस विवेचन की पुष्टि में जीवन से अनुभूत उदाहरण देकर कथन को प्रामाणिक बनाया जाय, जिससे न केवल विषय के समझने में सुविधा रहे, अपितु उस समझ में एक दृढ़ता उत्पन्न हो सके; तीसरे, मैंने विषय को पूर्णतः शास्त्रसम्मत रखने का प्रयास किया है।

कुछ अध्याय इसमें ऐसे दिये हैं, जो सम्भवतः पहली बार प्रकाश मे आ रहे हैं; अभी तक सामुद्रिक शास्त्र पर प्रकाशित पुस्तकों में कहीं भी इन विषयों पर लिखी सामग्री देखने को नहीं मिली। घटनाओं का काल निर्धारण, हस्त-रेखाओं से जन्म-तारीख व जन्म-पत्र बनाना आदि विषय अभी तक सर्वथा गोपनीय थे, जिन्हें पाठकों के हितार्थ पहली बार प्रकाश मे लाया जा रहा है।

मेरी ज्योतिष-सम्बन्धी पुस्तकें पाठकों में अत्यन्त लोकप्रिय रहीं, और उन्हें प्रत्येक पुस्तक में कुछ नवीनताएँ मिलीं, यह उनके नित्यप्रति आते पत्रों से ध्वनित है। मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ, और आभारी हूँ प्रकाशक महोदय का, जिनकी लगन, तत्परता और सहयोग से ही यह पुस्तक इतने सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकी है।

नारायणदत्त श्रीमाली

विषय-सूची

१

प्रवेश

सामुद्रिक ज्योतिष मानव की वे प्रारंभिक वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हैं, जो उसे सभ्यता के प्रथम चरण में ही प्राप्त हुई। मानव-मन सतत जिज्ञासाशील रहा है, और यह जिज्ञासा-भावना ही उसे बर्बर युग से अणुयुग में ला सकने में समर्थ हुई है। अँधेरे और अज्ञान में भटकने वाला यह आदि मानव आज सभ्यता एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों के उस छोर पर जा खड़ा हुआ है जहाँ वह चन्द्रमा, मंगल और बृहस्पति के लोकों को भी नापने में समर्थ हो सका है।

मनुष्य और पशु के बीच विभाजक रेखा उसका विवेक है। जहाँ यह विवेक छूटा, वहाँ मनुष्य और पशु मे कोई भेद नहीं रह जाता क्योंकि भूख, काम और निद्रा ऐसी सहज क्रियाएँ हैं, जो दोनों में समान रूप से पाई जाती हैं; परन्तु बुद्धि या मस्तिष्क ही एक ऐसी विशेषता मनुष्य के पास है, जिससे वह निरन्तर ऊपर-ही-ऊपर उठता गया है।

हथेली पर पाई जाने वाली रेखाएँ इसी मस्तिष्क का क्रियात्मक रूप हैं, उसका सांकेतिक रेखांकन हैं। जिस प्रकार मस्तिष्क जीवन एवं विश्व के घात-प्रतिघातों को ग्रहण करता रहता है, ठीक उसी रूप में उसका रेखांकन हथेली पर होता रहता है। यद्यपि यह परिवर्तन इतना सूक्ष्म होता है कि सहज ही देख पाना सम्भव नहीं, परन्तु दक्ष एवं अनुभवी रेखाविद् इस परिवर्तन को भी पहचान लेते हैं, और सही-सही फलादेश कह सकने में समर्थ होते हैं।

बालक जब जन्म लेता है, तो उसके हाथ की रेखाएँ अस्त-व्यस्त, विरल और अस्पष्ट-सी होती हैं; साथ ही उसकी मुट्ठियाँ भी बंद रहती हैं, परन्तु फिर भी, उसकी हथेली में भी तीन रेखाएँ—हृदय-रेखा,

मानस-रेखा और जीवन-रेखा—स्पष्ट होती है। आश्चर्य की बात तो यह है कि ये तीनों रेखाएँ तर्जनी के मूल भाग के पास से होकर गुजरती हैं, अर्थात् तर्जनी का मूल भाग वह केन्द्र है, जो इन सबको संचालित करता रहता है। वस्तुतः यह केन्द्र विश्व-भौतिकी ऊर्जा को अपने-आप में स्वीकारता हुआ, ग्रहण कर पूरी हथेली में फैला देता है और अपना वृत्त पूरा करके पुन: उसी केन्द्र पर पुञ्जीभूत हो जाता है। इसी ऊर्जा को कुछ विद्वान् चिन्मय तत्त्व, कुछ ईश्वर, कुछ विद्युत् तो कुछ ग्रह-रश्मियाँ बताते हैं, यह है वही प्राणदायिनी शक्ति जो पूरे जीवन को संचालित करती है।

पाश्चात्य विद्वान् डब्ल्यू० जी० बेनहम ने उपर्युक्त तथ्य को वैज्ञानिक रूप देते हुए बताया है कि बच्चा माँ के गर्भ में सक्रिय रूप में नहीं रहता, परन्तु ज्योंही वह जन्म लेता है,और बाह्य सांसारिक वातावरण में प्रवेश करता है, वह स्वयमेव स्वतन्त्र इकाई बन जाता है। इसी क्षण से बालक का मस्तिष्क क्रियाशील हो जाता है, और उसके साथ-ही-साथ उसका रक्त-संचालन भी प्रारम्भ हो जाता है। इन दोनों क्रियाओं —मस्तिष्क का क्रियाशील होना, और शरीर में स्वस्थ रक्त का संचालन—का सीधा प्रभाव शरीर के अन्य अवयवों पर भी पड़ता है। फलस्वरूप वे गतिवान् हो उठते हैं और यही कारण है कि शनैः-शनैः सर्वप्रथम उसकी बन्द मुट्ठियाँ खुल जाती हैं। इसी क्षण से मस्तिष्क से जीवनी शक्ति के प्रभावानुरूप हथेली पर रेखाओं का उदय होता है, और वे प्रबल तथा पुष्ट होने की दिशा में अग्रसर होती हैं।

अत्यन्त प्रारम्भिक अवस्था में बालक का व्यवहार पशुवत् ही होता है—सोना, जागना और खाना, ये तीन क्रियाएँ ही मुख्य रूप से रहती हैं। इन दिनों वह किसी भी वैचारिक अवस्था में नहीं होता, परन्तु धीरे-धीरे अभ्यास एवं वातावरण से वह समझने लगता है; भले-बुरे की पहचान करने लगता है; अपने-पराये का ज्ञान होता है, और स्थितियों के अनुरूप हँसने-रोने की क्रियाओं में आगे बढ़ता है। इसके साथ-ही-साथ उसकी हथेली की रेखाएँ भी पुष्टता एवं स्पष्ट रूप ग्रहण करने लगती हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हथेली की रेखाएँ परिवर्तनशील

हैं। ज्यों-ज्यों मानसिक प्रवृत्तियों में स्थिरता आने लगती है, त्यों-त्यों उसकी रेखाओं में भी स्थिरता का आभास होने लगता है। अतः ज्योतिष में गणित की तरह निश्चितता नहीं रहती। मस्तिष्क में प्रवृत्तियों की तीव्रता के अनुसार रेखाओं का रूप भी बदलता रहता है, अतः काफी दूर की भविष्यवाणियाँ करना हस्तरेखाविद् के लिए संभव नहीं। इस दृष्टि से देखा जाय, तो सामुद्रिक शास्त्र गणित की निश्चितता की अपेक्षा मनोविज्ञान के अधिक निकट है। सोचने और तदनुसार कार्य करने से रेखाओं में परिवर्तन संभव है। वय-प्राप्ति के साथ-साथ पुरानी रेखाएँ मिट जाती हैं, या बदलकर नया रूप धारण कर लेती हैं। कुछ विद्वान् मानते हैं कि सात वर्षों में हथेली की रेखाओं में पूर्णतः परिवर्तन आ जाता है; परन्तु मेरे अनुभव के अनुसार हथेली की रेखाओं में निरन्तर पल-प्रतिपल परिवर्तन होता रहता है, और कुछ महीनों या दिनों में भी रेखाओं में परिवर्तन स्पष्ट देखा जा सकता है।

पूरी हथेली में तीन रेखाएँ ऐसी हैं, जो अपरिवर्तित रहती हैं। हृदय, मानस और जीवन-रेखा पर परिवर्तन का कोई प्रभाव दृष्टि-गोचर नहीं होता, क्योंकि मूलतः व्यक्तित्व के कुछ तत्त्व जन्मजात और वंशानुक्रम से पैतृक होते हैं। हाँ, इन रेखाओं को प्रभावित करने वाली सहायक रेखाएँ बनती और बिगड़ती रहती हैं।

जैसाकि मैं ऊपर कह चुका हूँ, एक कुशल हस्तरेखाविद् के लिए सही मनोविज्ञान का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है, साथ ही हाथ का अध्ययन करते समय आपकी दृष्टि वैज्ञानिक विवेचना से युक्त हो। व्यक्तित्व की कोई भी चेष्टा अकारण नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक चेष्टा के पीछे संवेग होते हैं। यद्यपि वातावरण, शिक्षा एवं संस्कृति के फल-स्वरूप संवेगों में परिष्कार होता है, फिर भी संवेग अपनी मूलभूत विशेषता अपने-आप में सँजोये रहते हैं, और मनुष्य इन्हीं संवेगों का पुञ्जीभूत स्वरूप है। मनुष्य की प्रत्येक चेष्टा भूत, भविष्य या वर्तमान से सम्बन्धित होती है, और इन्हीं संवेगों के स्वरूप का सही ज्ञान प्राप्त कर यदि हथेली की रेखाएँ पढ़ी जायें, तो फलित शत-प्रतिशत सही उतरता है। मनुष्य में अपार संभावनाएँ हैं; अकल्पित क्षमताएँ हैं। एक कुशल हस्तरेखाविद् को चाहिये कि वह उन क्षमताओं का पता

लगावे, उनकी सम्भावनाओं को पहचाने और उनमें छिपी शक्तियों को जागृति करे। हस्तरेखा-विशेषज्ञ को केवल पंडित ही नहीं होना चाहिये, अपितु उसका व्यवहार एक मित्र और सलाहकार के अनुसार होना चाहिये। अशुभ के प्रति सचेत करते हुए भी मंगल एवं शुभ के प्रति आशान्वित भी करिये ! संभावित विपत्तियों की जानकारी देते हुए उसके साहस एवं क्षमताओं को भी उजागर करिये ! उसे मात्र भाग्यवादी ही न बनाएँ, अपितु कर्मक्षेत्र में संघर्षरत बनने योग्य उसका निर्माण करिये ! यही आपकी सफलता है, आपकी विशेषता है।

अन्त मे, जबकि हम हथेली और रेखाओं का ज्ञान प्राप्त करने की दिशा में बढ़ें, कुछ ऐसी बातें हैं, जिनका पालन करना हमारे लिए आवश्यक है। अपने अनुभव के आधार पर मैं कुछ ऐसे बिन्दु प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिनका पालन पाठकों की सफलता के लिए आवश्यक है।

(१) कभी भी उतावली में या बिना सोचे-समझे तुरन्त ही कोई भी निर्णय न दें। किसी भी एक चिह्न को देखकर तुरन्त फलाफल कह देना शुभ नहीं, क्योंकि कोई भी अकेला चिह्न पूरी हथेली का प्रतिनिधित्व नहीं करता। हथेली का सर्वांगीण अध्ययन करके ही फलादेश कहना विज्ञान-सम्मत है।

(२) यथासम्भव विरोधाभास से बचें। कभी-कभी हाथ में एक ही तथ्य को उजागर करने वाली शुभ और अशुभ दोनों ही रेखाएँ दिखाई देती हैं। ऐसी स्थिति में उस रेखा का उद्गम और उसकी सहायक रेखाओं का अध्ययन करके ही फलादेश कहना उचित है।

(३) यदि हाथ की रेखाओं में बुरे तथ्य दिखाई दे रहे हों तो उन्हें भी चौंकाने वाले ढग से न कहिये, क्योंकि इससे सामने वाले पर मनोवैज्ञानिक रूप से बुरा असर पड़ता है; यदि कमजोर हृदय का व्यक्ति हो, तो उसके लिए अप्रिय सूचना सह पाना भी कठिन होता है। ऐसे तथ्य कहने से पूर्व हस्तरेखाविद् को चाहिए कि वह धीरे-धीरे सामनेवाले को तैयार करे, उसका मानस दृढ़ करे और फिर उसे कहे, साथ ही यह आश्वासन भी दे कि यदि इच्छाशक्ति प्रबल रही, तो यह अप्रिय तथ्य टल भी सकता है, अथवा इसका प्रभाव न्यून भी हो सकता है।

किसी एकाध पुस्तक को पढ़कर ही अपने-आपको पंडित मत समझिये ! रेखाओं का सिद्धान्त समझने के साथ-साथ उसका व्यावहारिक ज्ञान भी परमावश्यक है। बाजार में जो इस विषय में पुस्तकें उपलब्ध हैं, उनमें से मुझे कोई भी पुस्तक प्रामाणिक नजर नहीं आती। अधिकतर ऐसी पुस्तकें या तो अनुवादमात्र हैं, अथवा पाश्चात्य ज्योतिर्विदों का पिष्टपेषण। न तो वे परिश्रम से अध्ययन और अनुभव करते हैं, और न ही अनुभव को लेखनी से व्यक्त करते हैं। कीरो, सेंट जारमन, बेन्थम, नोएल जेक्विन आदि हस्तरेखा-विशेषज्ञों की पुस्तकें बाजार में उपलब्ध हैं, परन्तु इनमें से भी कोई पूर्णतया प्रामाणिक नहीं, अनुभव का अभाव इनमें भी दृष्टिगोचर होता है।

मैंने जीवन में हजारों नहीं लाखों हाथ देखे हैं, लाखों हाथों के प्रिंटों का अध्ययन किया है; इसमें स्वदेश तथा विदेश सभी जगह के व्यक्ति हैं, तथा समाज के सभी स्तर एवं श्रेणी के लोगों के हाथ देखने का अवसर मिला है, और समय-समय पर मैंने जो भविष्यवाणियाँ की हैं, वे शत-प्रतिशत ही उतरी हैं। पाठक देखेंगे कि अन्य पुस्तकों की अपेक्षा इस पुस्तक में कुछ नवीनता है, व्यावहारिक ज्ञान का अनुभव इसमें विद्यमान है, और विषय का विवेचन वैज्ञानिक पद्धति पर करके विषय को बोधगम्य बनाने की ओर प्रयत्न किया है।

हस्तरेखा-जिज्ञासुओं को चाहिए कि वे सिद्धान्तरूप में रेखाओं का ज्ञान प्राप्त करें, और फिर व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करें, तभी वे फलादेश कह सकने में समर्थ होंगे और उनकी वाणी कालजयी बन सकेगी।

२

हाथ

कलाई की सीमा पर मणिबन्ध-रेखाओं से आगे उँगलियों के छोर तक का भाग हाथ कहलाता है और यही भाग हस्तरेखा के अध्ययन

का विषय है। इसके सिरे पर छोटी-छोटी हड्डियों से निर्मित उँगलियां होती हैं। इस क्षेत्र को 'मेटाटारसस' भी कहा जाता है। यह पूरा क्षेत्र, इस पर निर्मित प्रत्येक रेखा, बारीक जाल, तन्तु, उभरा और दबा हुआ भाग तथा उँगलियों की केश-सूक्ष्म-रेखाएँ भी हमारे अध्ययन का विषय हैं, अतः हथेली का अध्ययन करते समय पूरी सावधानी बरतना परमावश्यक है।

त्वचा—हथेली की त्वचा, लचक और रंग, निर्णय तक पहुँचाने में काफी सहायता प्रदान करते हैं। आप किसी का भी हाथ ज्योंही अपने हाथ में लेते हैं, आपका पहला अनुभव स्पर्शात्मक होता है। त्वचा व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्ति बताने में सक्षम होती है। यदि हाथ कर्कश, भारी और कठोर हो तो आप एक ऐसे व्यक्ति के सामने हैं, जो पाशविक वृत्तियों से प्रभावित है; उसका जीवन आदिम सवेगों से संचालित है। उसके व्यवहार, कार्य और चरित्र में भी एक प्रकार का खुरदरापन होगा; उसमें सलीके का अभाव होगा, तथा मुँहफट होने के साथ-साथ कर्कश व्यक्तित्व वाला होगा। ये वे व्यक्ति होते हैं, जो जीवन-यापन के लिए कठोर परिश्रम करते हैं; संवेदनाओं की अपेक्षा मूल संस्कारों से अधिक बंधे हुए होते हैं।

इसके विपरीत कुछ व्यक्तियों की हथेलियाँ नर्म, लचकदार और लालिमा लिये हुए होती हैं। ऐसे व्यक्ति पूर्णतः आत्मकेन्द्रित होते हैं। जीवन के कठोर संघर्षों का मुकाबिला करने से ये घबराते हैं। कल्पना के क्षेत्र में विचरण करने वाले ये लोग शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम में ही ज्यादा विश्वास करते हैं। ये जीवन में ऐश्वर्यता चाहते हैं; इनकी अभिरुचि उन्नत होती है, पर ये कठोर श्रम नहीं कर सकते।

कुछ त्वचाएँ इन दोनों का सम्मिश्रण-सा लिये हुए होती हैं, जो न अधिक कठोर होती है, और न अधिक लचीली और नर्म। ऐसे व्यक्ति जीवन में सफलता के सन्निकट कहे जा सकते हैं। इनमें व्यावहारिकता एवं कल्पनाशीलता का अद्भुत सम्मिश्रण होता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ये सफलता के द्वार पर दस्तक देने में प्रवृत्त रहते हैं। इनके निर्णय विवेकपूर्ण तथा कार्य में स्वच्छता एवं सुघड़ता होती है।

मध्यमा
अनामिका
तर्जनी
कनिष्ठा
अंगूठा
हृदय रेखा
मस्तिष्क रेखा
मंगल रेखा
मणि बन्ध

हथेली का रंग भी मानव के आन्तरिक जीवन का प्रतिबिम्ब होता है। हथेली को अपने दोनों हाथों में लेकर थोड़ी-सी शक्ति के साथ दबाकर छोड़ दीजिये। दो-तीन बार ऐसा करिये, आप देखेंगे कि हथेली का रंग अपनी स्वाभाविक स्थिति में आ गया है। यही वह स्थिति है, जबकि आप स्पष्ट रूप से हथेली का रंग, त्वचा, उसकी मांसपेशियों की नर्मी, कड़ाई और मांसलता का अनुभव कर सकते हैं।

एक प्रकार से हथेली का रंग मानव के सामान्य रक्त-प्रवाह का द्योतक है। जिन हथेलियों का रंग ललाई लिये हुए नहीं होता, वे व्यक्ति निश्चय ही शारीरिक एवं मानसिक रूप से दुर्बल एवं रुग्ण होते हैं। उनकी हथेलियां ठंडी-सी होती हैं और ये एक प्रकार के रहस्य का लबादा ओढ़े हुए रहते हैं।

गुलाबी हथेली स्वस्थता एवं नीरोगिता की दिग्दर्शक है। ऐसे व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक, दोनों ही दृष्टियों से स्वस्थ कहे जा सकते हैं। इनमें समस्त मानवोचित गुण—क्षमा, दया धैर्य, ममत्व, प्रेम, स्नेह—पाये जाते हैं। जीवन को ये एक खेल की तरह समझते हैं, और बाधाओं तथा संकटों का हँसकर सामना करते हैं। जीवन के प्रति इनमें ललक और गर्मजोशी होती है तथा प्रत्येक कार्य के प्रति जिज्ञासा की भावना रखते हैं। ये स्वभाव से हँसमुख, मिलनसार और समाज में घुल-मिलकर जीने वाले होते हैं।

परन्तु अत्यधिक गुलाबी या लाल हथेलियां स्वस्थता की परिचायक नहीं। ऐसे व्यक्ति उतावले होते हैं। किसी भी कार्य का आरम्भ तो ये शान से कर लेते हैं, पर कुछ ही समय बाद ये उससे ऊब जाते हैं और येन-केन-प्रकारेण कार्य को निबटाने की फिराक में रहते हैं। इनके जीवन और कार्य—प्रत्येक क्षेत्र में व्यर्थ की उतावली और हड़बड़ी-सी बनी रहती है।

पीली हथेलियां व्यक्ति के शरीर में पित्त की अधिकता स्पष्ट करती हैं। ऐसे व्यक्ति स्पष्टतः निराशावादी होते हैं। प्रत्येक कार्य का अन्धकार-पक्ष ये पहले देखते हैं; जीवन के प्रति एक प्रकार से विरक्ति इनमें बनी रहती है। उदास, थके-थके-से तथा उचटे हुए स्वभाव के ये व्यक्ति जीवन में प्रायः असफल ही देखे गए हैं।

नीली या बैंगनी रंग की हथेलियाँ अशुद्ध रक्त-प्रवाह की द्योतक हैं। ऐसे व्यक्ति बीमार, आत्मकेन्द्रित, उदास, चिड़चिड़े और निराशा-वादी प्रवृत्ति-प्रधान होते हैं। जीवन इन्हें बोझ-सा लगता है और किसी प्रकार उसे ढोना ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझते हैं।

हथेली में कई जगह हड्डियों के जोड़ हैं। इन जोड़ों को भी ध्यान-पूर्वक देखना चाहिए। यदि ये जोड़ लचकदार होते हैं, तो व्यक्ति संतुलित दिमाग का समझना चाहिए। विपरीत परिस्थितियों में भी अपने-आपको ढालने की उसमें क्षमता होती है तथा संकटों एवं बाधाओं के बीच से भी वह हँसकर आगे बढ़ जाता है।

हाथ की बनावट—पर्वतों एवं आकृति की संरचना के आधार पर समस्त मानवों की हथेलियाँ सात वर्गों में बाँटी जा सकती हैं। हथेली के पीछे की तरफ से स्वाभाविक स्थिति में रखकर यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाय, तो ये वर्ग आसानी से समझ में आ सकते हैं। ये सात प्रकार हैं-

१. प्रारम्भिक प्रकार (Elementary type)
२. वर्गाकार हाथ (Square type)
३. दार्शनिक हाथ (Philosophical type)
४. कर्मठ हाथ (Spatulate type)
५. कलात्मक हाथ (Conic of Artistic type)
६. आदर्श हाथ (Psychic of Idealistic type)
७. मिश्रित हाथ (Mixed type)

वास्तविक रूप में देखा जाय, तो हाथों की बनावट मुख्यतः तीन प्रकार की होती है, परन्तु सुविधा के लिए आधुनिक हस्तरेखा-विदों ने इसे फैलाकर सात वर्गों में बाँट लिया है। वस्तुतः हाथ होते हैं—१. सात्विक, २. राजस, और ३. तामस। परन्तु शुद्धरूप में इन तीनों में से कोई भी हाथ दृष्टिगोचर नहीं होगा, क्योंकि वर्ण-व्यवस्था तथा दूषित चरित्रों के फलस्वरूप अधिकतर मिश्रित हाथ ही दिखाई देते हैं। यदि इस त्रिगुणात्मक प्रकृति का प्रसारित रूप देखें, तो भी हाथों के सात वर्ग बनते हैं, जोकि इस प्रकार से हो सकते हैं—

१. सात्विक।

२. राजस।
३. तामस।
४. सात्विक-राजस मिश्रित।
५. राजस-तामस मिश्रित।
६. तामस-सात्विक मिश्रित।
७. सात्विक-राजस-तामस मिश्रित।

वस्तुतः जिस प्रकार से चेहरा मानव-हृदय का प्रतिबिम्ब होता है, ठीक उसी प्रकार किसी भी व्यक्ति की हथेली उसके पूर्ण जीवन को खोलकर सामने रख देती है। परन्तु आवश्यकता है अभ्यास एवं लगन की; निरन्तर अभ्यास के बाद तो हथेली, उसकी आकृति और संरचना देखकर ही उस व्यक्ति के बारे में बहुत-कुछ कहा जा सकता है।

पाठकों की सुविधा के लिए पहले निर्देशित सात प्रकार के हस्त-भेदों का संक्षेप में वर्णन प्रस्तुत किया जाता है—

१. प्रारम्भिक प्रकार (Elementary type)—प्रारम्भिक रूप में कहा जाने वाला यह हाथ खुरदुरा एवं भारी होता है। यह हाथ लगभग उस अवस्था का परिचायक है, जब आदिमानव पशुजन्य जीवन से ऊपर उठने की ओर चेष्टारत था। इस प्रकार के हाथ की बनावट बेडौल होती है, उँगलियाँ छोटी और घने केशों से गुम्फित होती हैं। ये व्यक्ति स्पष्टतः पशु एवं मानव की संधि-रेखा पर ही होते हैं। सभ्यता के विकास का प्रारम्भिक चरण इनमें पाया जाता है; जीवन में संस्कृति की अपेक्षा सभ्यता की नकल करने में प्रवृत्त रहते हैं। भोजन, वस्त्र और आवास, इन तीन आयामों से ही घिरे रहते हैं; इसके आगे बढ़कर न तो ये देखने की चिन्ता करते हैं, और न देख ही पाते हैं। श्रम ये करना चाहते नहीं; बुद्धि का प्रयोग इनके वश की बात नहीं होती। अधिकतर अपराधी-वर्ग का हाथ इसी कोटि में आता है।

२. वर्गाकार हाथ (Square type)—ऐसा हाथ जो स्पष्टतः जाना जा सकता है। हथेली की बनावट न्यूनाधिक रूप में चौकोर वर्ग की तरह होती है। इस प्रकार की हथेली में सावधानीपूर्वक एक

हाथों का वर्गीकरण

(१) प्रारंभिक प्रकार

(२) वर्गाकार हाथ

(३) दार्शनिक हाथ

(४) कर्मठ हाथ

बिन्दु कनिष्ठिका उँगली के नीचे, दूसरा तर्जनी के मूल में, तीसरा बिन्दु अंगूठे के निचले पोरए के बाहरी भाग की ओर तथा चौथा बिन्दु चन्द्र-क्षेत्र के बाहरी भाग में मणिबन्ध के ऊपर लगा दिया जाय, और चारों बिन्दुओं को मिला दिया जाय तो यह चतुर्भुज वर्गाकार रूप में दिखाई देगा।

ऐसा हाथ श्रेष्ठ हाथ कहा गया है। यह अपने-आप में असाधारण विशेषताओं को लिये हुए होता है। ये व्यक्ति पूर्णतः भौतिकवादी एवं व्यवहारशील होते हैं। कल्पना, झूठी शान-शौकत एवं आदर्श से कोसों दूर रहते हैं, तथा वास्तविक जीवन में ज्यादा विश्वास करते हैं। ऐसे व्यक्ति मिलनसार हों-न-हों, पर दूसरों के द्वारा अवश्य प्रशंसित होते हैं। धार्मिक एवं समाजसेवा में बढ़कर भाग लेने वाले, सात्विक के धनी ये व्यक्ति अपनी बात के धनी होते हैं। कई बार ये स्वयं की हानि सहकर भी दूसरों की भलाई कर लेते हैं। शान्ति, संयम एवं सदाचार में प्रवृत्त ये व्यक्ति संतुलित जीवन बिताने के आदी होते हैं। आँख मूँदकर किसी बात पर विश्वास करना इनका स्वभाव नहीं होता, अपितु प्रत्येक बात तर्क की कसौटी पर कसकर ही स्वीकार करते हैं। दूसरे व्यक्तियों से सम्बन्धों के मूल में अर्थ एवं स्वार्थ की भावना छिपी रहती है। धन-वैभव इनके जीवन का लक्ष्य होता है, और अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर गतिशील बने रहते हैं। ऐसे व्यक्ति अधिकांशतः जीवन में सफल होते हैं, क्योंकि धैर्य, लगन एवं श्रम इनकी सम्पत्ति होते हैं।

३. दार्शनिक हाथ (Philosophical type)—दार्शनिक कहा जाने वाला हाथ फूला हुआ, गठीले जोड़ों वाला तथा अस्थिप्रधान होता है। इसकी बनावट में सुडौलता तो नहीं होती, परन्तु एक विशेष प्रकार की लचक तथा उँगलियों के जोड़ों मे स्पष्टता होती है। अन्य हाथों की अपेक्षा ये हाथ पतले भी देखे जाते हैं। मानव-समूह के सर्वोत्तम व्यक्ति इसी वर्ग मे पाये जाते हैं, क्योंकि ये ही समाज का नेतृत्व और मार्गदर्शन करते हैं। हाथ की यह आकृति व्यक्ति में प्रतिभा एवं दार्शनिकता की भावना स्पष्ट करती है। ये व्यक्ति आदर्श एवं विश्वासों के प्रति गहन आस्था रखते हैं। ज्ञान के क्षेत्र में ये पिपासु और जिज्ञासु

बने रहते हैं, तथा ज्ञान-वृद्धि में सदैव तत्पर एवं सहायक बने रहते हैं। बड़े-बड़े दार्शनिक, विचारक, धार्मिक नेता, कलाकार और साहित्यकार इसी वर्ग में पाये जाते हैं। यदि हथेली पर दार्शनिक उँगलियाँ धर्गाकार हाथ पर स्थित हों, तो जीवन में पूर्णतः सफल रहते हैं, अन्यथा आर्थिक क्षेत्र में इन्हें असफलताओं का सामना करते रहना पड़ता है। फिर भी, ये जीवन में धन की अपेक्षा सम्मान को अधिक महत्त्व देते हैं।

४. कर्मठ हाथ (Spatulate type)—ऐसा हाथ चौड़ाई की अपेक्षा लम्बा कुछ ज्यादा होता है। मणिबंध के पास वाला भाग कुछ भारी तथा आगे का भाग अपेक्षाकृत हल्का होता है। ऐसा हाथ कुरूप, अस्त-व्यस्त और बेडौल-सा दिखाई देता है; हथेली की उँगलियों के सिरे कुछ बड़े और फैले हुए होते हैं, तथा गद्दियाँ मांसल होती हैं, पर इनके मूल सख्त और जमे हुए-से लगते हैं। यह हाथ सक्रिय मस्तिष्क का द्योतक है। ऐसा व्यक्ति निकम्मा और खाली नहीं बैठ सकता। स्वभाव से ही ये परिश्रमी और कर्मठ होते हैं, तथा विचारों एवं कार्यों में क्रियात्मकता, विचारात्मकता एवं व्यावहारिकता का अद्भुत सम्मिश्रण होता है।

ऐसे व्यक्ति भावनाओं द्वारा संचालित नहीं होते अपितु व्यावहारिकता इनके जीवन का अंग होती है। नवीन कार्य, नवीन आविष्कार और कुछ-न-कुछ नये की खोज इनका स्वभाव होता है। सफल व्यक्तित्व इनकी विशेषता कही जा सकती है।

५. कलात्मक हाथ (Conic of Artistic type)—कलात्मक हाथ नर्म, मुलायम और खूबसूरत होते हैं। नुकीली, पतली, सुघड़ और कलात्मक उँगलियाँ इस हाथ की विशेषता होती हैं। ऐसे व्यक्तियों का रुझान स्वभावतः सौन्दर्य एवं प्रेम की ओर रहता है। मूलतः ये स्वयं कलाकार होते है परन्तु यदि कलाकार न भी हो तो कला के पारखी, प्रेमी या प्रशंसक अवश्य होते हैं। इनका जीवन प्रेममय होता है, इनकी भावना की प्रत्येक तन्त्री सौन्दर्य द्वारा झंकृत होती रहती है। कला के क्षेत्र में इनकी गति स्वभावतः होती ही है, अतः इस क्षेत्र में ये शीघ्र ही पारगत हो जाते हैं।

हाथों का वर्गीकरण

व्यावहारिक दृष्टि से ये सफल नहीं होते, क्योंकि ये अधिकतर भावना एवं कल्पना में ही खोये रहते हैं; आर्थिक चिन्ता इन्हें बराबर बनी रहती है; स्वभाव में लापरवाही रहती है।

यदि कलात्मक हाथ अत्यधिक लचीला न होकर थोड़ा कड़ाई लिये हुए हो तो ऐसे व्यक्ति अपनी कला के द्वारा अर्थ-संचय भी करते हैं, तथा इस क्षेत्र में भी सफल होते हैं।

६. आदर्श हाथ (Psychic of Idealistic type)—आदर्श हाथ का तात्पर्य है एक ऐसा हाथ, जिसका गठन सुडौल, त्वचा का रंग गुलाबी तथा मुलायम एवं उँगलियाँ समानानुपातिक हों। परन्तु इस नाम से इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि ये ही हाथ सर्वोत्कृष्ट होते हैं। हाँ, ऐसे हाथों के धनी उन्नत एवं उर्वर मस्तिष्क रखने वाले होते हैं। इनके जीवन की यह विशेषता रहती है कि जिस क्षेत्र को भी चुनेंगे, उसमें अन्दर तक पहुँचने की कोशिश करेंगे। बाल की खाल निकालना इनका स्वभाव होता है। प्रत्येक कार्य में अति इन्हें समाज में तिरस्कृत भी करती है, परन्तु फिर भी ये अपनी ही धुन में मस्त सतत: अपने लक्ष्य की ओर गतिशील रहते हैं। जीवन के कठोर संघर्षों का मुकाबिला करने में अक्षम रहते हैं। स्वप्न और आदर्शों में विचरण करनेवाले ऐसे व्यक्ति सांसारिक कार्यों में बिल्कुल कोरे होते हैं तथा समाज की दृष्टि से 'मिसफिट' कहे जाते हैं। पास में द्रव्य रहने पर राजसी ठाठ-बाट से रहने लग जाते हैं, और द्रव्य समाप्त होने पर फ़ाकों पर भी गुजारा करने में नहीं हिचकिचाते। एक प्रकार से इनका जीवन राजसी ठाठ-बाट तथा फ़ाकों के बीच ही गुजरता है।

इस भौतिक विश्व में ये सफल नहीं होते, फलत. इनका अन्त दु:खद होता है। जीवन के अन्तिम वर्षों में इन्हें बार-बार असफलताओं का सामना करते रहना पड़ता है।

यदि आर्थिक दृष्टि से इनकी चिंता मिट जाय, तो ऐसे व्यक्ति समाज को कुछ विशेष देन दे सकते हैं।

७. मिश्रित हाथ (Mixed type)—हाथ का अन्तिम वर्ग मिश्रित टाइप कहलाता है। पहले के छः वर्गों में यह किसी भी वर्ग में नहीं आता, अपितु इस हाथ में एक से अधिक वर्गों का सम्मिश्रण पाया

जाता है। यदि हथेली किसी एक वर्ग की होती है, तो उँगलियाँ किसी दूसरे ही वर्ग की। इसी प्रकार हथेली और उँगलियों को सावधानीपूर्वक देखने से पता चल सकता है कि इस हाथ में किस वर्ग का कितना मिश्रण है।

यह मिश्रण उनके गुणों एवं चरित्र में भी पाया जाता है। इनका व्यक्तित्व प्रभावहीन होता है, तथा प्रत्येक कार्य को उदासीनता की दृष्टि से ही देखते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में कम सफल देखे गये हैं।

ऐसे व्यक्तियों का चित्त अस्थिर होता है; प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ कर भविष्य में न होने की आशंका से उन्हें बीच में ही छोड़ देते हैं। धीरे-धीरे यह इनका स्वाभाविक गुण हो जाता है जिससे इन्हें निरन्तर असफलताओं का सामना करते रहना पड़ता है। परिणामस्वरूप जीवन में निराशावादी प्रवृत्ति का बाहुल्य रहता है, तथा सफलता के लिए कठोर संघर्ष करते रहना पड़ता है।

३

अंगूठा, उँगलियाँ और नाखून

जिस प्रकार मुखाकृति किसी भी व्यक्ति के जीवन का प्रतिबिम्ब होती है, ठीक उसी प्रकार हाथ भी उसके अन्तस्थल का एकमात्र जीता-जागता चित्र होता है। हाथ में भी उसकी बनावट, पर्वत-शिखरों का उभार-दबाव तथा उँगलियों की रचना देखने के साथ-साथ अंगूठे का अध्ययन भी विशेष महत्त्व रखता है। पूरे हाथ का मूल अंगूठा माना गया है, क्योंकि बिना अंगूठे के उँगलियों का महत्त्व नगण्य-सा हो जाता है। अंगूठा ही हाथ से कार्य करते समय समस्त शरीर की शक्ति को एकत्र कर कार्य करने की क्षमता प्रदान करता है। बच्चे के जन्म के समय भी अंगूठा चारों उँगलियों से आबद्ध रहता है, अतः हस्तरेखा-विशेषज्ञों के लिए अंगूठे का अध्ययन सर्वोपरि माना गया है।

अंगूठा नैसर्गिक इच्छाशक्ति का केन्द्र होता है, जोकि तीन अस्थि-खण्डों से मिलकर निर्मित होता है। हथेली से आगे निकले हुए दो भाग और तीसरा जो हथेली की आन्तरिक संरचना करता है, मिलकर अंगूठे का निर्माण करते हैं। अंगूठे का मूल शुक्र पर्वत है, जोकि प्रेम और वासना का केन्द्र है। इससे ऊपर का पोर तर्क, तथा नाखून से सम्बंधित भाग इच्छाशक्ति का द्योतक है। चूंकि इच्छा मानव-जीवन का आधार-भूत तत्त्व है, अतः अंगूठे का अध्ययन हस्तरेखाविद् के लिए सतर्कता-पूर्वक करना परमावश्यक हो जाता है।

अंगूठा आन्तरिक क्रियाशीलता का पुञ्ज होता है, जिसका सीधा सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है। चूंकि मस्तिष्क ही प्रत्येक कार्य-विचार का उदगम है, अत: केवल अंगूठा देखकर ही मनुष्य का स्वभाव, प्रकृति एवं विचारों का अध्ययन किया जा सकता है। चिकित्सा-विज्ञान के अनुसार भी यदि अंगूठा किसी कारणवश एकदम से फट जाय, और रक्त-प्रवाह जोरों से हो तो मनुष्य पागल हो सकता है और कभी-कभी तो उसकी मृत्यु भी हो जाती है। इस तथ्य से भी अंगूठे का महत्व आंका जा सकता है।

परिस्थितियों एवं जलवायु के अनुसार समस्त मानव-जाति के अंगूठे तीन भागों में बांटे जा सकते हैं—

१—वे अंगूठे, जो हथेली पर तर्जनी के साथ अधिक कोण (Obtuse Angle) बनाते हैं।

२—वे अंगूठे, जो हथेली पर तर्जनी के साथ समकोण (Right Angle) बनाते हैं।

३—वे अंगूठे, जो हथेली पर तर्जनी के साथ न्यून कोण (Acute Angle) बनाते हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए इन तीनों प्रकार के अंगूठों का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है—

१. अधिक कोण अंगूठा—ये अंगूठे देखने में सुन्दर आकृतिवाले, लम्बे तथा पतले होते हैं। ऐसे अंगूठों को सात्विक अंगूठों की संज्ञा दी गई है। ऐसे अंगूठे वाले व्यक्ति कोमल एवं मधुर हृदय रखनेवाले, विद्या-प्रेमी, कलाकार, संगीतज्ञ, हुनरमंद तथा कलाप्रेमी होते हैं। प्रारम्भिक

अंगूठा

अविकसित अंगूठा	दबे हुए अंगूठे	चौथे अंगूठे
एकसी लम्बाई वाले-अंगूठे	कोणिक सिरे वाले अं.	वर्गाकार सिरे वाले अं.
फैले सिरे वाले अं.	आयताकार इच्छासगड वाले अंगूठे	संकरे नाखुन वाले अंगूठे

अवस्था में, विद्याध्ययन में इन्हें काफ़ी बाधाओं का सामना करना पड़ता है, परन्तु फिर भी ये घरेलू परिस्थितियों से ऊपर उठकर विद्यार्जन कर ही लेते हैं। निर्धनता इनके मार्ग में रोड़े अटकाती है, पर इनमें गजब की आत्मशक्ति होती है, जिसके बल पर ये जीवन में सफल हो जाते हैं।

अंगूठे की अत्यधिक लम्बाई अशुभ कही गई है। यदि अंगूठे की लम्बाई तर्जनी के दूसरे पोरुए के अर्धभाग से भी ऊपर बढ़ जाय तो ऐसा अंगूठा मूर्खता ही प्रदर्शित करता है। यदि अंगूठे की लम्बाई उचित अनुपात में होती है, तो ऐसे बालक मेधावी होते हैं, श्रेणी में अच्छा डिवीजन प्राप्त करते हैं, तथा अन्य लोगों के साथ मधुर एवं सभ्यतापूर्ण व्यवहार करते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में सेवा को प्राथमिकता देते हैं, तथा कर्त्तव्य को सर्वोपरि समझते हैं।

मित्रों की संख्या इनके जीवन में अधिक होती है। चूंकि इनके हृदय में छल-कपट नहीं होता, अतः शत्रुओं की संख्या नगण्य ही होती है। चित्त में अस्थिरता बनी रहती है, तथा शंकालु प्रकृति के कारण समाज में उपहास के पात्र भी बनते हैं। ये जीवन में स्वयं के दर्द को अपने तक ही सीमित रखते हैं तथा अपने दुःख से दूसरों को दुःखी बनाने की चेष्टा नहीं करते। उद्यमप्रधान ऐसे व्यक्ति भाग्यवादी, अस्थिरमति, शंकालु एवं धार्मिक प्रवृत्ति-प्रधान होते हैं।

२. समकोण अंगूठा—ये वे अंगूठे होते हैं, जो तर्जनी से जुड़ते समय समकोण बनाते हैं। ये अंगूठे देखने में सुन्दर, मजबूत और स्तम्भवत् होते हैं। ऐसे अंगूठे पीछे की ओर झुके हुए नहीं होते। इन्हें रजोगुणी अंगूठे की संज्ञा दी गई है।

इन अंगूठों को देखने से ही पता चल जाता है कि ऐसे व्यक्ति परिश्रम पर ज्यादा विश्वास करते हैं। इनमें क्रोध की मात्रा विशेष होती है, परन्तु जितनी तेजी से क्रोध आता है, ठीक उसी गति से वह शान्त भी हो जाता है। क्रोधातिरेक में ये अनिष्ट या बिगाड़ नहीं करते। अपनी बात पर अड़ने वाले, हठी तथा प्रबल रूप से पक्षपाती होते हैं। ठीक बातों के साथ-साथ गलत कार्यों या बातों पर भी हठ पकड़ लेने पर ये अपने स्थान से नहीं हटते। प्रतिशोध की भावना इनमें इतनी

प्रबल होती है कि पीढ़ी दर-पीढ़ी ये वैर नहीं भूलते और मन में क्रोध संचित रखते हैं। ये या तो अच्छे मित्र होते हैं, या अच्छे शत्रु। बीच की स्थिति इन्हें सहन नहीं होती। ये व्यक्ति टूट सकते हैं, पर झुकना इनके बस की बात नहीं होती।

ऐसे व्यक्ति सच्चे देशभक्त, प्रबल शरणागत और रूढ़िवादी होते हैं; यथासम्भव एहसान का बदला चुकाने में लगे रहते हैं; मन में एक बार जो निश्चय कर लेते हैं, उसे पूरा किये बिना इन्हें चैन नहीं आता। स्वेच्छाचारी एवं स्वच्छ प्रकृतिप्रधान ऐसे व्यक्ति अपने द्वारा ही संचालित होते हैं।

३. न्यून कोण अंगूठा—हथेली से जुड़ते समय तर्जनी उँगली के साथ जो अंगूठे न्यून कोण बनाते हैं, वे इसी वर्ग के अन्तर्गत आते हैं। इनकी लम्बाई कम और बीच में से अपेक्षाकृत मोटे होते हैं। देखने में ये अंगूठे बेडौल-से लगते हैं। ऐसे अंगूठे तमोगुणी कहलाते हैं।

इस प्रकार के अंगूठे रखने वाले व्यक्ति जीवन में निराशावादी भावना पाले रहते हैं; आलस्य इनके जीवन को चारों ओर से घेरे रहता है। यात्रा करना इनकी रुचि में नहीं होता, और न जीवन में किसी कार्य की पूर्णता तक पहुँचते हैं। निम्न एवं मध्यवर्ग के लोगों में ऐसे ही अंगूठे प्रायः देखने को मिलेंगे। व्यसनों में रत ऐसे व्यक्ति जीवन में कर्ज में ही डूबे रहते हैं। फिजूलखर्ची तो इनके स्वभाव का अंग बन जाती है। अधिकतर दोस्तों में या चौपाल में बैठे गप्पें हाँकते रहते हैं, अथवा दिवास्वप्न देखते रहते हैं। तामसी प्रकृति-प्रधान ऐसे व्यक्ति जीवन में सफल नहीं कहे जा सकते। धर्म-कर्म में इनकी रुचि कम होती है, तथा भूत-प्रेत आदि की पूजा में विश्वास रखते हैं। म्लेच्छ एवं निम्नस्तरीय कार्यों में इन्हें आनन्द आता है।

इस प्रकार के हाथ में यदि अंगूठा छोटा और स्थूल हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही भोगी होगा, तथा एक से अधिक स्त्रियों के साथ संभोग करने में प्रवृत्त होगा। अपने से निम्नस्तर अथवा निम्नजाति की स्त्री से इनका सम्पर्क रहेगा। मैंने अत्यन्त उच्च, समृद्ध एवं कुलीन घराने के कुछ बच्चों के हाथ तमोगुणी एवं छोटा अंगूठा देखा, और समय आने पर उन बालकों (व्यक्तियों) को शूद्र वर्ण के साथ सम्पर्क

स्थापित करते देखा। ऐसा अंगूठा देर-सवेर बदनामी भी देता है। ऐसे व्यक्ति अपने समाज में हेय दृष्टि से देखे जाते हैं।

अंगूठे के तीन भाग—अंगूठा तीन भागों में बँटा होता है—पहला भाग या पोरुआ, जो नाखून से चिपका होता है; दूसरा मध्य भाग, तथा तीसरा वह भाग जो हथेली से शुक्र-पर्वत पर जुड़ा हुआ होता है। इनमें प्रथम पोरुआ सत, दूसरा रज तथा तीसरा तम को द्योतित करता है। इन्हें हम ऊर्ध्वभाग, मध्यभाग तथा अधोभाग नाम से भी संबोधित कर सकते हैं। ऊर्ध्वभाग इच्छा, विज्ञान और Will का द्योतक है; मध्यभाग तर्क, विचार और Logic को बताता है, तथा तीसरा अधोभाग प्रेम, विराग और Love को सूचित करता है।

अंगूठे के इन तीनों भागों को समझ लेना भी हस्तरेखा-प्रेमियों के लिए परमावश्यक है।

प्रथम पोरुआ—जिस मनुष्य के अंगूठे का प्रथम पोरुआ दूसरे पोरुए से बड़ा हो, अर्थात् इच्छाशक्ति वाला भाग तर्क-भाग से बड़ा हो, उस व्यक्ति में तर्कशक्ति की अपेक्षा इच्छाशक्ति प्रबल होती है, तथा वह स्वतन्त्र निर्णय लेने वाला एवं मुक्त विचारों का स्वामी होता है। ऐसे व्यक्ति धार्मिक विचारों में गहरी आस्था रखने वाले होते हैं। इनका व्यक्तित्व इतना बलशाली होता है कि दूसरों को प्रभावित करने में ये सिद्धहस्त होते हैं। सैकड़ों और हजारों व्यक्तियों के विचारों को अपनी इच्छा के अनुकूल बना लेने में इन्हें कोई तकलीफ नहीं होती। ऐसा व्यक्ति यौवनावस्था की अपेक्षा वृद्धावस्था में अधिक संवेदनशील और धार्मिक हो जाता है।

यदि प्रथम पोरुए और दूसरे पोरुए की लम्बाई-मोटाई बराबर हो, तो यह व्यक्ति सम्माननीय एवं सफल जीवन व्यतीत करने वाला होता है। अपने प्रत्येक कार्य में ये व्यक्ति सफल होते हैं; न दूसरों को धोखा देना चाहते हैं, और न दूसरों द्वारा आसानी से ठगे ही जाते हैं; मित्रों की संख्या बढ़ी-चढ़ी रहती है, तथा समाज में लोकप्रिय होते हैं; जीवन की कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों को भी ये हँसकर गुजार देते हैं। ऐसे व्यक्ति अधिकांशतः जीवन में सफल ही होते हैं।

यदि प्रथम पोरुआ दूसरे पोरुए से छोटा हो, तो भी समझें

चाहिए कि व्यक्ति के विचारों पर तर्क हावी है। किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करना इनके वश की बात नहीं होती। हृदय एवं विचारों से ये कमजोर होते हैं, तथा सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक नर-नारी को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता के कारण ऐसे व्यक्तियों का जीवन अधिकांशतः असफल ही देखा गया है।

प्रथम पोरुआ लम्बा, सुडौल, दृढ़ तथा सुन्दर आकृतियुक्त हो तो व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति परिश्रमी, कर्त्तव्यपरायण एवं मानवोचित गुणों से सम्पन्न होते हैं। विपत्ति में भी ये अपने कर्त्तव्य से विचलित नहीं होते, और हद से आगे बढ़कर भी मानव की सेवा एवं सहायता करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

यदि प्रथम पोरुआ नुकीला, ढलवाँ और नोकदार हो, तथा ऊपर की ओर शनैः-शनैः पतला होता चला गया हो तो व्यक्ति चालाक, स्वार्थी और धूर्त होता है; दूसरे व्यक्ति को अपने दबाव में डालकर मन-चाहा कार्य कराने में भी नहीं हिचकिचाता। अपने मामूली-से स्वार्थ के लिए दूसरे का बहुत बड़ा अहित करने से भी ये नहीं चूकते। अपनी बात पर अड़ने वाले होते हैं, और दूसरे को ठगकर, क्रोध कर, या जैसे भी हो, अपना काम निकालने में रहते हैं।

यदि प्रथम पोरुआ स्थूल, मोटा और ठोस हो तो ऐसा व्यक्ति चिड़चिड़ा और क्रोधी होगा, ऐसा समझना चाहिए। अपने-आपको वह महान् समझता है, तथा घोर दम्भी और स्वार्थी होता है। यदि ऐसे व्यक्ति मधुरभाषी बनें, तो समझना चाहिए कि यह धोखा देने की कोई पृष्ठभूमि बन रही है। स्वभाव के चिड़चिड़े ऐसे व्यक्ति मित्रता के योग्य नहीं होते।

द्वितीय पोरुआ—अंगूठे का दूसरा पोरुआ तर्कशक्ति का स्थान माना गया है। यदि दूसरा पोरुआ पहले पोरुए से बड़ा और सुदृढ़ हो तो व्यक्ति प्रबल रूप से तार्किक होता है। अपने तर्क के सामने वह किसी को भी टिकने नहीं देता। वह अपनी प्रत्येक उचित-अनुचित बात को तर्क के सहारे सिद्ध करने का प्रयत्न करेगा। यदि ये तर्क के क्षेत्र में अपनी हार भी होते देखते हैं, तो हो-हल्ला मचाकर अपनी

विजय सिद्ध कर देने का ही प्रयत्न करते हैं। सभ्य समाज में इन्हें प्रायः वाचाल और बकवादी कहा जाता है। ये जब भी विजय पाते हैं, केवल बुद्धि और वाक्-शक्ति के बल पर ही। यदि यह पोरुआ पतला भी हो तो ये व्यक्ति मस्तिष्क से काम न लेकर जो भी मन में आए, बक देते हैं। अपने अधिकारियों के छिद्रान्वेषण में ये सदैव प्रवृत्त रहते हैं, तथा जीवन को भारवत् ढोना इनका उद्देश्य बना रहता है।

यदि दूसरा पोरुआ प्रथम पोरुए के समान ही लम्बाई-चौड़ाई और मोटाई लिये हुए हो तो ये व्यक्ति समशीतोष्ण कहे जा सकते हैं; न तो क्षणिक आवेश में गर्म होते हैं और न ही क्षणिक प्रशंसा से फूलते ही हैं। जीवन में प्रत्येक कार्य को इच्छा और तर्क के सहारे तोलकर करते हैं, जिससे ये धोखा नहीं खाते। इनमें आत्मविश्वास भी प्रबलरूप में होता है। ये व्यक्ति सभ्य, उच्चकोटि के व्यापारी, अफसर और कलाकार होते हैं।

यदि दूसरा पोरुआ पहले पोरुए की अपेक्षा कुछ संकुचित, दुर्बल, क्षीण और अशक्त हो तो ऐसे व्यक्ति दूसरों द्वारा संचालित होते हैं और ये स्वयं कोई भी निर्णय नहीं ले पाते। ये बिना योजना के ही कार्य प्रारम्भ कर लेते हैं, जिससे सदैव कार्य के अन्त में असफलता का ही मुख देखना पड़ता है; भाग्यवादी होने के साथ-साथ आलसी भी होते हैं; निश्चित लक्ष्य के अभाव में इन्हें सफलता नहीं मिलती। निर्बल आत्मा, अस्थिर विचार, शकालु हृदय और झगड़ालू प्रवृत्ति के धनी ये व्यक्ति प्रायः असफल ही देखे गये हैं।

तृतीय-भाग—अंगूठे का तीसरा भाग पोरुआ न होकर शुक्र का स्थान (Venus mount) कहा जाता है, जिसका विस्तृत वर्णन ग्रह-स्थान या ग्रह-पर्वत के साथ करेंगे।

प्रथम दो पोरुओं की अपेक्षा यह भाग निश्चय ही बढ़ा-चढ़ा और उन्नत होता है। यदि यह भाग सामान्य रूप से ऊँचा, सुन्दर और लालिमा लिये हुए हो तो ऐसा व्यक्ति प्रेम के क्षेत्र में बढ़ा-चढ़ा होता है। मित्रों में यह लोकप्रिय तथा समाज में सम्माननीय स्थान पाने का अधिकारी होता है। मानवोचित गुण इसमें विशेष रूप से होते हैं, तथा दुःख में भी आसानी से विचलित नहीं होता।

यदि यह स्थान बहुत ही अधिक उन्नत और बढ़ा-चढ़ा हो तो समझना चाहिए कि व्यक्ति भोगी है और सौन्दर्य के पीछे भटकने वाला है। प्रेम के क्षेत्र में यह आगा-पीछा नहीं सोचता और आवेश में यह सब-कुछ कर लेने को तैयार रहता है।

यदि यह क्षेत्र दबा हुआ, संकीर्ण, कम-उन्नत, विशेष जालयुक्त अथवा पीतता या श्यामता लिये हुए हो तो यह व्यक्ति जीवन में निराशावादी प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है। ये व्यक्ति तमोगुणी होते हैं, तथा इनके प्रेम के मूल में भी वासना या स्वार्थ छिपा रहता है। इनका हृदय हमेशा कामासक्त रहता है। लम्बी-लम्बी योजनाएँ बनाते हैं, पर भावनाशून्य एवं हृदयशून्य होने के कारण समाज में अपयश के ही भागी होते हैं। जीवन इनका प्रायः कलहपूर्ण रहता है, तथा वैवाहिक जीवन तो मधुर कहा ही नहीं जा सकता।

उँगलियाँ—अंगूठे के अतिरिक्त हथेली से जुड़ी उँगलियों का सीधा सम्बन्ध हथेली के साथ-साथ मस्तिष्क से भी होता है। उँगलियों के पोरुओं पर विशेष भार पड़ने पर मस्तिष्क की धमनियाँ भी उस बोझ को अनुभव करती हैं। साधारणतः प्रत्येक हथेली से चार उँगलियाँ जुड़ी हुई होती हैं—

१—तर्जनी (Index finger)

२—मध्यमा (Middle finger)

३—अनामिका (Ring finger)

—कनिष्ठिका (Little finger)

इनमें से प्रत्येक उँगली तीन-तीन खण्डों में बँटी हुई होती है। नैसर्गिक रूप में उँगलियाँ एक विशेष अनुपात में लम्बी होती हैं। मध्यमा उँगली सबसे बड़ी; तर्जनी, मध्यमा के आखिरी खण्ड के मध्य तक पहुँचने वाली; अनामिका भी लगभग उतनी ही लम्बी; कनिष्ठिका, अनामिका के आखिरी खण्ड के आधार तक पहुँची हुई होती है। इससे न्यूनाधिक लम्बाई असामान्य कही जाती है।

तर्जनी अगूठे के पास वाली उँगली है, तथा इसके मूल में बृहस्पति का पर्वत है। तर्जनी के पास वाली उँगली मध्यमा कहलाती है, जिसके मूल में शनिदेव का निवास माना गया है। मध्यमा के पास वाली

अंगुलियां

मानसिक विश्व
व्यवहारिक विश्व
भौतिक विश्व
बढ़ा हुआ पर्वत
सामान्य स्थिति
इच्छा खंड
धंसा हुआ पर्वत
वासना खंड
तर्क खंड
शुक्र पर्वत

उँगली अनामिका कहलाती है, जो सूर्य-पर्वत पर स्थित है; इसके पास की उँगली कनिष्ठिका है, जिसका मूल बुध पर्वत पर स्थित है। यह सभी उँगलियों से छोटी होने के कारण ही कनिष्ठिका के नाम से जानी जाती है।

प्रत्येक उँगली के बारे में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है—

तर्जनी उँगली—इसको अंग्रेजी में Index finger या finger of Jupiter भी कहते हैं। अधिकांश व्यक्तियों की यह उँगली अनामिका से छोटी होती है, पर कुछ हाथों में यह उससे बड़ी भी दिखाई देती है। जिस हाथ में यह उँगली अनामिका से लम्बाई में बड़ी हो, वे गौरवयुक्त, घमण्डी, उत्तरदायित्व के पदों पर कार्य करने वाले तथा प्रसन्नचित्त होते हैं। धार्मिक कार्यों में इनकी रुचि नहीं होती, साथ ही ये खुशामदपसन्द भी होते हैं। अपने अधीन कार्य करने वालों पर कड़ाई से नियंत्रण करते हैं, तथा शासन करने की भावना हद से ज्यादा बढ़ी-चढ़ी होती है। यद्यपि कई बार समाज में इन्हें निन्दा का भाजन होना पड़ता है, फिर भी अतुल धैर्य और हिम्मत के कारण अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते चले जाते हैं।

यदि तर्जनी उँगली अनामिका से छोटी हो तो व्यक्ति को चालाक समझना चाहिए; अपना काम येन-केन-प्रकारेण निकालने में सिद्धहस्त होता है। ऐसे व्यक्ति दूसरों से काम करवाते हैं और वाहवाही स्वयं लूटते हैं। ये व्यक्ति खुदगर्ज, स्वार्थपरायण, होशियार और चालाक होते हैं।

मध्यमा उँगली—इसे अंग्रेजी में Finger of Saturn भी कहते हैं, क्योंकि इसके मूल मे शनि का पर्वत होता है। यह उँगली तर्जनी और अनामिका से लम्बी होती है, परन्तु लगभग १/४ इंच बड़ी होना धुमता का द्योतक है। यदि यह उँगली १/४ इंच से भी बड़ी हो तो व्यक्ति के जीवन में दुःख, पश्चाताप और ग्लानि का आधिक्य ही समझना चाहिए। १/४ इंच बड़ी होना ही ठीक कहा गया है। ऐसी उँगली मानव को बुद्धि प्रदान करती है, तथा व्यक्ति शुभ कार्यों एवं विचारों से उन्नति की ओर अग्रसर होता है। मितव्ययता से जीने वाला ऐसा व्यक्ति समाज में पद, यश और सम्मान प्राप्त करता है।

मध्यमा
अनामिका
कनिष्ठा
तर्जनी
आभास
मानसिकता,
तर्क
भौतिकता
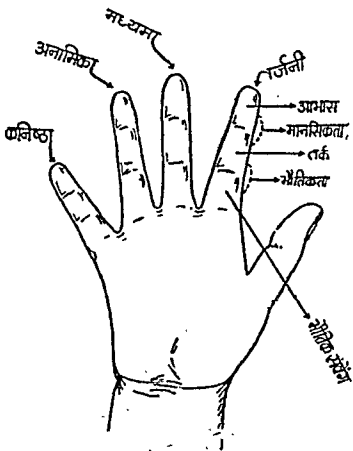
परन्तु यदि यह उँगली तर्जनी से आधा इंच बड़ी हो तो व्यक्ति विप्लवकारी, कातिल या हत्यारा ही होगा, ऐसा समझना चाहिए।

अनामिका उँगली—इसे Finger of Apallo भी कहते हैं। यह उँगली मध्यमा से छोटी तथा तर्जनी से अपेक्षाकृत लम्बी होती है, परन्तु कभी-कभी इसके विपरीत भी देखा गया है; तर्जनी से बड़ी होना शुभ माना गया है, और यह व्यक्ति में दया, प्रेम, स्नेह आदि गुणों का समावेश करती है। परन्तु, यदि यह उँगली मध्यमा के बराबर हो तो व्यक्ति को दुष्ट, धृष्ट और स्वार्थलोलुप बना देती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवादी होता है, तथा धन का अधिकांश भाग जुआ, सट्टा या व्यसन में ही व्यय होता है। ऐसे व्यक्ति असभ्य और निर्दयी होते हैं।

यदि अनामिका का झुकाव कनिष्ठिका की ओर हो तो व्यक्ति व्यापार से लाभ उठाता है; और यदि यह शनि की उँगली की ओर झुकी हुई हो तो चिन्तनशील एवं आत्मकेन्द्रित होता है।

कनिष्ठिका उँगली—इसे Little finger या The finger of Mercury भी कहते हैं, क्योंकि इसके मूल में बुध का पर्वत स्थित होता है। प्रत्येक हाथ मे यह सभी उँगलियों से छोटी ही होती है। यदि यह उँगली अनामिका के नाखून की जड़ तक पहुँचे तो अत्यन्त शुभकारी मानी गई है। यह जितनी ही ज्यादा लम्बी होती है उतनी ही शुभ कही गई है। ऐसे व्यक्ति सफल प्रशासक, उत्तम अनुसन्धानकर्ता और श्रेष्ठ साहित्यकार होते हैं। यदि यह उँगली अनामिका के ऊपर के पोरुए के अर्द्धभाग तक पहुँचती हो तो यह व्यक्ति धनी, आइ० एस० अधिकारी तथा श्रेष्ठ पदासीन होता है। कभी-कभी यह चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के हाथों में भी दिखाई दे देती है। ऐसे व्यक्ति भी अपने स्तर से ऊपर उठे हुए, मिलनसार तथा श्रेष्ठ गुणों से भूषित होते हैं, तथा जीवन मे निश्चय ही वे धनी होते हैं; आकस्मिक रूप से द्रव्य प्राप्त होता है, तथा जीवन का उत्तरार्द्ध आसानी के साथ व्यतीत होता है। कनिष्ठिका उँगली का लम्बा होना सफल जीवन के लिए परमावश्यक माना गया है।

उँगलियों पर विशेष तथ्य—उँगलियों की लम्बाई के साथ-साथ

इसबात का भी ध्यान रखना चाहिए कि उँगलियाँ चिकनी हैं या गाँठ-दार। उनके सिरे वर्गाकार, चमसाकार हैं या नुकीले; उँगलियों के पोरुओं पर कैसे चिह्न हैं, आदि-आदि।

दो उँगलियों के बीच का खाली स्थान भी अपना महत्त्व रखता है। अगूठे और तर्जनी के बीच अधिक दूरी व्यक्ति में मानवीय गुणों— प्रेम, दया, क्षमा का सचार करती है। तर्जनी और मध्यमा के बीच की खाली जगह व्यक्ति के वैचारिक स्वातंत्र्य को प्रकट करती है। मध्यमा और अनामिका के बीच की जगह व्यक्ति की लापरवाही, अन-घड़ता और फूहड़ता प्रदर्शित करती है। इसी प्रकार अनामिका और कनिष्ठिका के बीच की खाली जगह निर्ममता की द्योतक है।

यदि एक उँगली दूसरी उँगली की ओर झुकी हुई हो तो दूसरी उँगली और उसके पर्वत का प्रभाव उस उँगली पर भी देखा जा सकता है।

यदि उँगलियाँ भीतर की ओर झुकी हुई हों तो व्यक्ति दुनिया-दारी में पारगत होता है। ऐसा व्यक्ति डरपोक तथा प्रत्येक कार्य को प्रारंभ करते समय खूब आगा-पीछा सोचने वाला होता है। यदि उँगलियों का झुकाव बाहर की ओर हो, तो ऐसा व्यक्ति उन्मुक्त एवं उन्नत विचारों का धनी होता है। आर्थिक क्षेत्र में ये सदैव असफलता के शिकार रहते हैं। यदि उँगलियाँ टेढ़ी-मेढ़ी, बदसूरत और तुड़ी-मुड़ी हों तो व्यक्ति में अपराधजन्य प्रवृत्तियों का विकास करती हैं।

१—जिसकी उँगलियों के अग्रभाग नुकीले हों, वह मेधावी होता है।

२—मोटी उँगलियाँ निर्धनता की द्योतक होती हैं।

३—चपटी उँगलियाँ नौकरी एवं सेवाकार्य की ओर प्रवृत्त करती हैं।

४—जिसके हाथ की उँगलियाँ एक सीध में हों, वह व्यक्ति भाग्य-शाली होता है।

५—गठीली उँगलियाँ विवेक, विचारशीलता एवं अध्ययनप्रियता की द्योतक होती हैं।

६—उँगलियों में गाँठें अधिक विकसित हों तो प्रतिभावान् मस्तिष्क

अंगुलियां

नोकीली अंगुली

कोनिक अंगुली

वर्गाकार अंगुली

फैली हुई अंगुली

को चिन्तित करती हैं।

७—अत्यधिक उभरी हुई गाँठें, जीवन के प्रति निर्मोह एवं उदासीनता व्यक्त करती हैं।

८—चिकनी गाँठों वाले व्यक्ति संवेदनशील एवं आस्थावान् होते हैं।

६—गाँठरहित उँगलियाँ व्यक्ति को गहन दार्शनिक और प्रबल धार्मिक बना देती हैं।

उँगलियों पर निशान—उँगलियों पर पाये जाने वाले निशानों का महत्त्व हस्तरेखाविद् के लिए परमावश्यक है। अपराध-शास्त्र में इन चिह्नों का सर्वाधिक महत्त्व है। प्रसिद्ध हस्तरेखा-विशेषज्ञ नोएल के मतानुसार व्यक्ति के चरित्र, मनोविज्ञान और शारीरिक स्वास्थ्य की जानकारी के लिए इन चिह्नों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है और इनके द्वारा व्यक्ति का सही-सही मूल्यांकन किया जा सकता है। ये चिह्न निम्नप्रकारेण होते हैं—

१. शंकु—उँगलियों के पोरुओं पर शंकु का चिह्न मानसिक उन्नति को उद्घाटित करता है। विपरीत परिस्थितियों में भी ये अग्रसर होते रहते हैं, तथा परिस्थिति एवं वातावरण के अनुकूल अपने को ढालने में सक्षम रहते हैं; ऐसे व्यक्ति हृदय-रोगों के शिकार भी पाये जाते हैं।

२. तम्बू—किसी-किसी व्यक्ति की उँगलियों के पोरुओं पर तम्बूवत् चिह्न पाये जाते हैं। ऐसे व्यक्ति कलाकार, सहृदय, भावुक एवं संवेदनशील होते हैं। मानसिक दृष्टि से ये असन्तुलित रहते हैं।

३. चक्र—उँगलियों पर चक्र के निशान पाया जाना शुभ कहा गया है। ये व्यक्ति स्वतन्त्र विचारों के धनी, मौलिक कार्यों में तत्पर तथा विवेकशील होते हैं और रूढ़िवाद से दूर हटकर प्रगति और नूतनता के प्रेमी होते हैं।

४. मेहराब—जिन पोरुओं पर मेहराब के चिह्न पाये जाएँ, वे स्वभाव से संशयी तथा शक्की होते हैं। किसी पर भी ये पूरा विश्वास नहीं करते। ऐसे व्यक्ति रहस्यमय तथा अच्छे गुप्तचर होते हैं।

५. त्रिभुज—यदि दाहिने हाथ की तर्जनी उँगली पर त्रिभुज का

चिह्न दिखाई दे, तो ऐसे व्यक्ति को एकान्तप्रेमी, रूढ़िवादी, रहस्यमयी और योगाभ्यासी समझना चाहिए।

६. तारा—यदि किसी भी उँगली, विशेषकर तर्जनी पर तारा या क्रॉस का चिह्न दिखाई दे, तो वह व्यक्ति प्रबल भाग्यशाली होता है, तथा उसे जीवन में कई वार अप्रत्याशित रूप से धन-प्राप्ति होती है।

७. कन्दुक—यदि उँगलियों के पोरुओं पर गोल निशान या कन्दुक-चिह्न दिखाई दें, तो वह व्यक्ति आदर्श प्रेमी, आदर्श मित्र और आदर्श भोगी कहा जा सकता है। उसके जीवन में एक विशेष प्रकार की लचक होती है, तथा उसके व्यवहार में संयम पाया जाता है।

८. जाल—जालयुक्त उँगली इस बात को स्पष्ट करती है कि ऐसा व्यक्ति निरन्तर बाधाओं का सामना करता रहेगा, परन्तु इसकी इच्छाशक्ति इतनी प्रबल होती है कि वह संकटों में से भी सही-सलामत निकलकर फिर संकटों से जूझने को उद्यत रहता है। डाकुओं की उँगलियों पर ऐसे चिह्न सहज ही देखे जा सकते हैं।

९. चतुर्भुज—यदि उँगली के पोरुए पर वर्ग या चतुर्भुज का चिह्न पाया जाय, तो वह व्यक्ति सदैव उद्यमरत रहता है तथा उद्यम के बल पर लक्ष्मी को वश में रखने मे समर्थ होता है।

यदि किसी की उँगली पर एक से अधिक चिह्न दिखाई दें, तो उस व्यक्ति मे उनसे सम्बन्धित दोनों फलादेशों का सम्मिश्रण समझना चाहिए।

नाखून—नाखून उँगलियों के अग्रभाग की कवच की तरह रक्षा करते हैं। चिकित्सा-शास्त्री नाखूनों को देखकर रोग का सही अंदाजा लगा लेते हैं।

स्वस्थ नाखून पूरे, चिकने, मुलायम और गुलाबी होते हैं। खुरदुरे और दरारों वाले नाखून अस्वस्थता का बोध कराते हैं।

१—नाखूनों के मूल में चन्द्रमा अर्द्ध-चन्द्राकार मे होते हैं। इनके न होने से हृदय की कमजोरी का बोध होता है।

२—यदि यह चन्द्रमा बड़ा और फैला हुआ हो, तो व्यक्ति मिर्गी, मूर्च्छा, रक्तदोष आदि का शिकार होता है।

३—लम्बे और पतले नाखून शरीर के ऊपरी भाग के रोगग्रस्त होने की सूचना देते हैं।

४—छोटे नाखून वाला व्यक्ति हृदयरोग से पीड़ित होता है, ऐसा समझना चाहिए।

५—चपटे, पतले और अविकसित नाखून लकवे की बीमारी के द्योतक होते हैं।

६.—नीले रंग के नाखून भयंकर बीमारी के अग्रसूचक कहे जाते हैं।

७—नाखूनों पर सफेद छींटे स्नायविक दुर्बलता के सूचक होते हैं।

८—पीले नाखूनों का धनी निर्दयी होता है, तथा प्रबल स्वार्थरत रहता है।

९—लम्बाई की अपेक्षा चौड़ाई में फैले नाखून समाज में तिरस्कार होने की सूचना देते हैं।

१०—तर्जनी पर सफेद छींटे प्रेम के सूचक हैं, तो काले छींटे गलत कार्यों के सूचक हैं।

११—मध्यमा पर सफेद छींटे यात्रा-योग बनाते हैं, तथा काले छींटे एक्सीडेंट-योग में सहायक होते हैं।

१२—अनामिका पर सफेद छींटे समाज एवं राज्य में सम्मान-वृद्धि के सूचक हैं, तथा काले छींटे अपमान के हेतु बनते हैं।

१३—कनिष्ठिका पर सफेद छींटे व्यापार में लाभ प्रदान करते हैं, एवं काले छींटे व्यापार मे हानि के सूचक हैं।

१४—अंगूठे के नाखून पर सफेद धब्बा सफलता का सूचक है, तथा काला धब्बा संवेगो की तीव्रता का कारण होता है।

अतः हथेली का अध्ययन करते समय अंगूठे, उंगलियों, पोरुओं एवं नाखूनो का विधिवत् निरीक्षण परमावश्यक होता है।

8

पर्वत

हथेली के अध्ययन में विभिन्न ग्रहों के पर्वतों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि यही वह पृष्ठभूमि है, जो हथेली की विभिन्न रेखाओं को प्रभावित करती है। ये ग्रह, जिनके नाम पर इन पर्वतों का नामकरण हुआ है, विविध विशेषताओं के उत्तरदायी माने जाते हैं; गणित-ग्रह में ग्रह की वास्तविक स्थिति स्पष्ट होती है, तथा यदि कोई ग्रह जन्मकुण्डली में विशेष बलयुक्त होता है, तो वह सम्बन्धित विषयों को विशेष रूप से विस्तार देता है।

परन्तु अनुभव में यह देखने में आया है कि यदि जन्मकुण्डली में कोई ग्रह विशेष बलशाली होता है, तो उस व्यक्ति की हथेली में भी उस ग्रह का पर्वत विशेष उभरा हुआ, स्पष्ट एवं सुघड़ होता है। एक प्रकार से देखा जाय तो जन्मकुण्डली और हथेली में कोई अन्तर नहीं है। हथेली पर की रेखाओं और पर्वतों के आधार पर किसी भी व्यक्ति की जन्मकुण्डली आसानी से बनाई जा सकती है। परन्तु यह कार्य इतना सहज नहीं है। इसके पीछे कठोर श्रम और विशेष अध्यवसाय की जरूरत है।

मेरा अनुभव इस विषय में स्पष्ट है। ऐसे व्यक्ति जिनकी जन्म-कुण्डली खो गई है, या जिन्हें जन्म-समय तथा तिथि का ज्ञान नहीं है, हस्तरेखाओं के आधार पर सही-सही जन्म-तिथि तथा जन्म-समय ज्ञात किया जा सकता है। यही नहीं, अपितु हथेली के अध्ययन से किसी भी व्यक्ति की जन्मकुण्डली भी बनाई जा सकती है। मैंने एक-दो नहीं, सैंकड़ों व्यक्तियों की इस प्रकार से (हस्तरेखाओं के अध्ययन से) जन्म तिथि निकाली है, तथा जन्मकुण्डली बनाई है जोकि शत-प्रतिशत सह रही है। अतः यह कहना कि हस्तरेखा तथा ज्योतिष का पारस्परिक

कोई सम्बन्ध नहीं, निरा भ्रामक है।

पर्वतों में भी तीन भेद हैं—(१) सामान्य, (२) विकसित तथा (३) अविकसित। यदि ये पर्वत विकसित होते हैं, तो काफी ऊँचे उठे हुए, मांसल, स्वस्थ और लालिमा लिये हुए होते हैं। अविकसित पर्वत ठीक इनके विपरीत होते हैं; उनका उभार सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर ही ज्ञात किया जा सकता है। हथेली में जिस ग्रह का पर्वत सर्वाधिक विकसित होता है, उस व्यक्ति को उसी ग्रह द्वारा संचालित समझना चाहिए, और व्यक्ति के चरित्र में उसी पर्वत के गुण शासन करते हैं।

आधुनिक वैज्ञानिक उन्हें पर्वत न कहकर स्नायु-केशिकाओं का केन्द्र मानते हैं, जो मस्तिष्क के एक विशेष भाग से सम्बन्धित रहते हैं। प्रत्येक पुञ्ज अपनी अलग स्नायविक विशेषताएँ लिये हुए होता है, अतः जो पुञ्ज अधिक विकसित होता है, उससे सम्बन्धित विशेषताएँ मानव के चरित्र में विशेष रूप से दिखाई देंगी। ग्रह भी तथा उनके पर्वत भी इसी सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं।

ग्रह, उनके अंग्रेजी नाम तथा सम्बन्धित प्रभावों का संक्षिप्त परिचय नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है—

१. बृहस्पति—इसे अंग्रेजी में Jupiter कहते हैं तथा इसका संबंध इच्छाओं के उन्नयन और प्रदर्शन से है।

२. शनि—अंग्रेजी में यह Saturn कहलाता है। इसका सम्बन्ध आपत्ति, मननशीलता, एकान्तप्रियता तथा चिन्तन से है।

३. रवि—यह अंग्रेजी भाषा मे Sun कहलाता है। हाथ में इसका सम्बन्ध राज्य, मानसिक उन्नति तथा विविध कला-कौशल के प्रदर्शन से है।

४. बुध—इसे Mercury कहते हैं। इसका सीधा सम्बन्ध व्यापार, चतुरता तथा वैज्ञानिक उन्नति से है।

५. हर्शल—हिन्दी में इसे प्रजापति तथा अंग्रेजी में Herschel कहते हैं। इसका सम्बन्ध शारीरिक तथा मानसिक क्षमता एवं शक्ति से माना जाता है।

६. नेपच्यून—इसे हिन्दी में वरुण ग्रह तथा अंग्रेजी भाषा में Neptune कहते हैं। विद्वत्ता, प्रभाव, व्यक्तित्व, क्षमता एवं पौरुष से

इसका सम्बन्ध जोड़ा जाता है।

७. चन्द्र—इसे अंग्रेजी में Moon कहते हैं, तथा हथेली में इससे कल्पना, सहृदयता एवं मानसिक उत्थान आदि गुणों का अध्ययन किया जाता है।

८. शुक्र—अंग्रेजी में यह ग्रह Venus कहलाता है। सौन्दर्य, प्रेम, भोग, शान-शौकत तथा ऐश्वर्य से इसका सम्बन्ध होता है।

९. मंगल—यह अंग्रेजी में Mars के नाम से पुकारा जाता है। जीवनी-शक्ति, जीवट, परिश्रम एवं पुरुषोचित गुणों का अध्ययन इसी ग्रह से किया जाता है।

१०. राहु—यह अंग्रेजी में Rahu के नाम से ही जाना जाता है, कुछ लोग इसे Dragon's Head भी कहते हैं। भाग्योन्नति, आकस्मिक द्रव्य-प्राप्ति आदि से इसका सम्बन्ध होता है।

११. केतु—इसे अंग्रेजी में केतु या Dragon's Tail भी कहते हैं। हाथ पर इस ग्रह से सर्वोन्नति जानी जाती है।

१२. प्लूटो—यह अंग्रेजी में Pluto तथा हिन्दी में इन्द्र के नाम से जाना जाता है। इस ग्रह से मानसिक चिंतन का अध्ययन किया जाता है।

ग्रहों का क्षेत्र—हस्तरेखा-विशेषज्ञों के अनुसार हथेली में समस्त ग्रहों के स्थान निर्धारित हैं, और तनिक सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर वे तुरन्त पहचान लिये जाते हैं।

बृहस्पति—हथेली में इसका स्थान निम्न मंगल के ऊपर तर्जनी के आधाररूप में स्थित रहता है, जोकि सावधानी से देखने पर शीघ्र ही पहचान लिया जाता है।

यह स्वभाव से संचालन, नेतृत्व, अधिकार और लेखन का देवता है। तर्जनी और गुरु का पर्वत इन गुणों की अभिव्यक्ति करता है।

बृहस्पति स्वयं देवता होते हुए भी देवगुरु कहलाते हैं, अतः जिन हथेलियों में गुरु-पर्वत सबसे अधिक उभरा हुआ और स्पष्ट हो, उसमें देवोचित सभी गुण पाये जाते हैं। सदैव उन्नति की आकांक्षा करते रहना उसका स्वभाव होता है।

अपने स्वाभिमान को वे हाथ से नहीं खोते। ऐसा व्यक्ति विद्वान,

पर्वत

अंध विश्वास
सफलता
मान-यश
त्वरा
1
2
3
मानसिक विश्व
पुरन
तर्क
निम्न - मंगल हिंसा
अर्ध मंगल
व्यवहारिक विश्व
शुक्र
अर्ध चन्द्र
मध्य चन्द्र
निम्न चन्द्र
चन्द्र
कल्पना
रहस्य
स्वार्थ
निम्न विश्व

न्यायी, कुलीन, उत्साही, वचनों का निर्वाह करने वाला, परोपकारी, बैरिस्टर, न्याय करने वाला, समाज-मान्य तथा अग्रणी होता है। कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी वह विचलित नहीं होता। देश के उच्च पदाधिकारी एवं प्रतिष्ठित पदों पर स्थित व्यक्तियों के हाथों का अध्ययन किया जाय, तो निस्सन्देह उनका गुरु-पर्वत विकसितावस्था में दिखाई देगा। जनता के विचारों को अपने अनुकूल बना लेने की उनमें अद्भुत क्षमता होती है। धार्मिक भावनाओं और विचारों में इनकी गहन आस्था होती है।

यदि गुरु-पर्वत अल्पविकसित या कम उभरा हुआ हो तो उनमें इन गुणों की कुछ न्यूनता समझनी चाहिए, और यदि यह पर्वत अविकसितावस्था में हो, तो ऐसे व्यक्ति में इन गुणों का अभाव ही समझना चाहिए।

शारीरिक दृष्टि से गुरु-पर्वत-प्रधान व्यक्ति साधारण कद-काठ के, स्वस्थ, सुडौल और हँसमुख होते हैं। वाचन एवं भाषणकला में ये पारंगत होते हैं तथा जो भी कहते हैं, वह प्रामाणिक और कसौटी पर खरा उतरनेवाला होता है। हृदय से ऐसे व्यक्ति दयालु और परोपकारी होते हैं। आर्थिक पक्ष की अपेक्षा वे सम्मान और यश की ज्यादा महत्त्वाकांक्षा रखते हैं। अधिकार, स्वतन्त्रता और नेतृत्व के गुण इनमें जन्मजात होते हैं।

ऐसे व्यक्ति हृदय में मधुर और कोमल भावनाएँ रखते हैं। स्त्रियों के प्रति उनका सहज रुझान होता है, तथा सुन्दर, सुशील और सलीकेदार स्त्रियों से इनका सम्पर्क विशेष रहता है। स्त्रियों के हाथों में यह पर्वत उन्नत हो तो उनमें समर्पण की विशेष भावना पाई जाती है।

यदि गुरु-पर्वत का झुकाव शनि की ओर हो तो यह झुकाव व्यक्ति को चिन्तनशील बना देता है। शनैः-शनैः उसमें निराशा की भावना प्रबल होने लगती है ; स्वभाव में गम्भीरता, अनास्था और अक्खड़पन आ जाता है।

यदि गुरु-पर्वत और मानसिक विश्व दोनों सबल हों तो व्यक्ति को लेखन-क्षेत्र की ओर प्रवृत्त करता है। साहित्य में ऐसे व्यक्ति पूरी सफलता प्राप्त करते हैं।

गुरु का पर्वत जरूरत से ज्यादा बड़ा और उभरा हो तो व्यक्ति

को घमण्डी बना देता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी, दंभी और स्वेच्छाचारी हो जाता है।

यदि गुरु की उँगली अस्वाभाविक रूप से दीर्घ हो तो व्यक्ति तानाशाह बन जाता है, तथा निरंकुश शासन में विश्वास करता है। यदि उँगली जरूरत से ज्यादा छोटी हो तो गुरु-पर्वत के गुण समाप्त हो जाते हैं। टेढ़ी-मेढ़ी विकृत उँगली व्यक्ति को चालाक और भीरु बना देती है।

यदि बृहस्पति-पर्वत पर एक या दो क्रॉस के चिह्न हों तो व्यक्ति को धार्मिक क्षेत्र में बहुत ऊँचा उठा देते हैं। यदि इस पर्वत पर चोकोर चिह्न हो तो यह चिह्न व्यक्ति को दैवी आपदाओं से सुरक्षा प्रदान करता है।

यदि गुरु का पर्वत रवि के समान ऊँचा और उठा हुआ हो तो व्यक्ति साहित्य-लेखन से अर्थ एवं यश की प्राप्ति करता है।

अविकसित गुरु-पर्वत लक्ष्यहीनता, काल्पनिकता और साधारण यश प्रदान करता है। भीड़ वगैरह से ये घबराते हैं, तथा एकान्तप्रिय बन जाते हैं।

शनि—मध्यमा उँगली के मूल में शनि का निवास माना गया है। यूनानी धर्मशास्त्रों के अनुसार यह कुटिल देवता है। हथेली पर इस पर्वत का विकास असाधारण प्रवृत्तियों का पोषक कहा जाता है। यदि हथेली में यह पर्वत अनुपस्थित हो तो व्यक्ति उल्लेखहीन जीवन बिताने को बाध्य होता है।

मध्यमा उँगली भाग्य की प्रतीक समझी जाती है, क्योंकि भाग्य-रेखा की समाप्ति इसी उँगली पर होती है। शनि-ग्रह पूरी हथेली में विशेष स्थान रखता हो तो व्यक्ति को प्रबल भाग्यवादी बना देता है, तथा निम्न कुलोत्पन्न को भी अत्युत्तम स्थान प्रदान करने में सहायक होता है। ऐसे चिह्न से सम्पन्न व्यक्ति एकान्तप्रिय होता है। उसके सामने एक लक्ष्य होता है, और लक्ष्य-प्राप्ति में यह इतना डूब जाता है कि उसे समाज, घर और स्त्री तक की चिन्ता नहीं रहती। स्वभाव से ये चिड़चिड़े, सन्देहशील और अनास्थावान् हो जाते हैं। कोलाहल और लोगों की भीड़ से ये बचते हैं। शनैः-शनैः वय-प्राप्ति के साथ-साथ ये रहस्यवादी बनते जाते हैं। शनि-पर्वत-प्रधान व्यक्ति ही जादू-

गर, इंजीनियर, रसायन-शास्त्री, वैज्ञानिक और साहित्यकार आदि होते हैं, जो अपनी प्रयोगशाला और लक्ष्य के अतिरिक्त इधर-उधर झांकते तक नहीं।

ऐसे व्यक्ति पूर्णत: मितव्ययी होते हैं। खेत, बगीचे, मकान आदि स्थावर सम्पत्ति में ये ज्यादा विश्वास रखते हैं। संगीत, नृत्य आदि में कम रुचि रखते हैं, और गाने का काम भी पड़े तो अधिकतर दुख-दर्द के ही गाने गाते हैं। सन्देहशीलता इनका जन्मजात गुण होता है तथा अपने स्त्री-पुत्रों पर भी सन्देह करने से नहीं चूकते।

अत्यन्त विकसित शनि मानव को आत्मद्रोही बना देता है। ऐसे ही व्यक्ति आत्मघात करते हैं। ठगों और लुटेरों के भी शनि-पर्वत विकसितावस्था में होता है।

शनि-प्रधान व्यक्तियों का रंग साधारण पीला होता है. हथेलियां भी पीली होती हैं, तथा स्वभाव से उदास और चिड़चिड़े होते हैं। प्रत्येक कार्य को ये अन्धकार-पक्ष से ही देखते हैं।

यदि शनि पर्वत बृहस्पति की ओर झुका हुआ हो तो यह श्रेष्ठ सकेत है। ऐसे व्यक्ति मे बृहस्पति के गुणो का समावेश होने से वह श्रेष्ठ एव उन्नत व्यक्ति बन जाता है; परन्तु यदि यह पर्वत सूर्य की ओर झुका हो तो व्यक्ति का निष्क्रिय और भाग्यहीन बना देता है; उसमें निराशा और उदासीनता पहले से अधिक बढ जाती है। व्यापार में भी इसे हानि होती है, तथा पिता से अनबन बनी रहती है; स्वभाव चिड़चिड़ा और शुष्क हो जाता है। शनि-पर्वत च्युत होकर सूर्य-पर्वत से मिल जाय, तो व्यक्ति निस्सन्देह आत्महत्या करता है।

यदि मध्यमा उँगली पर मानसिक विश्व की प्रधानता हो तो लेखक, चिंतक और दार्शनिक बनने में शनि सहायता देता है। व्याव-हारिक विश्व की प्रधानता व्यक्ति का आर्थिक पक्ष मजबूत करती है, और यदि निम्न विश्व की प्रधानता हो, तो व्यक्ति अव्वल दर्जे का अपराधी और जुआरी बन जाता है।

शनि के उच्च स्थान पर अनेक रेखाएँ हों तो व्यक्ति भीरु और कामुक कहलाता है।

बुध-पर्वत के बराबर यदि शनि-पर्वत उभरा हुआ हो, तो व्यक्ति

सफल चिकित्सक, वैद्य या व्यापारी बनता है। आर्थिक पक्ष की मजबूती बनी रहती है।

मध्यमा उँगली का सिरा यदि नुकीला हो तो व्यक्ति कल्पना-प्रिय, स्वप्नदर्शी बनता है। यदि सिरा वर्गाकार हो तो कृषि, रसायन, विज्ञान में पारंगत होता है। फैले हुए सिरे व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित बना देते हैं। छोटी उँगली व्यक्ति की तर्कशक्ति का नाश करती है और गठीली उँगलियाँ स्वस्थ कार्यप्रणाली का निर्देश करती हैं।

शनि-पर्वत पर रेखाएँ शुभ कही गई हैं, जबकि वृत्त, त्रिभुज, चतुर्भुज, आदि अशुभ कहे गये हैं।

सूर्य—हृदय-रेखा के ऊपर, अनामिका उँगली के मूल में सूर्य का पर्वत माना गया है, जोकि मनुष्य की सफलता का द्योतक है। यदि यह पर्वत अनुपस्थित हो तो व्यक्ति साधारण-सा जीवन बिताने को बाध्य होता है। प्रतिभा, यश, सम्मान, राज्य, सुख और सफलता का यह पर्वत हेतु है।

इस पर्वत का विकास मनुष्य को निश्चित रूप से प्रतिभावान् और यशःशील बनाता है। उन्नत, विकसित और श्रेष्ठ सूर्य-पर्वत व्यक्ति को उच्चपद दिलाने में सहायता करता है। यह स्वभाव से हँसमुख, मिलनसार, मित्रों में घुल-मिलकर रहने वाला तथा क्लबों, सभा-सोसाइटियों में छाने वाला व्यक्ति होता है। इनकी बातें और कार्य समाचार बन जाते हैं, और इनकी रचनाएँ जनसाधारण में लोकप्रिय होती हैं।

प्रेम इनका जीवन-साथी होता है, तथा सफलता को ये अपने साथ लिए घूमते हैं। ऐसे व्यक्ति संगीतज्ञ, कलाकार, लेखक, चित्रकार आदि होते हैं। प्रतिभा इनमें जन्मजात होती है, तथा यश और सम्मान के लिए अथक प्रयत्न करते हैं। आपसी सम्बन्धों में ये ईमानदारी बरतते हैं, तथा वैभवभरी जिन्दगी बिताने के इच्छुक होते हैं।

व्यापार में भी ये लाभ उठाते हैं। प्रतिभा के बल पर ये द्रव्योपार्जन करते हैं। इनकी बहुमुखी सफलताएँ लोगों की ईर्ष्या का कारण बन जाती हैं।

इनके पास भौतिक विचार होते हैं, तथा सूझबूझ के बल पर ये

हथेली पर पर्वतों के स्थान
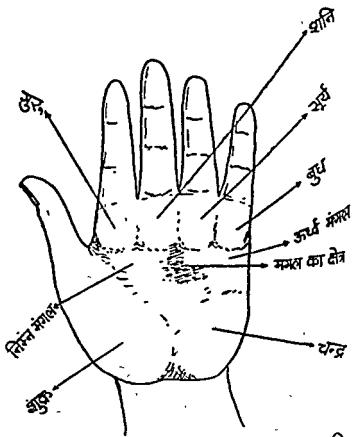
शीघ्र ही बात की तह तक पहुँच जाते हैं। कई बार अनपढ़ और निरक्षर व्यक्तियों को भी मैंने (सूर्य-पर्वत की उन्नतावस्था के कारण) श्रेष्ठ, धनी और सम्पन्न होते देखा है। खेल और जुए में इनसे कोई जीत नहीं सकता। सफलता इनके कदम चूमती है। स्वभाव से ये खर्चीले होते हैं, तथा जीवन-स्तर वैभव-विलासपूर्ण होता है।

इनमें सबसे बड़ा गुण यह होता है कि गलती हो जाने पर ये तुरन्त स्वीकार कर लेते हैं, पर स्वीकार तभी करते हैं जबकि इन्हें तर्क और प्रमाण से समझाया जाय। मस्तिष्क से ये बिल्कुल स्पष्ट होते हैं। खुद का विरोध ये सहन नहीं कर पाते, तथा अपने बारे में बातचीत सुनना इन्हें प्रिय लगता है।

यदि यह रवि-पर्वत बुध की ओर झुका हुआ हो तो व्यक्ति निस्संदेह व्यापार में ऊँची सफलता प्राप्त करता है, क्योंकि रवि सफलता का हेतु है, तो बुध व्यापार का हेतु; अतः इन दोनों का मेल श्रेष्ठ व्यापारी बनने में सहायक होता ही है।

यदि सूर्य-पर्वत च्युत होकर शनि की ओर झुका हुआ हो तो व्यक्ति में तमोगुणी प्रवृत्तियों का विकास देखा जा सकता है। ऐसे व्यक्ति में उदासी, एकान्तप्रियता, निद्रा-रुदन आदि भावनाएँ बढ़ जाती हैं; कार्य करने में शिथिलता रहती है। अतः द्रव्य की कमी बराबर बनी रहती है। किसी एक कार्य को पूर्णतः सम्पन्न न कर बीच में ही छोड़ देता है, तथा दूसरा नया कार्य प्रारम्भ कर देता है। वस्तुतः सूर्य-पर्वत का शनि की ओर झुकना मानव के पतन का ही द्योतक होता है।

सूर्य-उँगली छोटी, टेढ़ी-मेढ़ी या बेडौल हो तो सूर्य के गुणों में न्यूनता ला देती है; बदले की भावना बढ़ जाती है, तथा आपसी व्यवहार कटु हो जाते हैं।

रवि-पर्वत पर व्यूह अथवा आड़ी-तिरछी रेखाएँ कुस्वास्थ्य का संकेत करती हैं। सूर्य-पर्वत बहुत अधिक उभरा हो तो व्यक्ति की दृष्टि कमजोर और शिथिल हो जाती है।

यदि अनामिका पर मानसिक विश्व विकसित हो तो व्यक्ति साहित्य तथा आलोचना में यश प्राप्त करता है। यदि व्यावहारिक

विश्व सबल हो तो निपुणता प्राप्त करता है और निम्न विश्व के विकसित होने से व्यक्ति आत्मद्रोही अथवा आत्ममोही हो जाते हैं। इस उँगली के कोणिक सिरे कलात्मक अभिरुचि के प्रतीक होते हैं; वर्गाकार सिरे व्यावहारिक कुशलता के तथा नुकीले सिरे आदर्श-प्रियता के प्रतीक कहे जाते हैं।

बुध—कनिष्ठा के मूल में जो फूला हुआ भाग दिखाई देता है, वह बुध-पर्वत कहलाता है। इस पर्वत का महत्व व्यक्ति के जीवन में इसलिये अधिक है कि यही ग्रह व्यक्ति को, भौतिक सफलताएँ दिलाने में समर्थ होता है। बुध-प्रधान व्यक्ति जिस किसी भी कार्य में हाथ डालते हैं, सफलता प्राप्त करते हैं, क्योंकि इन व्यक्तियों में लगन, तत्परता और परिस्थितियों को समझने की क्षमता औरों से कुछ अधिक ही होती है। ये जो भी कार्य प्रारम्भ करते हैं, योजनाबद्ध करते हैं, इसलिए इन्हें सफलता भी मिल जाती है।

परन्तु मैंने कुछ विशेष अपराधियों के हाथों में भी बुध-पर्वत की प्रधानता देखी है। वस्तुतः बुध-पर्वत का जरूरत से ज्यादा उठना व्यक्ति की बुद्धि को कुण्ठाशील बना देता है। यह बुद्धि-चातुर्य हद से ज्यादा बढ़ जाने पर वह व्यक्ति येन-केन पैसा इकट्ठा करने लगता है। फलस्वरूप सही रास्ते की अपेक्षा गलत रास्ता भी अपना लेता है। परन्तु इसमें इतनी ध्यान रखने की बात है कि यदि बुध-पर्वत विकसितावस्था में हो और उसपर वर्गाकार चिह्न हो, तो व्यक्ति ऊँचे स्तर का अपराधी होता है, जो साधारणतः काबू में नहीं आता, और कानूनी दृष्टि से अपराधी नहीं बनता। ऐसा व्यक्ति चंचल और अस्थिर मति का होता है, जिससे वह किसी एक कार्य पर टिकता भी नहीं और एक उद्देश्य से दूसरा उद्देश्य बदलता रहता है।

बुध-प्रधान व्यक्ति श्रेष्ठ मनोवैज्ञानिक होते हैं। मानव कहाँ कमजोर है, तथा किस प्रकार से सामने वाला व्यक्ति काबू में आ सकता है, इस बात को ये व्यक्ति अच्छी तरह समझते हैं। यही विशेषता ऐसे व्यक्ति को चालाक और चतुर बना देती है, जिससे ये व्यापारिक कार्यों में विशेष रूप से सफलता प्राप्त करते हैं।

बुध-पर्वत-प्रधान व्यक्ति अवसरवादी और कुटिल भी होते हैं।

ठीक समय और मौके की तलाश में रहते हैं, और समय का ठीक-ठीक सदुपयोग करना जानते हैं। ऐसे व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से तो ठीक कहे जा सकते हैं, पर सामाजिक दृष्टि से ऐसे मित्र वांछनीय नहीं। ऐसा व्यक्ति सफल वक्ता और चतुर नाटकबाज होता है। अतः समाज के एक बहुत बड़े वर्ग को प्रभावित किये रहता है।

इनके जीवन का ध्येय अर्थ ही होता है। द्रव्य संचय करने में ये उचित अनुचित का कोई खयाल नहीं करते। अध्ययन में भी ये व्यक्ति गणित, दर्शन या विज्ञान-विषय चुनते हैं तथा लाभ उठाते हैं। इनकी बातों से वास्तविक स्थिति का पता नहीं चल पाता। ऐसे व्यक्ति सुयोग्य वकील सफल वक्ता, श्रेष्ठ अभिनेता और कुशल डॉक्टर हो सकते हैं। लेखन के क्षेत्र में भी ऐसे व्यक्ति प्रसिद्धि पाते देखे गए हैं। यात्रा इनका प्रिय शौक होता है। घूमना, जलवायु-परिवर्तन और प्रकृति-सहचर्य इनकी 'हॉबी' कही जा सकती है।

यदि बुध-पर्वत अत्यन्त उभरा हुआ हो तो ये धन के पीछे पागल बने फिरते हैं। बैंक-बैलेन्स ही इनके जीवन का ध्येय बन जाता है, और धन-संग्रह के लिए यह जेबकतरे से लेकर डकैती तक के धन्धे अपना लेता है।

यदि बुध-पर्वत सूर्य-क्षेत्र की ओर झुका हो तो व्यक्ति जीवन में आसानी से सफलताएं प्राप्त करता है। विद्या के क्षेत्र मे सूर्य सहायता देता है तथा अच्छे अंक दिलाने में समर्थ होता है। ऐसे व्यक्ति विनोदी, लेखक और साहित्यकार भी होते हैं

लचीली हथेली और बुध-पर्वत का उभार व्यक्ति के मस्तिष्क को पैना बनाते हैं कनिष्ठिका उँगली का सिरा नुकीला हो तो व्यक्ति सफल व्यापारी होता है। वर्गाकार सिरा उसे तर्कसंगत बनाता है। फैला हुआ सिरा जीवन में आकस्मिक द्रव्य-प्राप्ति के लिए सहायक होता है। गठीली उँगलियाँ व्यक्ति के बौद्धिक स्तर को उभारने में सहायक होती हैं, तथा मानसिक विश्व की प्रधानता व्यक्ति को जीवन में पूर्ण सफलता प्रदान करती है।

जीवन मे सफलता के लिए बुध-पर्वत का श्रेष्ठ होना परमावश्यक है।

हर्शल—यदि वास्तव में देखा जाय, तो यह ग्रह अन्य ग्रहों को अपेक्षा कहीं अधिक प्रबल और समर्थ है। इसका क्षेत्र हृदय तथा मस्तिष्क-रेखा के बीच है, और कनिष्ठिका के नीचे, बुध-पर्वत से भी जरा नीचे की ओर स्पष्ट दिखाई देगा।

इस ग्रह का पूर्ण प्रभाव हृदय और मस्तिष्क पर होता है, क्योंकि इसके पर्वत का एक छोर हृदय-रेखा को तथा दूसरा छोर मस्तिष्क-रेखा को छूता है। जिन व्यक्तियों की हथेली में यह पर्वत बुध के ठीक नीचे तथा हृदय एवं मस्तिष्क-रेखा के बीच में होता है, वे प्रसिद्ध वैज्ञानिक और गणक होते हैं। अणु-परमाणु टेलीविजन आदि आश्चर्यजनक एवं जटिल यन्त्रों की रचना में इन व्यक्तियों का हाथ रहता है।

यदि हर्शल पर्वत का उभार कम हो तो व्यक्ति मशीनरी कार्यों में रुचि लेता है, तथा ऐसे ही क्षेत्र में नौकरी कर सफलता प्राप्त करता है।

हर्शल-पर्वत पर चतुर्भुज या त्रिभुज व्यक्ति के लिए परम सौभाग्यशाली माना गया है। ऐसा व्यक्ति अपने कार्यों से विश्वस्तरीय प्रसिद्धि प्राप्त करता है; समाज में उसका सम्मान होता है। यदि कोई रेखा हर्शल पर्वत से उठकर अनामिका उँगली की ओर जाय, तो व्यक्ति जीवन में श्रेष्ठस्तरीय जीवन व्यतीत करने वाला होता है। प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक डॉ० होमी भाभा के हाथ में हर्शल-पर्वत और उसपर यह रेखा इस कथन का प्रमाण है।

यदि हर्शल-पर्वत का झुकाव बुध की ओर हो तो उसके जीवन में हर्शल के गुण न्यून होते हैं, तथा वह अपनी प्रतिभा का दुरुपयोग करने वाला होता है, एवं अन्तर्राष्ट्रीय ठग, लुटेरा या बदमाश हो जाता है। ऐसे व्यक्ति अधिकतर हृदय रोग से पीड़ित रहते हैं।

यदि हर्शल-पर्वत नपच्यून-पर्वत की ओर झुकता हुआ दृष्टिगोचर हो तो ऐसे व्यक्ति को पूरा ऐयाश समझना चाहिए। वह एक पत्नी से सन्तुष्ट नहीं रहता, अपितु सौन्दर्य के पीछे भटकता रहता है। उसका वैवाहिक जीवन पूर्णरूपेण नष्ट रहता है, तथा उसे पत्नी एवं पुत्रों तक से कोई मोह नहीं रहता। व्यसनों में लिप्त रहने के कारण इसका जीवन दुःखमय रहता है।

नेपच्यून—नेपच्यून ग्रह पृथ्वी से बहुत दूर होने के कारण उसका पृथ्वीवासियों पर कम ही प्रभाव पड़ता है, फिर भी थोड़ा-बहुत जो कुछ भी प्रभाव पड़ता है, वह स्थायी और आश्चर्यजनक होता है।

मनुष्य की हथेली में नेपच्यून-ग्रह का क्षेत्र मस्तक-रेखा से नीचे और चन्द्र-क्षेत्र के ऊपर होता है। यह पर्वत उत्तम एवं व्यवस्थित रूप से उभरा हुआ हो तो व्यक्ति श्रेष्ठ संगीतज्ञ, कवि, शाइर या लेखक होते हैं।

कभी-कभी इस पर्वत के ऊपर एक पतली-सी रेखा निकली हुई दिखाई देती है जो आगे चलकर भाग्य-रेखा या मस्तिष्क-रेखा से मिल जाती है, ऐसा होना अत्यन्त शुभ माना गया है। पाश्चात्य हस्तरेखा-विशेषज्ञ इस लाइन को Influence line कहते हैं। वस्तुतः यह लाइन व्यक्ति को अत्यन्त उच्च पद पर पहुँचा देती है।

यदि नेपच्यून-पर्वत बहुत अधिक उभरकर चन्द्र-क्षेत्र की ओर झुकता दिखाई दे तो व्यक्ति घटिया स्तर का बनता है, ऐसा समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति संकीर्ण मनोवृत्ति का एवं निंदनीय कार्य करने वाला होता है। यदि कोई रेखा नेपच्यून-पर्वत पर से उठकर मस्तिष्क-रेखा को काटे तो व्यक्ति निस्सदेह प्रमादी और पागल होगा।

यदि नेपच्यून-पर्वत अस्वाभाविक रूप से उभरा हुआ हो तो व्यक्ति का गृहस्थ जीवन दुःखदायी समझना चाहिए। ऐसे व्यक्ति चिड़चिड़े, शंकालु तथा क्रूर प्रवृत्ति के होते हैं। यदि नेपच्यून-पर्वत उभरकर शनि-पर्वत से मिलता हो, तो व्यक्ति निस्सन्देह धन के लालच में अन्य व्यक्तियों की हत्या करेगा। ऐसे व्यक्ति उच्छृंखल, असन्तोषी तथा धन-लोलुप होते हैं। अपने कार्यों से ये बेपरवाह होते हैं तथा कार्य करने के बाद पछताते रहते हैं।

यदि नेपच्यून-पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हो तो व्यक्ति धनवान् घर में भी जन्म लेकर दरिद्री जीवन व्यतीत करता है। मैं एक ऐसे लख-पति पिता के एकमात्र पुत्र को जानता हूँ, जिसके हाथ में इस प्रकार का चिह्न था, और पिता की मृत्यु के बाद उसे दर-दर की ठोकरें खाते देखा है। हस्तरेखा-विशेषज्ञों को ऐसे व्यक्तियों से पूरी सावधानियाँ रखनी चाहिए।

चन्द्र — चन्द्र ग्रह मनुष्य के सर्वाधिक निकट ग्रह है, इसलिए इसका प्रभाव भी मनुष्य पर सबसे अधिक रहता है। यह ग्रह सौन्दर्य-कल्पना और शीतलता का प्रधान ग्रह है।

दाहिने हाथ में आयु-रेखा से बाईं ओर, नेपच्यून-क्षेत्र के नीचे, मणिबंध से ऊपर स्वतन्त्र भाग्य-रेखा से मिला हुआ जो क्षेत्र है, वह चन्द्र-क्षेत्र या चन्द्र-पर्वत कहलाता है। चन्द्र-प्रधान व्यक्ति आमतः कलाकार होते हैं, कल्पना इनकी सहचरी होती है, तथा कोमलता, रसिकता एवं भावुकता इनके स्वाभाविक गुण होते हैं।

चन्द्र-स्थान पुष्ट एवं उन्नत हो तो व्यक्ति में भावुकता, कल्पना, प्रकृतिप्रियता एवं सौन्दर्य-प्रेम विशेषरूप से बढ़ा-चढ़ा होता है। ये वे लोग होते हैं, जो वास्तविक दुनिया से परे हटकर स्वप्नलोक में विचरण करते हैं। इनके जीवन में कल्पनाओं का अभाव नहीं रहता। ये हर समय अपने-आप में खोये हुए, अपनी ही दुनिया में मगन और शांति की खोज में यत्र-तत्र विचरण करने वाले होते हैं।

यदि चन्द्र-पर्वत सीधा उभरा हुआ स्पष्ट एवं उन्नत होता है, तो व्यक्ति पूर्णतः प्रकृति-प्रेमी होता है; संसार के छल-कपट से दूर मनो-मालिन्य से हटकर सौन्दर्य-नगरी में विचरण करने वाला होता है। ये व्यक्ति उत्तम कोटि के कलाकार, संगीतज्ञ, कवि एवं साहित्यकार होते हैं। ऐसे मनुष्य कोमल-प्रकृति मिलनसार धार्मिक विचारों से सम्पन्न एवं सुसंस्कृत होते हैं। इनके विचार स्वतन्त्र एवं श्रेष्ठ होते हैं। कोमल-प्राण कवि पंत के हाथ में चन्द्र-पर्वत का उन्नत उभार एवं तदनुसार फल देखा जा सकता है।

चन्द्र-पर्वत की अनुपस्थिति ऐसे ही हाथों में होगी, जो पूर्णतः भौतिकवादी और कठोर-हृदय होंगे। युद्ध-पिपासुओं की हथेली में चन्द्र-पर्वत की क्षीणता ही दृष्टिगोचर होगी।

चन्द्र-पर्वत का उभरा हुआ होना इस बात को स्पष्ट करता है कि व्यक्ति कतई भौतिकवादी नहीं है। प्रेम एवं सौन्दर्य उनकी कम-जोरी होता है, तथा प्रेम का अन्त भी दुःखान्त ही होता है। अधिक विकसित पर्वत हो तो व्यक्ति पागल तक होता देखा गया है।

चन्द्र-पर्वत मध्यमस्तरीय उभरा हुआ हो तो व्यक्ति हवाई किलों

में ही मस्त रहने वाला होता है। वे खाट पर पड़े-पड़े कई वर्षों तक की योजनाएँ बना लेते हैं, पर कार्यान्वित करना चाहते नहीं, या वे कार्यान्वित करने में अक्षम रहते हैं।

ऐसे व्यक्ति बहुत अधिक भावुक होते हैं। छोटी-सी विपरीत बात भी इन्हें गहराई से छूती है; छोटा-सा व्यंग्य भी इनके अन्तस्तल को छेदने में समर्थ होता है ऐसे लोगों में संघर्ष करने की भावना नहीं होती; विपरीत परिस्थितियों से उलझना इन्हें आता नहीं, तथा आत्म-विश्वास की न्यूनता जीवन में असफलताओं को जन्म दे देती है।

यदि चन्द्र-पर्वत विकसित होकर हथेली के बाहर की ओर झुकता चला जाता हो, तो इनमें रजोगुण की प्रधानता बन जाती है। ऐसे व्यक्ति इन्द्रियलोलुप विषयी एवं कामी बन जाते हैं तथा सुन्दर स्त्रियों के पीछे चक्कर काटते रहते हैं ऐश-आराम एवं भोगविलासमयी जिन्दगी बिताना इनका ध्येय रहता है।

यदि हथेली में चन्द्र पर्वत, शुक्र-पर्वत की ओर झुकता हुआ दिखाई दे तो व्यक्ति पूर्णत: भोगी होता है। निर्लज्जता उनके लिए आभूषण होती है। व्यसनों में ये इतने अधिक फँस जाते हैं कि उन्हें अपने-पराये का भी भेद नहीं रहता तथा समाज में बदनाम हो जाते हैं।

यदि चन्द्र-पर्वत पर आड़ी रेखाएँ दिखाई दे, तो व्यक्ति कई बार जल-यात्राएँ करता है। यदि वृत्त हो तो राजनैतिक कार्यों से यात्राएँ करता है।

यदि मानसिक और व्यावहारिक विश्व उन्नतावस्था में हों तो ऐसे व्यक्ति श्रेष्ठ भाषाविद् एवं आचार्य होते हैं।

शुक्र—अंगूठे के दूसरे पोरुए के नीचे, आयु-रेखा से घिरा हुआ जो पठार-सा दिखाई देता है वही शुक्र-पर्वत कहलाता है। यूनानी धर्म-शास्त्रों में इसे कला-प्रेम और सौन्दर्य की देवी कहा गया है। वस्तुत: शुक्रग्रह-प्रधान व्यक्तियों में इन गुणों का श्रेष्ठतम विकास होता है, इसमें सन्देह नहीं।

यदि यह पर्वत पूर्णत: विकसितावस्था में होता है, तो व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा समझना चाहिए, उसका व्यक्तित्व श्रेष्ठ एवं प्रभावशाली होता है; जोश, हिम्मत और साहस की उसमें कमी नहीं होती।

पर्वतों की विभिन्न स्थितियां (१)

यदि यह पर्वत कम विकसित हो तो व्यक्ति में साहस और जोश की कमी होती है। परन्तु यदि यह उभार आवश्यकता से अधिक उभरा हुआ दिखाई दे तो व्यक्ति में जोश जरूरत से ज्यादा होता है, अतः वह Opposite Sex की ओर अधिक खिंचता है, अर्थात् स्त्री हो तो पुरुष की ओर तथा पुरुष हो तो स्त्री की ओर आकर्षण अनुभव करता है।

शुक्र-पर्वत की अनुपस्थिति व्यक्ति को निर्मोही, वीतरागी और संन्यासी बना देती है, जो घर-बार छोड़कर जंगलों में ही निवास करता है।

यदि शुक्र का उभार उन्नतावस्था में हो, और पुष्ट अंगूठा एवं सन्तुलित मस्तिष्क-रेखा न हो तो व्यक्ति प्रबल कामी और [illegible]-लोलुप हो जाता है। उसके प्रेम के पीछे निश्चय ही वासना छिपी रहती है। इनके प्रेम का अन्त वासना के अन्तर्गत ही होता है।

श्रेष्ठ शुक्र-पर्वत वाले व्यक्ति सुरुचिपूर्ण, स्पष्ट एवं मधुर [illegible] करने वाले व्यक्ति होते हैं, परन्तु रक्तप्रधान [illegible] के कारण ये जरा-जरा-सी बात पर उफन पड़ते हैं [illegible], पर शीघ्र ही इनका क्रोध शान्त भी हो जाता है और [illegible] होने पर क्षमायाचना करने में भी नहीं हिचकिचाते।

शुक्र-पर्वत का उभार व्यक्ति के चेहरे को [illegible] और प्रभावशाली भी बना देता है। उसके चेहरे में कुछ [illegible] आकर्षण होता है कि लोग बरबस उसकी ओर आकृष्ट होते हैं। जीवन को ये व्यक्ति भार नहीं समझते, अपितु हँसते-हँसते [illegible] हैं। ऐसे व्यक्ति ईमानदार होते हैं तथा अपने कार्यों के प्रति पूर्णतः जागरूक रहते हैं। सुन्दर वस्तुओं के प्रति इनका [illegible] ही कहा जा सकता है।

कड़ी और खुरदुरी हथेली पर शुक्र-पर्वत का ऊँचा उभार [illegible] को अत्यधिक भोगी बना देता है, तथा भौतिक सुखों के [illegible] बन जाते हैं।

साफ, चिकनी एवं [illegible] हथेली पर [illegible] वस्था में हो तो व्यक्ति [illegible]

ऐसा व्यक्ति प्रेम करेगा, तथा काव्य में इसकी गहन आस्था होगी।

शुक्र-प्रधान व्यक्तियों को अधिकतर गले, फेफड़े तथा दिल की बीमारी होती है। ये व्यक्ति ईश्वर में आस्था नहीं रखते अपितु स्वच्छन्द जीवन के हामी होते हैं। ऐसे व्यक्ति के मित्रों की संख्या बहुत अधिक होती है। व्यसन इनको प्रिय होता है, तथा प्रेम और सौंदर्य को अपने जीवन की सिद्धि समझते हैं।

यदि शुक्र-पर्वत दबा हुआ, सिजलिजा तथा छोटा होता है, तो ऐसे व्यक्ति फूहड़ स्वभाव के होते हैं तथा निम्नस्तर से विपरीत योनि को प्रभावित करने की चेष्टा करते हैं वासनाओं की तृप्ति के पीछे ये पागल रहते हैं। अश्लीलता की मात्रा इनमें कुछ बढ़ जाती है।

यदि यह पर्वत समतल हो तो व्यक्ति आत्मकेन्द्रित हो जाता है। प्रेम और सौन्दर्य के स्थान पर ये तर्क तथा बुद्धि से काम लेते हैं। ऐसे व्यक्ति कानून और चिकित्सा में गहरी रुचि लेते देखे गए हैं।

यदि शुक्र-पर्वत उन्नतावस्था में हो और उंगलियों के सिरे कोणिक हों तो व्यक्ति में कलात्मक रुचि की वृद्धि होती है। वर्गाकार सिरे हों तो व्यक्ति समझदारी और तर्क से काम लेता है। फैले हुए सिरे व्यक्ति को प्राणिमात्र के लिए दयालु बना देते हैं।

यदि चरित्र को परे रख दें, तो शुक्र-प्रधान-व्यक्ति श्रेष्ठ मित्र सिद्ध होते हैं।

मंगल—जीवन-रेखा के प्रारंभिक स्थल के नीचे, और उससे घिरा हुआ शुक्र-पर्वत के ऊपर जो फैला हुआ स्थल है, वही मंगल-पर्वत या भौम-पर्वत कहलाता है। मंगल मुख्यतः युद्ध का देवता है। शूरवीरता इसमें कूट-कूटकर भरी हुई है, अतः मंगल-प्रधान-व्यक्ति साहसी, निडर और शक्तिशाली तो होते ही हैं।

इन लोगों में हिचक, कायरता या दब्बूपन नहीं होता। हाथ में दो मंगल-पर्वत होते हैं, और दोनों ही पर्वतों के अपने ही गुण हैं। ऊर्ध्व मंगल की उन्नतावस्था जहाँ जीवन में दृढ़ता और संतुलन लाती है, वहाँ निम्न मंगल व्यक्ति को लड़ाकू प्रवृत्ति का बना देता है।

हथेली में मंगल-पर्वत की अनुपस्थिति भीरुता की द्योतक है।

मंगल-पर्वत-प्रधान व्यक्ति गोल चेहरे के, सुडौल, हृष्टपुष्ट तथा

ऊँचे कद-काठ के होते हैं। धैर्य और साहस इनके प्रधान गुण होते हैं। अन्याय को ये रत्तीभर भी सहन नहीं करते। ऐसे व्यक्ति पुलिस-विभाग या मिलिटरी में ऊँचे पदों पर पहुँचते हैं। शासन करने का इनमें जन्मजात गुण होता है। आपत्ति के समय ये अतुलनीय धैर्य बताते हैं। यात्रा करना, सुस्वादु भोजन और नेतागीरी इन्हें प्रिय होते हैं।

ऊर्ध्व मंगल यदि पूर्ण विकसित होता है तो व्यक्ति लड़ाकू नहीं होते, बल्कि तर्कों एवं प्रमाणों से विरोध प्रस्तुत कर विजय प्राप्त करते हैं। निम्न मंगल का विकास व्यक्ति को बात-बात पर लड़ने वाला, लम्पट और धूर्त बना देता है।

मंगल-पर्वत यदि बहुत विकसित हो तो व्यक्ति दुराचारी और अपराधी हो जाता है। मंगल-पर्वत का उभरा हुआ होना, कठोर और रूखी हथेली तथा गोल अंगूठा निश्चित रूप से एक हत्यारे के चिह्न होते हैं।

यदि मंगल-पर्वत का झुकाव शुक्र-क्षेत्र की ओर होता दिखाई दे तो समझना चाहिए कि व्यक्ति सद्गुणों की अपेक्षा दुर्गुणों की ओर ही अधिकाधिक बढ़ रहा है। उसके हृदय की तीव्रता या जोश प्रेम में तथा सौन्दर्य में विकसित हो रहा है। ऐसे व्यक्ति झूठी शान-शौकत रखनेवाले, गीदड़-भभकी देकर काम निकालने वाले तथा डरपोक होते हैं।

मंगल-प्रधान व्यक्तियों की त्वचा कोमल नहीं होती, अपितु कठोर और मोटी होती है। यदि मंगल-पर्वत पर मंगल-रेखा साफ उभरी हुई हो तो व्यक्ति युद्धप्रिय बनता है। ऐसा व्यक्ति या तो सेनाध्यक्ष बन जाता है, अथवा प्रचण्ड डाकू बन जाता है। जोश दिलाने पर ये कुछ भी कर गुजरते हैं।

मंगल-पर्वत पर त्रिकोण, चतुर्भुज या वृत्त ठीक नहीं होते। ऐसे चिह्न रक्त का दूषित होना ही स्पष्ट करते हैं।

यदि हथेली का रंग लाल होता है, और मंगल-पर्वत उन्नतावस्था में हो, तो व्यक्ति उच्चपद प्राप्त करता है। गुलाबी रंग मंगल-प्रहोत्पन्न दुर्गुणों को मिटा देता है। पीला रंग व्यक्ति को अपराध की तरफ प्रवृत्त करता है, तथा नीले या बैंगनी रंग की हथेली जीवन-भर

रोगी रहने का संकेत देती है।

यदि मंगल-प्रधान व्यक्तियों की हथेली में मानसिक विश्व प्रबल होता है, तो व्यक्ति महत्त्वाकांक्षी होता है, तथा लक्ष्य की ओर बढ़ने में सतत् चेष्टारत रहता है। यदि मध्य विश्वप्रधान हो तो व्यक्ति व्यापार में सफलता प्राप्त करता है, तथा व्यापार में कई प्रकार के खतरे उठाता है। निम्न विश्वप्रधान हो तो व्यक्ति दुर्गुण-सम्पन्न, व्यसनी और लम्पट होता है।

मंगल-पर्वत उन्नत हो और हथेली में उँगलियाँ कोणिक हों तो व्यक्ति आदर्शप्रिय होता है। वर्गाकार उँगलियाँ व्यक्ति को व्यावहारिक, फैली हुई उँगलियाँ व्यक्ति को तत्पर और चतुर बनाती हैं। गठीली उँगलियाँ हों तो व्यक्ति तार्किक तथा सोच-समझकर कार्य करने वाला होता है।

मंगल-पर्वत पर क्रॉस हो तो व्यक्ति की मृत्यु युद्ध में समझनी चाहिए, तथा जाल हो तो दुर्घटना में मृत्यु होगी, ऐसा विचार करना चाहिए।

राहु—हथेली के बीच में मस्तक-रेखा से नीचे चन्द्र, शुक्र और मंगल से घिरा हुआ जो क्षेत्र है, वह राहु-क्षेत्र कहलाता है। भाग्य-रेखा का गमन इसी राहु-पर्वत पर से होता है, जो कि आगे चलकर शनि-पर्वत पर पहुँचती है।

राहु-क्षेत्र हथेली पर यदि पुष्ट और उन्नतावस्था में हो, तो ऐसा पर्वत निश्चय ही व्यक्ति को भाग्यवान् बनाता है। यदि भाग्य-रेखा पुष्ट और गहरी होकर इसपर से जाती हो तो उक्त कथन में दो राय भी नहीं होतीं। यह भाग्य-रेखा जितनी ही स्पष्ट और साफ तथा गहरी होगी, व्यक्ति यौवनावस्था में उतना ही भाग्यशाली होता है। ऐसा व्यक्ति दयालु, परोपकारी, प्रतिभावान तथा तीर्थयात्रा करने का शौकीन होता है।

यदि हथेली पर राहु-पर्वत तो उभरा हुआ हो, पर उसपर भाग्य-रेखा टूटी हुई, जंजीरदार या सदोष हो तो व्यक्ति एक बार ऊँचा उठकर फिर पतनावस्था में जाता है। व्यापारिक कार्यों में उसे बुरे दिन देखने पड़ते हैं तथा सफलता मिलते-मिलते असफलताएँ प्राप्त हो जाती हैं।

यदि राहु-पर्वत हथेली के मध्यभाग की ओर सरक गया हो तो व्यक्ति को यौवनकाल में बहुत बुरे दिन देखने पड़ते हैं। यदि हथेली के बीच का हिस्सा गहरा हो और उसपर भाग्य-रेखा विच्छृंखल हो तो व्यक्ति यौवनकाल में दर-दर का भिखारी हो जाता है, ऐसा देखने में आया है।

राहु-क्षेत्र कम उभरा हुआ हो तो व्यक्ति कलहप्रिय, चंचलचित्त तथा संपत्ति का विनाश करनेवाला होता है।

केतु—हथेली में केतु ग्रह का क्षेत्र मणिबन्ध के ऊपर शुक्र और चन्द्र-क्षेत्रों को विभक्त करता हुआ भाग्य-रेखा के प्रारम्भिक स्थान के पास होता है। इसका अधिकतर फल राहु के समान ही होता है।

केतु ग्रह अपना प्रभाव जीवन के पाँचवें वर्ष से बीसवें वर्ष तक ही रखता है। यदि केतु-पर्वत स्वाभाविक रूप से उन्नत और समतल हो, तथा भाग्य-रेखा भी गहरी और स्पष्ट हो तो बालक भाग्यशाली होता है। ऐसा बालक धनी पिता के यहाँ जन्म लेता है, और अगर पिता गरीब हो तो ऐसे बालक के जन्म के पश्चात् पिता को आकस्मिक धनलाभ होता है, जिससे उक्त बालक का पालन-पोषण उत्तम रीति से होता है। विद्यार्जन में ऐसा बालक तत्पर रहता है, तथा समाज में उसे पूरा सम्मान मिलता है।

यदि केतु-पर्वत अस्वाभाविक रूप से उठा हुआ हो तथा भाग्य-रेखा धूमिल हो, या कटी-छंटी हो तो व्यक्ति बचपन में बुरे दिन देखता है। माता-पिता की आर्थिक स्थिति दिनोदिन गिरती ही जाती है, तथा शिक्षा-प्राप्ति के लिए ऐसे बालक को काफी भटकना पड़ता है। ऐसा बालक बचपन में रोगी रहता है, तथा भली प्रकार से इसकी सेवा-सुश्रूषा नहीं हो पाती।

यदि केतु-पर्वत दबा हुआ हो तो भाग्य-रेखा प्रबल होने पर भी व्यक्ति की दरिद्रावस्था नहीं मिट सकती। बालकाल में ही इसे पेट के कई रोग हो जाते हैं तथा चिकित्सा पर काफी व्यय होता है व इसकी शिक्षा सुचारु रूप से नहीं चलती, तथा शिक्षा के क्षेत्र में यह बुद्धू ही रहता है। ऐसा बालक मंदबुद्धि एवं भाग्यहीन होता है।

प्लूटो—अंग्रेजी में इसे Pluto तथा हिन्दी में इन्द्र के नाम से इसे

पर्वतों की विभिन्न स्थितिया (२)

अति विकसित पर्वत

अनुपस्थित पर्वत
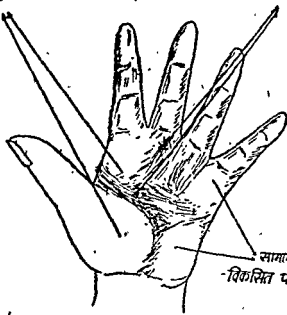
सामान्य-
-विकसित पर्वत

जाना जाता है। इसका क्षेत्र हृदय-रेखा के नीचे तथा मस्तिष्क-रेखा के ऊपर हर्शल तथा गुरु क्षेत्रों के बीच है। साधारणतः यह क्षेत्र प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में भली प्रकार देखा जा सकता है।

मैंने प्लूटो का प्रभाव अधिकतर मनुष्य की वृद्धावस्था में देखा है। यदि प्लूटो का पर्वत विकसित, श्रेष्ठ एवं उन्नतावस्था में होता है, तो व्यक्ति ने यौवनकाल में चाहे कितने ही बुरे दिन देखे हों, वृद्धावस्था उसकी सानन्द बीतती है। जीवन के ४२वें वर्ष से प्लूटो का प्रभाव प्रारम्भ होता है, जो मृत्यु तक रहता है। यदि प्लूटो-क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो तो व्यक्ति चालीस से बयालीस साल के बीच में दुर्घटना का शिकार होता है।

यदि यह पर्वत आवश्यकता से अधिक विकसित हो तो व्यक्ति निरक्षर तथा अपव्ययी होता है, मित्रों का उसे सहयोग नहीं मिलता तथा जीवन में निरन्तर बाधाओं का सामना करते रहना पड़ता है।

यदि यह पर्वत दबा हुआ हो, या न हो, तो व्यक्ति की वृद्धावस्था अत्यन्त कठिनता से व्यतीत होती है; अक्सर भाग्य इन्हें धोखा देता है। ऐसे व्यक्तियों का स्वभाव चिड़चिड़ा तथा ईर्ष्यालु होता है। प्लूटो पर्वत पर भाग्य-रेखा का गमन न होना व्यक्ति की भाग्यहीनता का ही संकेत समझना चाहिए।

पर्वत-युग्म—हथेली पर प्रत्येक ग्रह के पर्वत का सामान्य विवेचन पीछे के पृष्ठों में किया जा चुका है। अधिकतर हाथों में से एक से अधिक पर्वत विकसितावस्था में पाये जाते हैं। ऐसी स्थिति में उन दोनों पर्वतों से सम्बधित फल व्यक्ति के जीवन मे देखे जा सकते हैं। पाठकों की सुविधा के लिए दो-दो पर्वतों की विकासावस्था से उत्पन्न फल का सामान्य विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है—

गुरु—गुरु और शनि—उत्तम भाग्यवर्धक। गुरु और सूर्य—श्रेष्ठ धन-सम्मान, पद और ख्याति। गुरु और बुध—काव्य-शास्त्रादि में निपुणता, ज्योतिष ज्ञान में रुचि, सफल गणितज्ञ, उत्तम व्यापारी एवं श्रेष्ठ वक्ता। गुरु और मंगल—शूरवीरता, पराक्रम, नीति-निपुणता एवं रणसंचालन-योग्यता। गुरु और नेपच्यून—श्रेष्ठ विचार, उत्तम धन। गुरु और हर्शल—विज्ञान में रुचि, ख्याति एवं परोपकार

भावना। गुरु और प्लूटो—उर्वर मस्तिष्क, श्रेष्ठ वक्ता। गुरु और राहु—आत्म-विश्वास में कमी, दुष्ट विचार। गुरु और केतु—बाधाएँ, चिन्ता एवं परेशानी। गुरु और चन्द्र—गम्भीरता, व्यक्तित्व एवं कार्य में सुघड़ता। गुरु और शुक्र—भव्य व्यक्तित्व, सम्मोहन की विशेष योग्यता।

शनि—शनि और सूर्य—वैज्ञानिक भावना, तर्क-शक्ति, मनन-शीलता। शनि और बुध—विवेकपूर्ण निर्णय, उत्तम विचार। शनि और शुक्र—स्वार्थी, सौन्दर्य-भावना में वृद्धि, प्रेम में दीवाना। शनि और राहु—उत्तम गुणों से भूषित, आकस्मिक द्रव्य-लाभ। शनि और केतु—यौवनावस्था में कठिनाइयाँ, आजीविका की चिन्ता। शनि और नेपच्यून—यात्रा, विदेश-गमन। शनि और हर्शल—कलाओं में निपुणता, एकान्तप्रियता। शनि और प्लूटो—विवेक, तेजस्विता और चतुराई। शनि और चन्द्र—रहस्यमय व्यक्तित्व। शनि और मंगल—लड़ाकू प्रवृत्ति, और आवेश में सब कुछ कर गुजरना।

सूर्य—सूर्य और बुध—वैज्ञानिक प्रतिभा का विकास, सफल अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारी। सूर्य और शुक्र—मिलनसार, सफल मित्र एवं योजनाबद्ध रूप से कार्य करनेवाला। सूर्य और राहु—सकट, चिन्ता, दुःख। सूर्य और केतु—विदेश-गमन। सूर्य और हर्शल—ज्ञान, विवेक और आत्मख्याति। सूर्य और नेपच्यून—सोच-समझकर कार्य करनेवाला। सूर्य और प्लूटो—धीरता, गभीरता। सूर्य और चन्द्र—कल्पना, कृत्रिमता और आडम्बर। सूर्य और मंगल—बलिदान की प्रबल भावना।

बुध—बुध और शुक्र—विपरीत योनि के प्रति गहरी रुचि, संगीत-कला-प्रेम। बुध और राहु—चिडचिड़ा स्वभाव। बुध और केतु—यात्रा-प्रेम, मानवीय गुणों का विकास। बुध और हर्शल—प्रेम, कल्पना। बुध और नेपच्यून—कल्याण-कामना, परोपकार। बुध और प्लूटो—सफल अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारी। बुध और चन्द्र—दूरदर्शिता, सूझबूझ और वैज्ञानिक प्रतिभा। बुध और मंगल—तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता।

शुक्र—शुक्र और चन्द्र—प्रेम-भावना की तीव्रता, सौन्दर्य-वासना,

कला-प्रेम। शुक्र और राहु—निम्नस्तर की स्त्रियों से सम्पर्क। शुक्र और केतु—सहज द्रवणशीलता। शुक्र और हर्शल—प्रेम-तीव्रता। शुक्रऔर नेपच्यून—उच्चकोटि का कला-प्रेम, गहरी संवेदनशीलता। शुक्र और प्लूटो—जीवन-क्षमताओं को समझनेवाला। शुक्र और मंगल—संगीत-ज्ञान में पूर्णता।

चन्द्र—चन्द्र और मंगल—समुद्र-यात्राएँ। चन्द्र और राहु—दुष्ट मित्रों से सम्पर्क। चन्द्र और केतु—यौवनावस्था में प्रेम का टूटना भग्न-हृदय। चन्द्र और हर्शल—सहज भावना। चन्द्र और नेपच्यून—ज्ञान-भावना, कल्पना। चन्द्र और प्लूटो—प्रबल काम-वेग।

राहु—राहु और केतु—प्रबल दुःख, आजीविका के लिए कठोर श्रम। राहु और हर्शल—चिन्ता, दुःख। राहु और नेपच्यून—विदेश में विवाह। राहु और प्लूटो—संवेदन-भावना, अपराध-वृत्ति।

केतु—केतु और हर्शल—दुःख और कठोर शासन-भावना। केतु और नेपच्यून—विवेकशून्यता। केतु और प्लूटो—सम्मान-वृद्धि।

हर्शल—हर्शल और प्लूटो—उच्चस्तरीय वैज्ञानिक प्रतिभा। हर्शल और नेपच्यून—विदेश-गमन, उच्चपद-प्राप्ति।

नेपच्यून—नेपच्यून और प्लूटो—तीव्र कामांधता, विदेशों में प्रणय-सम्बन्ध।

पर्वतों पर अंकित चिह्न—पर्वतों का अध्ययन करते समय उन-पर अंकित चिह्नों का भी सावधानीपूर्वक अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि इन चिह्नों से भी फलादेश में काफी अन्तर आ जाता है।

इन चिह्नों में मुख्यतः निम्न चिह्न होते हैं, जो पर्वतों पर एक या एक से अधिक पाये जाते हैं—

(१) रेखा, (२) अधिक रेखाएँ, (३) आपस में कटती हुई रेखाएँ, (४) बिन्दु, (५) क्रॉस, (६) नक्षत्र, (७) वर्ग, (८) वृत्त, (९) त्रिकोण, और (१०) जाली।

अब हम प्रत्येक पर्वत पर इन चिह्नों का शुभाशुभ वर्णित कर रहे हैं—

गुरु—एक रेखा—कार्यों में सफलता। कई रेखाएँ—नवीन

लेखन, भाग्योदय। आपस में कटती हुई रेखाएँ—निम्नकोटि के विचार, घटिया लेखन। बिन्दु—सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता। क्रॉस—घर में मांगलिक कार्य, सुखी वैवाहिक जीवन। नक्षत्र—ऊँची महत्त्वाकांक्षाएं, तथा उनकी पूर्ति। वर्ग—कल्पना और यथार्थ का सुखद सामंजस्य। त्रिकोण—राजनैतिक एवं धार्मिक कार्यों में सफलता। जाली—अशुभ घटना, अन्धविश्वासों की वृद्धि और कलह।

शनि—एक रेखा—सौभाग्य वृद्धि। कई रेखाएँ—जीवन में बाधाएँ। आपस में कटती हुई रेखाएं—दुर्भाग्य, चिन्ता। बिन्दु—असम्भावित घटित घटनाएँ। क्रॉस—नपुंसकता। नक्षत्र—दुष्ट भाव, हत्या करने की प्रबल भावना। वर्ग—अनिष्टों से बचाव। वृत्त—शुभ कार्यों में रुचि। त्रिकोण—रहस्यमय कार्यों में अभिरुचि। जाली—भाग्यक्षीणता।

सूर्य—एक रेखा—धन, मान-प्रतिष्ठा। कई रेखाएँ—कलात्मक रुचि, उच्च राजकीय पद-प्राप्ति। आपस में कटती हुई रेखाएँ—नौकरी में व्यवधान। बिन्दु—सम्मान-हानि। क्रॉस—स्वयं की गलतियाँ तथा ख्याति में कमी। नक्षत्र—असाधारण प्रसिद्धि, उच्च धन-पद-प्राप्ति। वर्ग—सामाजिक सम्मान। वृत्त—विदेश-गमन। त्रिकोण—कला एवं शिक्षा में उच्च सम्मान। जाली—निन्दा मानहानि।

बुध—एक रेखा—धनवान्, समृद्धि। कई रेखाएँ—व्यापार में असाधारण योग्यता। आपस में कटती हुई रेखाएँ—चिकित्सा-क्षेत्र में निपुणता। बिन्दु—व्यवसाय में हानि, असफलता। क्रॉस—आकस्मिक द्रव्य-हानि। नक्षत्र—विदेशों से व्यापारिक सम्बन्ध। वर्ग—कार्य-तत्पर, भविष्य की बात को समझनेवाला। वृत्त—आकस्मिक मृत्यु, एक्सीडेंट। त्रिकोण—राजनैतिक सफलता। जाली—मानहानि, दिवालिया।

मंगल—एक रेखा—साहस, दृढ़ता, पराक्रम। कई रेखाएँ—हिंसात्मक प्रवृत्ति। आपस में कटती हुई रेखाएँ—युद्धप्रियता। बिन्दु—युद्ध में घाव लगना। क्रॉस—युद्ध में अथवा लड़ाई-झगड़े में मृत्यु। नक्षत्र—उच्च सेनापतिपद या पुलिस-विभाग में उच्च पद। वर्ग—क्रोध की अतिरेकता। वृत्त—नीति-निपुणता। त्रिकोण—योजना-

बद्ध कार्य करने की क्षमता। जाली—युद्ध में हार, आत्मग्लानि अथवा आत्महत्या।

चन्द्र—एक रेखा—कल्पना की प्रमुखता। कई रेखाएँ—सौन्दर्य-प्रियता, कोमल स्वभाव। आपस में कटती हुई रेखाएँ—चिन्ता, मनस्ताप। बिन्दु—प्रेम में असफलता, द्रव्य-हानि। क्रॉस—अन्धविश्वास से हानि, सामाजिक असफलता। नक्षत्र—काव्य-लेखन, राजकीय सम्मान। वर्ग—धन-प्राप्ति। वृत्त—जल में डूबने से मृत्यु। त्रिकोण—उच्चकोटि का कवि। जाली—निराशा, चिन्ता।

राहु-केतु—एक रेखा—साहस। कई रेखाएँ—क्रोध की मात्रा में अतिरेकता। आपस में कटती हुई रेखाएँ—उत्तरदायित्वहीनता। बिन्दु—सफलता। क्रॉस—मानहानि, ठगा जाना। नक्षत्र—युद्ध-प्रियता। वर्ग—राज्य-सम्मान। वृत्त—सेना में उच्चपदप्राप्ति। त्रिकोण—अतुल धनप्राप्ति। जाली—दरिद्री जीवन।

हर्शल—एक रेखा—सम्मान। कई रेखाएँ—विदेश-गमन। आपस में कटती हुई रेखाएँ—वायुयान-दुर्घटना। बिन्दु—उच्च सम्मान। क्रॉस—विदेश-प्रवास। नक्षत्र—विदेशों में ख्याति। वर्ग—वैज्ञानिक कार्यों में रुचि। वृत्त—धनप्राप्ति। त्रिकोण—इन्जीनियर या उच्चपद। जाली—आकस्मिक दुर्घटना से मृत्यु।

नेपच्यून—एक रेखा—सामाजिकता। कई रेखाएँ—सामाजिक उत्तरदायित्वपूर्णता। आपस में कटती हुई रेखाएँ—निराशा, उदासी। बिन्दु—विवेक, न्यायप्रियता। क्रॉस—हत्या-सम्बन्धी भावनाओं की वृद्धि। नक्षत्र—जल-यात्रा। वर्ग—उच्चस्तरीय ख्याति। वृत्त—मानसिक रुग्णता। त्रिकोण—विदेश में विवाह, तथा विदेशों में ही सम्मान। जाली—जलयान में मृत्यु।

प्लूटो—एक रेखा—सर्वाङ्गीण उन्नति। कई रेखाएँ—उन्नति व सामाजिकता। आपस में कटती हुई रेखाएँ—संन्यास अथवा सामाजिकता सम्बन्ध-विच्छेद। बिन्दु—उदासीनता। क्रॉस—आत्महत्या। नक्षत्र—उच्चकोटि का धर्मात्मा। वर्ग—विवेकशून्यता। वृत्त—ज्ञान, धार्मिक कार्यों में रुचि। त्रिकोण—कई कलाओं तथा विद्याओं में निपुणता। जाली—असफल जीवन।

शुक्र—एक रेखा—तीव्र काम-वासना। कई रेखाएँ—सौन्दर्य प्रेमी, भोगी। आपस में कटती हुई रेखाएँ—प्रेम में असफलता, मान-हानि। बिन्दु—गुप्तांगों में कोई भयंकर बीमारी। क्रॉस—असफल प्रेम, फलस्वरूप जीवन में निराशावादी भावना की वृद्धि। नक्षत्र—प्रेमिका के कारण द्रव्य-हानि। वर्ग—जेलयात्रा। वृत्त—आकस्मिक दुर्घटना। त्रिकोण—बहुस्त्रियों के साथ रमण करनेवाला, सफल जीवन व्यतीत करनेवाला। जाली—अस्वस्थ जीवन।

धनात्मक पर्वत—पाश्चात्य हस्तरेखा-विशेषज्ञ कीरो ने अंग्रेजी तारीखों में जन्म लेने के आधार पर धनात्मक पर्वत और ऋणात्मक पर्वत का विवेचन किया है। उनके अनुसार धनात्मक पर्वत में उस पर्वत की विशेषताएँ, तथा ऋणात्मक में उस पर्वतीय ग्रह की न्यूनताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

जन्म-तारीख	ग्रह (धनात्मक)
२० अप्रैल से २७ मई	शुक्र
२१ मार्च से २१ अप्रैल	मंगल
२१ नवम्बर से ६० दिसम्बर	गुरु
२१ दिसम्बर से २० जनवरी	शनि
२१ जुलाई से २० अगस्त	सूर्य
२१ मई से २० जून	बुध
२१ जुलाई से २० अगस्त	चन्द्र

इसके साथ-ही-साथ ऋणात्मक पर्वत-विकास का भी स्पष्टीकरण उन्होंने किया है। उनके अनुसार ऋणात्मक पर्वत-विकास के समय में जन्म लेने पर संबंधित ग्रह का फलादेश न्यून होता है।

ऋणात्मक पर्वत—निम्न तारीखों में जन्म लेनेवाले, संबंधित ग्रह का ऋणात्मक विकास रखते हैं।

जन्म-तारीख	ग्रह (ऋणात्मक)
२१ सितम्बर से २० अक्टूबर	शुक्र
२१ अक्टूबर से २० नवम्बर	मंगल

१६ फरवरी से २० मार्च	गुरु
२१ जनवरी से १८ फरवरी	शनि
२१ मार्च से २० अप्रैल	सूर्य
२१ अगस्त से २० सितम्बर	बुध
२१ जुलाई से २० अगस्त	चन्द्र

वस्तुतः हाथ को पढ़ना दुष्कर कार्य है, परन्तु यदि लगन, धैर्य और परिश्रम से इस ओर अध्ययन करें, तो निश्चय ही श्रेष्ठ सफलता मिलती है।

५

रेखाएँ

जीवन-शक्ति का सहज स्फूर्त प्रवाह हथेली के माध्यम से ही होता है। यही प्रवाह हथेली की रेखाओं और पर्वतों को एक सूत्र में बाँधता है। हथेली पर अंकित कोई भी रेखा व्यर्थ नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक रेखा चाहे वह गहरी हो चाहे विरल, इसी जीवन-शक्ति के प्रवाह में साधक होती है, अतः प्रत्येक रेखा का अध्ययन अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ करना चाहिए।

स्पष्ट, घनी और अटूट रेखाएँ जीवन की स्थितियों की सफल संकेतक हैं। साथ ही टूटी हुई, विरल और अस्पष्ट रेखाएं जीवन-शक्ति की बाधक समझनी चाहिए। स्पष्ट रेखाओं के प्रभाव शिव तथा कल्याणकारी होते हैं।

दोनों हाथों को ध्यानपूर्वक देखना चाहिए। बायाँ हाथ जहाँ व्यक्ति के भूतकाल को स्पष्ट करता है, वहाँ दाहिना हाथ उसके वर्तमान और भविष्य का। हाथ देखते समय ध्यानपूर्वक छोटी-से-छोटी रेखा का भी अवलोकन कीजिये, और किसी भी रेखा को व्यर्थ ही

मुख्य रेखाएं

शुक्र आयात
हृदय रेखा
मानस रेखा
प्रणय रेखा
जीवन रेखा
शनि रेखा
सूर्य रेखा
शुक्र त्रिकोण
बुध रेखा
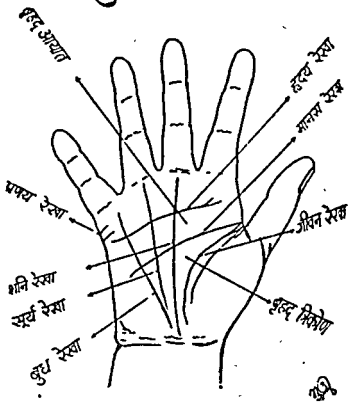
समझकर मत छोड़ दीजिये, क्योंकि हाथ में अंकित प्रत्येक रेखा व्यक्ति की किसी-न-किसी घटना को स्पष्ट करती ही है। दुनिया में दो हाथ किसी के भी एक-से नहीं होते। प्रत्येक हाथ की अपनी अलग विशेषता है, यहाँ तक कि जुड़वाँ बालकों के हाथों की रेखाओं में भी अन्तर पाया गया है।

यद्यपि यह कहा गया है कि अच्छे हस्तरेखाविद् को अच्छा मनोवैज्ञानिक भी होना चाहिए, परन्तु केवल व्यक्ति की वेशभूषा देखकर ही फलादेश नहीं कह देना चाहिए। एक बार एक उच्च केन्द्रीय नेता के हाथ का मैं अवलोकन कर रहा था कि तभी एक भिखारी दरवाजे के पास से गुजरा। भिखारी की वेशभूषा और स्थिति इतनी दयनीय थी कि देखते ही उसपर करुणा आती थी, और कुछ देने को जी हो आता था। मेरे मित्र नेता को सहज कौतूहल हुआ, और बोले, 'पंडित जी! जरा इस फकीर का हाथ भी तो देखिये! क्या इसके हाथ की सभी रेखाएँ इतनी निर्बल हैं कि यह जीवनभर ऐसा ही बुभुक्षित भटकता रहेगा?' कौतूहल था ही, मैंने उनके कौतूहल को शान्त करना आवश्यक समझा। तभी नौकर उस भिखारी को वहीं ले आया। उसने हाथ दिखाने में काफी आनाकानी की, पर मित्र महोदय न माने। मैंने ध्यानपूर्वक हाथ को देखा तो चकित रह गया। कभी मैं उसके हाथ को देखता हूँ, तो कभी चेहरे को। उसके हाथ में रवि-रेखा और ऊर्ध्व-रेखा का इतना सुन्दर और उचित सामञ्जस्य था कि वह दरिद्री जीवन बिता ही नहीं सकता था, पर वास्तविकता मेरे सामने थी। मुझे आश्चर्य से देखते हुए नेता मित्र भी उत्सुक हुए, बोले, 'कुछ नहीं पंडित जी! मैंने तो यों ही पूछ लिया था। जाने दीजिये इस बेचारे फकीर को!' और जेब से दस पैसे का सिक्का निकालकर उसके सामने फेंक दिया।

पर मैं उसका हाथ पकड़े बैठा रहा, बोला, 'यह फकीर तो नहीं, कुछ और है। यह सैकड़ों में नहीं, लाखों में खेलनेवाला तथा उच्चपदस्थ अधिकारी होना चाहिए।' नेता महोदय और वह फकीर जोरों से खिलखिलाकर हँस पड़े। इधर मैं पानी-पानी हो रहा था, क्योंकि वास्तविकता कुछ और कह रही थी, और हाथ कुछ और कह रहा था।

काफी पूछताछ की गई, और तब वहाँ रहस्योद्‌घाटन हुआ कि यह मात्र फकीर नही, केन्द्रीय गुप्तचर-विभाग का उच्चपदाधिकारी था। रहस्य खुलते ही नेता मित्र ऐसे चौंके, मानो बिच्छू काट गया हो। उन्हें यह स्वप्न में भी आशा नही थी कि उनके चारो ओर गुप्तचर भी है, जिन्हें वे जानते तक नहीं हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि रेखाओं का अध्ययन गम्भीर होना चाहिए, और जब आप कोई मन में निर्णय ले लें, तो उसपर डटे रहिये। यदि आपका अध्ययन सही है तो आपका भविष्य-कथन भी सही होगा, इसमें सन्देह नहीं।

रेखाओ द्वारा घटनाओं की तिथियाँ या स्थान तो नहीं बताया जा सकता,परन्तु हाँ, घटना होने का लगभग समय बताया जा सकता है। अनुभव के आधार पर इस समय को घटित घटना के ठीक पास मे लाया जा सकता है, और अधिक अभ्यास हो जाने के पश्चात् तो आप घटना के लिए जो एक-दो तारीख देंगे, लगभग वह घटना उसी तारीख को घटती हुई दृष्टिगोचर होगी। यही अध्ययन है, परिश्रम है, और फल-कथन की प्रामाणिक युक्ति है।

हाथ का अध्ययन करने से पूर्व रेखाओं का सही-सही परिचय प्राप्त कर लेना परमावश्यक होता है। प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में सात मुख्य रेखाएँ होती हैं, तथा बारह गौण रेखाएँ होती हैं। सात मुख्य रेखाएँ तथा बारह गौण रेखाएँ निम्न हैं—

मुख्य रेखाएँ—

१. जीवन रेखा (Life line)
२. मस्तिष्क रेखा (Head line)
३. हृदय रेखा (Heart line)
४. सूर्य रेखा (Sun line)
५. भाग्य या ऊर्ध्व रेखा (Fate line)
६. स्वास्थ्य रेखा (Health line)
७. विवाह रेखा (Marriage line)

इनके अतिरिक्त बारह गौण रेखाएँ निम्न हैं। यद्यपि ये गौण रेखाएँ कहलाती हैं, परन्तु हथेली में इनका महत्त्व कम नही होता।

१. गुरु वलय (Ring of Jupiter)
२. मंगल रेखा (Line of Mars)
३. शनि वलय (Ring of Saturn)
४. रवि वलय (Ring of Sun)
५. शुक्र वलय (Girdle of Venus)
६. चन्द्र रेखा (Line of Moon)
७. प्रतिभा-प्रभावक रेखा (Line of Influence)
८. यात्रा रेखा (Line of Journey)
९. संतति रेखा (Line of Child)
१०. मणिबन्ध रेखाएँ (Lines of Bracelet)
११. आकस्मिक रेखाएँ (Sudden lines)
१२. उच्चपद रेखाएँ (High class lines)

इन रेखाओं का अध्ययन भी भली प्रकार करना चाहिये। मुख्यतः रेखाएँ चार प्रकार की होती हैं—

१. मोटी रेखा—ये वे रेखाएँ होती हैं, जो गहरी और चौड़ाई लिये हुए होती हैं।

२. पतली रेखा—यह रेखा प्रारम्भ से लेकर अन्त तक एक-समान पतली होती है।

३. गहरी रेखा—ये रेखाएं पतली तो होती हैं, पर गहरी भी होती हैं, और माँस के अन्दर पहुँची हुई सी दिखाई देती हैं।

४. तलवां रेखा—यह रेखा प्रारम्भ में तो मोटी होती है, पर ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती जाती है, पतली होती जाती है। इसकी तुलना तलवार से की जा सकती है।

इसके साथ ही रेखाओं के बारे में निम्न जानकारी भी परमावश्यक है—

१. रेखाएँ साफ-सुथरी, स्पष्ट और ललाई लिये हुए होनी चाहिए; उनमें तोड़फोड़, द्वीप या खराबियाँ उनके फल में न्यूनता लाती हैं।

२. पीले रंग की रेखा हो तो स्वास्थ्य में कमी व्यक्त करती है। यह रेखा शक्ति की क्षीणता तथा निराशावादी भावना भी स्पष्ट करती है।

३. रक्तिम रेखाएँ व्यक्ति की स्वस्थ मनोवृत्ति को व्यक्त करती

हैं। ऐसा व्यक्ति चुस्त मस्तिष्क रखनेवाला, तथा दिमाग-सम्बन्धी कार्य करनेवाला होता है।

४. काली रेखाओं से दुःख, निराशा और बदला लेने की भावना स्पष्ट होती है।

५. मुरझाई हुई या सुस्त रेखाएँ शीघ्र ही भविष्य में आनेवाले खतरों की ओर संकेत करती हैं।

६. यदि किसी रेखा के साथ-साथ एक और रेखा जा रही हो तो उस रेखा को विशेष बल मिला समझना चाहिए।

७. यदि कोई टूटी हुई रेखा के पास भी सहायक रेखा दिखाई दे, तो उस रेखा का पूरा फल समझना चाहिए।

८. जीवन-रेखा के अतिरिक्त यदि कोई भी दूसरी लाइन अन्त में जाते-जाते दो भागों मे विभक्त हो जाती है, तो श्रेष्ठ फल मिलता है।

९. यदि कोई भी रेखा अन्तिम सिरे पर कई रेखाओं में बँटकर झबुआ-सा बना दे, तो यह उस लाइन के फल में न्यूनता का संकेत देती है।

१०. यदि किसी रेखा में से कोई शाखा निकलकर ऊपर की ओर जा रही हो तो इस प्रकार उस रेखा के फल में वृद्धि होती है!

११. यदि किसी रेखा मे से कोई शाखा निकलकर नीचे की ओर जा रही हो तो इस प्रकार फल में न्यूनता आती है।

१२. भोग-रेखा मे कोई सहायक रेखा ऊपर की ओर बढ़ रही हो तो शीघ्र विवाह होगा, परन्तु नीचे की ओर जा रही हो तो पत्नी की मृत्यु होगी, ऐसा समझना चाहिए।

१३. मस्तक-रेखा में से कोई शाखा ऊपर की ओर जा रही हो तो व्यक्ति कोई नवीन कार्य कर यशलाभ करेगा।

१४. जंजीरनुमा रेखा अशुभ होता है।

१५. भोग-रेखा यदि जंजीरनुमा हो तो प्रेम मे व्याघात पहुँचता है, अथवा प्रेम-विच्छेद हो जाता है।

१६. मस्तिष्क-रेखा जजीरनुमा हो तो व्यक्ति को अस्थिरचित-वाला तथा शंकालु समझना चाहिए।

१७. लहरियादार रेखा भी रेखा के फल में न्यूनता लाती है।

१८. टूटी हुई रेखा अशुभ फल ही देती है; उससे शुभ फल की आशा व्यर्थ है।

१६. अत्यन्त सूक्ष्म रेखा कमजोर कहलाती है तथा फल में भी क्षीणता लाती है।

२०. रेखाओं के मार्ग में यव अथवा द्वीप शुभ नहीं कहे जाते। इनसे अशुभ फल की ही प्राप्ति होती है।

२१. यदि रेखाओं के मार्ग में वर्ग अथवा आयत हों, तो ये चिह्न रेखा को शक्ति देते हैं, तथा फल में तीव्रता लाते हैं।

२२. किसी पर्वत पर आयत का होना उस पर्वत से उत्पन्न दुर्गुणों से बचाना होता है।

२३. रेखाओं के मार्ग में बिन्दु उस रेखा के कुप्रभाव को ही व्यक्त करते हैं।

२४. रेखा पर त्रिकोण का चिह्न शुभ फलदायी है। ऐसा चिह्न शीघ्र ही कार्य सम्पन्न करता है।

२५. रेखा पर आड़ी रेखाएँ कुप्रभाव पैदा करने में समर्थ होती हैं, तथा जीवन-श्रेष्ठता में न्यूनता ला देती हैं।

२६. रेखाओं पर नक्षत्रों की उपस्थिति कार्यसाधिका होती है, तथा कार्यसम्पन्नता में लाभ पहुँचाती है।

२७. रेखाओं का अध्ययन करते समय दोनों हाथ देखने चाहिए। यदि दोनों हाथों में अशुभ चिह्न हों तो बुरा फल कहना चाहिये, परन्तु यदि एक हाथ में अशुभ चिह्न या रेखा हो तथा दूसरे हाथ में न हों, तो उस अशुभता में पचास प्रतिशत की क्षीणता आ जाती है।

२८. मोटी रेखाएँ व्यक्ति की दुर्बलता तथा मानसिक कमजोरी की ओर संकेत करती हैं।

२९. पतली रेखाएँ व्यक्ति के जीवन में शुभ फल बढ़ानेवाली होती हैं।

३०. तलवार के समान ढलवाँ रेखाएँ परिश्रमी तथा क्रियाशील व्यक्ति के हाथों में पाई जाती हैं। ऐसे व्यक्ति दिमागी कार्यों की अपेक्षा शारीरिक श्रम करने में ज्यादा विश्वास करते हैं।

३१. गहरी रेखा चलते-चलते सहसा धुंधली या अस्पष्ट हो जाय

और आगे चलकर फिर स्पष्ट हो जाय, तो ऐसा धुंधलापन आकस्मिक दुर्घटना का संकेत देता है।

३२. रेखा का पतला, फिर मोटा, फिर पतला होना शुभ संकेत नहीं है। ऐसा व्यक्ति समय-समय पर धोखा खायेगा, ऐसा समझना चाहिए।

अतः रेखाओं के अध्ययन में काफी परिश्रम की जरूरत है, धीरे-धीरे प्रयास और अभ्यास से ही फल-कथन में परिपक्वता आयेगी।

६

रेखाओं के उद्गम-स्थान तथा परिचय

पिछले अध्याय में हमने रेखाएँ तथा उनका वर्गीकरण स्पष्ट किया। पर्वतों के अध्ययन के पश्चात् रेखाओं का क्रमबद्ध परिचय अत्यावश्यक है, क्योंकि हस्तसामुद्रिक शास्त्र भी एक क्रमबद्ध विज्ञान है, जिसका विधिवत् अध्ययन आवश्यक है।

गत पृष्ठों में हमने मुख्य सात रेखाएँ तथा बारह गौण रेखाएँ बताई थी। आगे की पंक्तियों में इन मुख्य तथा गौण रेखाओं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करेंगे, जिससे पाठकों को इन रेखाओं का विधिवत् ज्ञान हो सके।

१. जीवन-रेखा—इसे अंग्रेजी मे Life line तथा हिन्दी में पितृ-रेखा और आयु-रेखा भी कहते हैं। पूरी हथेली मे यह रेखा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि जीवन है तो सब-कुछ है, अन्यथा कुछ नहीं; अतः इस रेखा का परिचय सावधानीपूर्वक कर लेना आवश्यक है।

जीवन-रेखा बृहस्पति पर्वत के नीचे, हथेली के पार्श्व से उठकर तर्जनी और अंगूठे के बीच में से गमन करती हुई शुक्र-पर्वत को घेरती और मणिबन्ध तक जाकर विश्राम करती है। इसी रेखा से व्यक्ति की

रहस्य क्रास
बृहद् आयत
मानस रेखा
बृहद् त्रिकोण
बुध रेखा
शनि रेखा
जीवन रेखा

आयु, बीमारी, स्वास्थ्य आदि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

सभी व्यक्तियों के हाथों में यह रेखा एक-सी नहीं होती ; लम्बाई तथा चौड़ाई की न्यूनाधिक्यता के कारण यह रेखा शुक्र-पर्वत को भी विस्तार या सकीर्णता दे देती है। किसी-किसी व्यक्ति के हाथ मे यह अर्द्ध-गोलाकार तथा किसी के हाथ मे सीधी-सी होती है।

इस रेखा से व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन की मुख्य-मुख्य घटनाओं को स्पष्ट किया जा सकता है।

२. मस्तिष्क-रेखा—इसे अंग्रेजी में Head line तथा संस्कृत में मातृ-रेखा के नाम से पुकारा जाता है। हिन्दी में इस रेखा को मस्तक-रेखा, शीश-रेखा, बुद्धि-रेखा तथा प्रज्ञा-रेखा भी कहते हैं।

इस रेखा का निकास बृहस्पति-पर्वत के पास से, या बृहस्पति-पर्वत के ऊपर से ही होता है। अधिकांश हाथों मे जीवन-रेखा तथा मस्तिष्क-रेखा का मूल एक ही होता है, परन्तु कई हाथ ऐसे भी देखे गए हैं, जिनमें दोनों रेखाओं का उद्गम एक न होकर पास-पास हुआ है। यह रेखा हथेली को दो भागों मे विभक्त करती हुई-सी राहु और हर्शल क्षेत्रों को अलग-अलग बाँटती हुई बुध-क्षेत्र के नीचे तक चली जाती है।

इस रेखा की स्थिति विभिन्न हाथो में विभिन्न रूप से पाई जाती है। जिन व्यक्तियों का मस्तिष्क उर्वर होता है, या जिनका कार्य मस्तिष्क से ज्यादा होता है, उन व्यक्तियों के हाथों में यह रेखा लम्बी और गहरी होती है। शारीरिक श्रम करनेवाले या मजदूर वर्ग के हाथों में या तो यह रेखा धूमिल होती है, अथवा अस्पष्ट और ओछी। इस रेखा से व्यक्ति के मस्तिष्क और बुद्धि का सम्यक् ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

३. हृदय-रेखा—इस रेखा को अंग्रेजी में Heart line और भारत में आम बोलचाल की भाषा में विचार-रेखा या उर-रेखा कहते है। यह रेखा बुध-पर्वत के नीचे बुध तथा प्रजापति के क्षेत्रो को अलग-अलग करती हुई तर्जनी के नीचे या गुरु-पर्वत के नीचे तक जा पहुँचती है। लगभग सभी व्यक्तियों के हाथो में यह रेखा होती है, क्योंकि इसका सम्बन्ध सीधा हृदय से है। परन्तु मैंने कुछ हाथ ऐसे भी देखे है, जिनमें इस रेखा की बिल्कुल अनुपस्थिति थी। वस्तुतः भयकर डाकू तथा अपराधियो के हाथों मे यह रेखा नहीं भी होती है ; ऐसे व्यक्ति पूर्णतः

अमानवीय होते हैं।

इस रेखा की लम्बाई भी विभिन्न हाथों में विभिन्न होती है। किसी हाथ में यह तर्जनी तक, किसी मे मध्यमा तक, तो किसी मे प्रथमा उँगली के नीचे तक पहुँचती है ; किसी-किसी के हाथ में तो यह रेखा पूरे बृहस्पति-क्षेत्र को पार कर हथेली के छोर तक जा पहुँचती है, परन्तु इस प्रकार की लम्बी रेखा विरले लोगों के हाथों में ही होती है । हस्त-रेखा में रुचि रखनेवाले पाठकों को इतनी लम्बी रेखा देखकर घबराना नहीं चाहिये।

४. सूर्य-रेखा—अंग्रेजी भाषा में इसे Apollo, Brilliancy line, Sun line अथवा Line of Success कहते हैं, हिन्दी में इसे रवि-रेखा सूय-रेखा, विद्या-रेखा एवं प्रतिभा-रेखा भी कहते हैं। इस रेखा का उद्गम विभिन्न हाथों में विभिन्न स्थानों पर से होता है परन्तु एक बात जो सभी में समान होती है, वह है इस रेखा का अवसान, अर्थात् इस रेखा की समाप्ति सूर्य-पर्वत पर होती है । विद्यार्थियों को चाहिए कि वे सूर्य-रेखा के उद्गम के विभिन्न स्थानों को देखकर चक्कर में न पड़ें, अपितु इस रेखा का अवसान-स्थान ध्यान में रखना चाहिए।

५. भाग्य-रेखा—इसे प्रारब्ध-रेखा, भाग्य-रेखा और ऊर्ध्व-रेखा भी कहा जाता है । अंग्रेजी में इसे Line of fate कहा जाता है।

यह रेखा सभी व्यक्तियों के हाथों में नही पाई जाती, साथ ही यह रेखा सूर्य-रेखा की तरह विभिन्न स्थानों से निकलती है, परन्तु जब तक यह रेखा शनि-पर्वत पर नही जाती, तब तक यह भाग्य-रेखा कहलाने की हकदार नहीं है। कई हाथों में ऐसी रेखा सूर्य-पर्वत या बुध-पर्वत पर भी जाते देखी गई है, परन्तु ये रेखाएँ भाग्य-रेखा न कहलाकर सहायक रेखाएँ ही कही जाएँगी। वस्तुतः भाग्य-रेखा तभी बनती है, जब इसकी समाप्ति शनि-पर्वत पर होती है। हाँ, इसका विकास हथेली में नीचे से ऊपर की ओर होता है। कुछ हाथों में यह रेखा शुक्र-पर्वत से, कुछ में मणिबन्ध से, तो कुछ हाथों में यह मातृ-रेखा से ही निकलकर शनि-पर्वत की ओर जाती देखी गई है।

आधे से अधिक लोगों के हाथों मे यह रेखा नही भी होती है।

६. स्वास्थ्य-रेखा—इसे अंग्रेजी भाषा में Health line कहते हैं,

क्योंकि इसका सीधा सम्बन्ध व्यक्ति के स्वास्थ्य से होता है। इस रेखा के उद्गम-स्थल का कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं है। यह हथेली में ऊर्ध्व-मंगल से, हथेली के बीच से या जीवन-रेखा से, कहीं से भी प्रारम्भ हो सकती है, पर इस रेखा की समाप्ति बुध-पर्वत पर होती है, इसी से यह पहचानी जाती है। अधिकतर लोगों के हाथों में यह नहीं भी पाई जाती है। यह रेखा मोटी और बाल से भी पतली, दोनों ही रूपों में मिलती है, इसलिए इसका अध्ययन अत्यन्त सूक्ष्मता से करना चाहिये। इस रेखा की अनुपस्थिति या बिलकुल पतली होना व्यक्ति के लिए शुभकारी होता है।

७. विवाह-रेखा—इसे अंग्रेजी में *Marriage line* या *Love line* भी कहते हैं। यह बुध-पर्वत पर दिखाई देती है। हथेली के बाहरी भाग से बुध-पर्वत पर अन्दर की ओर आती हुई जो रेखा होती है, वही विवाह-रेखा कहलाती है। कई हाथों में ये रेखाएँ तीन-चार होती हैं, पर इसका यह अर्थ नहीं कि व्यक्ति के तीन-चार विवाह होंगे। हाँ, इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति के तीन-चार प्राणियों से प्रेम-सम्बन्ध रहेंगे। इन तीन-चार लाइनों में भी जो स्पष्ट और गहरी होती है, वही विवाह-रेखा कहलाती है।

कई बार अनुभव में आया है कि विवाह-रेखा स्पष्ट होते हुए भी व्यक्ति आजीवन कुंवारा रहता है। ऐसा तभी होता है, जब इस विवाह की रेखा को कोई आड़ी रेखा काटती हो, या विवाह-रेखा पर गहरा क्रॉस का चिह्न बना हो। विवाह-रेखा पर क्रॉस का चिह्न हो, तथा इसके साथ चलनेवाली रेखा छोटी-छोटी पर स्पष्ट हो, तो व्यक्ति के अनैतिक सम्बन्ध बने रहते हैं।

ऊपर हमने सात मुख्य रेखाओं का वर्णन किया है, अब आगे के पृष्ठों में गौण रेखाओं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है—

१. बृहस्पति-वलय—इसे बृहस्पति-मुद्रा, गुरु-मुद्रा या गुरु-रेखा भी कहते हैं। अंग्रेजी भाषा में इसका नामकरण Ring of Jupiter है। कुछ लोग इसे *Ring of Solemn* भी कहते हैं। यह तर्जनी उंगली के नीचे बृहस्पति-पर्वत पर, उसके पूरे क्षेत्र को घेरती हुई, तर्जनी उंगली के नीचे अर्द्ध-चन्द्राकार बनाती है, जो कि पहनी हुई अंगूठी के समान

सगती है, इसलिए इसे वृहस्पति-मुद्रा कहा जाता है।

२. मंगल-रेखा—इसे Line of Mars कहते हैं। यह रेखा अंगूठे के पास जीवन-रेखा के मूल उद्गम से निकलकर मंगल-क्षेत्र पर होती हुई शुक्र-पर्वत की ओर जाती है, परन्तु इसका उद्गम-स्थान निश्चित नहीं होता। किसी हाथ में यह जीवन-रेखा के बीच में से, तो किसी हाथ में जीवन-रेखा के समानान्तर भी चलती दिखाई देती है। शुक्र-क्षेत्र की ओर जाते समय यह रेखा जीवन-रेखा से दूर हटती जाती है।

३. शनि-वलय—इसे शनि-वलय, शनि-रेखा या शनि-मुद्रा भी कहा गया है, क्योंकि इसका प्रभाव-क्षेत्र शनि-पर्वत ही होता है। यह रेखा मध्यमा उंगली के मूल में शनि-पर्वत को घेरती हुई अपना एक छोर तर्जनी-मध्यमा के बीच में तो दूसरा छोर मध्यमा-अनामिका के बीच छोड़ती है। इस प्रकार से यह अंगूठी की तरह शनि-पर्वत को घेर लेती है, इसीलिए इसे Ring of Saturn कहते हैं। यह जिस किसी भी हाथ में पाई जाती है, इसी प्रकार से पाई जाती है।

४. रवि-वलय—यह सूर्य-मुद्रा या सूर्य-वलय भी कही जाती है। अंग्रेजी में इसे Ring of Sun कहते हैं। यह अनामिका उंगली के मूल में सूर्य-पर्वत को घेरती हुई-सी रेखा होती है, जो अर्द्ध-चन्द्राकार में सूर्य-पर्वत को घेरती है। इस रेखा का एक छोर मध्यमा-अनामिका के बीच तथा दूसरा छोर अनामिका-कनिष्ठिका के बीच रहता है। जिस किसी भी व्यक्ति के हाथ में यह रेखा होती है, बिल्कुल इसी प्रकार से होती है।

५. शुक्र-वलय—इसे भृगु-रेखा, शुक्र-रेखा या भृगु-वलय भी कहा जाता है। अंग्रेजी मे इसे Girdle of Venus कहते हैं। यह मुद्रा या वलय तर्जनी और मध्यमा उंगली के मध्य से प्रारम्भ होकर मध्यमा और अनामिका उंगली के मध्य तक पहुँचता है, इस प्रकार यह वलय शनि और सूर्य दोनों पर्वतों को एक-साथ घेरकर रहता है। कई हाथों मे यह वलय दोहरी रेखाओं से बनता है। इस वलय या मुद्रा का शुक्र-पर्वत से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। सम्भवतः इस मुद्रा के गुणों की वजह से ही इसे शुक्र-वलय के नाम से पुकारा जाता है।

६. <u>चन्द्र-रेखा</u>—इस रेखा का आकार धनुषवत् होता है, तथा

लहरीली रेखा	रेखाओं पर उपस्थित चिह्न	कटी हुई रेखा
सहायक रेखा	जजीर	द्विशाखी
बहु शाखी	घनी शाखाएं	ऊर्ध्व शाखाएं
निम्न शाखाएं	बिन्दु	वर्ग
नक्षत्र	क्रास	वृत्त
त्रिकोण	जाली	द्वीप या यव

यह चन्द्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर वरुण तथा प्रजापति-क्षेत्रों पर से होती हुई बुध-पर्वत तक पहुँचती है। यूँ यह रेखा पाँच प्रतिशत से अधिक लोगों के हाथों में देखने को नहीं मिलती।

७. प्रभावक-रेखा—इस रेखा को अंग्रेजी में Line of Influence कहते हैं, तथा यह जिस रेखा के साथ भी होती है, उस रेखा का प्रभाव कई गुना अधिक बढ़ा देती है। यह रेखा चन्द्र-क्षेत्र तथा वरुण-क्षेत्र के ऊपर से होकर भाग्य-रेखा तक पहुँच जाती है। यह कहीं-कहीं दुहरी तथा तिहरी भी दिखाई पड़ती है। कुछ हाथों में मैंने इसे शुक्र-पर्वत पर भी देखा है। यह रेखा विरले लोगों के हाथों में ही पाई जाती है।

८. यात्रा-रेखा—इसे अंग्रेजी भाषा में Travelling Lines कहते हैं। यह यात्रा स्थल, जल तथा वायु किसी भी मार्ग से हो सकती है, परन्तु इस रेखा पर भी निश्चित संकेत होते हैं, जिनसे यह ज्ञात किया जा सकता है कि यात्रा जल से होगी या वायुयान से, और होगी तो कब तथा किस दिशा में। यह रेखा चन्द्र-रेखा पर अथवा शुक्र-क्षेत्र से मंगल-क्षेत्र की ओर होती हुई राहु-केतु क्षेत्र को पार कर चन्द्र-पर्वत की ओर जाती दिखाई देती है। ये रेखाएँ किसी हाथ में मोटी, पर अधिकांश हाथों में बहुत पतली है।

९. संतति-रेखा—इन रेखाओं को Lines of children कहते है। ये रेखाएँ बुध-पर्वत के पार्श्व में विवाह-रेखा पर खड़ी लकीरों के रूप में होती हैं। ये रेखाएँ अत्यन्त विरल और सूक्ष्म होती हैं।

१०. मणिबन्ध रेखाएँ—ये प्रत्येक मनुष्य के हाथ में कलाई पर विद्यमान रहती है, परन्तु इन रेखाओं की संख्या सभी व्यक्तियों के हाथों में एक-सी नहीं होती। किसी व्यक्ति के हाथ में एक मणिबन्ध-रेखा, किसी के दो तो किसी के तीन-चार तक पाई जाती हैं।

११. आकस्मिक रेखाएँ—ये रेखाएँ स्थायी नहीं होती, अपितु अच्छे और बुरे समय को प्रदर्शित करने के लिए समय-समय पर बनती और बिगड़ती रहती हैं। जब इनका क्षणिक प्रभाव समाप्त हो जाता है, तो ये मिट भी जाती हैं। ये हथेली पर कहीं पर भी बनती और मिट जाती हैं।

१२. उच्चपद रेखा—यह रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर केतु-

क्षेत्र की ओर जाती दिखाई देती है। यदि यह रेखा स्पष्ट, गहरी और स्वस्थ होती है, तो व्यक्ति निश्चय ही उच्च प्रशासकीय पद प्राप्त करता है।

ऊपर हमने प्रधान तथा गौण रेखाओं का स्थान तथा उनका संक्षिप्त परिचय दिया, आगे के अध्याय मे इनमें से प्रत्येक का स्वतंत्र वर्णन तथा उनसे निष्पक्ष शुभाशुभ फल वर्णित किया जा रहा है।

७

जीवन-रेखा

जीवन-रेखा ही एक ऐसी रेखा है, जो प्रत्येक व्यक्ति की हथेली में निर्विवाद रूप से पाई जाती है। यदि अपवादस्वरूप किसी व्यक्ति की हथेली में यह न भी मिले, तो व्यक्ति सर्वथा अशक्त और जीवनी-शक्ति से शून्य ही होगा। ऐसे व्यक्ति का जीवन किसी भी समय समाप्त हो सकता है। इस रेखा को बल देने में मंगल रेखाएँ सहायक होती हैं, कभी-कभी शनि-रेखा भी इसकी सहायक होती देखी गई है। यह रेखा शुक्र-पर्वत को अपनी परिधि मे घेरती है, जो कि रक्तप्रवाह का सेतु है।

इसी रेखा से व्यक्ति की निश्चित आयु का पता लगता है, तथा जीवन में कब-कब कौन-कौन-सी दुर्घटनाएँ सम्भव हैं, इसके द्वारा जाना जा सकता है। इसी रेखा से मृत्यु का कारण, मृत्यु का हेतु, मृत्यु का समय और मृत्यु का स्थान ज्ञात किया जा सकता है।

यह रेखा व्यक्ति के जीवन और वेग को बताती है। यह रेखा बृहस्पति-पर्वत के नीचे से निकलती है, पर कभी-कभी इसे बृहस्पति-पर्वत पर से भी निकलते देखा गया है। इस रेखा के लिए यह ध्यान रखना जरूरी है कि शुक्र-पर्वत को घेरते समय यह रेखा जितना ही अधिक वृत्त बनाती है, उतना ही श्रेष्ठ है। यदि यह रेखा अंगूठे के

जीवन रेखा

१	२	३
४	५	६
७	८	९

पास से होकर वृत्त को संकीर्ण करती हुई मणिबन्ध की ओर चले, तो उस व्यक्ति में जीवट और सक्रियता की संकीर्णता ही समझनी चाहिये; यही नहीं, अपितु उस व्यक्ति के जीवन मे भोग, प्रेम, इच्छा, सुख, सौभाग्य आदि उत्तम गुणों का भी अभाव होगा, और उसका जीवन सकीर्ण मनोवृत्ति से आच्छन्न दुःखमय होगा। अंगूठे के पास से होकर जाने मे इसकी लम्बाई भी कम रह जाती है, अतः ऐसा व्यक्ति अल्पायु भी होगा, यह ध्यान में रखना चाहिए।

किसी भी रेखा के अध्ययन में चार बातों की ओर ध्यान देना जरूरी है : (१) रेखा का प्रारम्भ, (२) रेखा का अन्त, (३) रेखा पर पाये जानेवाले यव, द्वीप, तिल आदि, तथा (४) रेखा की गहराई, स्पष्टता, रग आदि।

इस दृष्टि से जीवन-रेखा जितनी गहरी, स्पष्ट और बिना टूटी हुई होगी उतनी ही वह अच्छी कही जाएगी तथा व्यक्ति की जीवनी शक्ति बढ़ी-चढ़ी होगी, उसका स्वास्थ्य उन्नत और हृदय में कोमल भावनाएँ स्थित होगी। इसके विपरीत यदि रेखा अस्पष्ट, कटी-फटी, धूमिल हो तो व्यक्ति भावना-शून्य होगा, तथा उसका जीवन दुर्घटनाओं से पूर्ण होगा। ऐसा व्यक्ति नाजुक-मिजाज, बात-बात पर क्रोधित होने वाला तथा अल्पायु होगा।

जीवन-रेखा जिन-जिन पर्वतों पर से होकर जाती है, उन-उन पर्वतों की स्थितियाँ देखकर बीमारी बताई जा सकती है तथा जिस स्थान से रेखा कटी हुई या धूमिल हो, उन वर्षों मे एक्सीडेंट अथवा बीमारी का योग हो, ऐसा समझना चाहिए।

यदि गुरु-पर्वत के नीचे जीवन-रेखा और मस्तिष्क-रेखा मिली हुई हो, तो यह शुभ चिह्न माना गया है। ये दोनों जितनी ही अधिक मिली हुई होती है, व्यक्ति उतना ही अधिक सतर्क, परिश्रमी और योजनाबद्ध कार्य करनेवाला होता है, परन्तु यदि ये दोनों रेखाएँ उद्गम-स्थल पर अलग-अलग हों तो व्यक्ति स्वतन्त्र कार्य करनेवाला, अपनी ही धुन में रहनेवाला तथा उन्मुक्त विचारों का स्वामी होता है। यदि किसी हाथ में जीवन-रेखा, मस्तिष्क-रेखा और हृदय-रेखा तीनों ही उद्गम-स्थल पर मिली हुई हों, तो यह एक दुर्भाग्यपूर्ण

जीवन रेखा
१०
११
१२
१३
१४
१५
महत्वपूर्ण
आयु-खंड

चिह्न है। ऐसे व्यक्ति की निस्सन्देह हत्या होती है।

जीवन-रेखा पर यदि आड़ी लकीरें हों, जो उसको काटती हों तो व्यक्ति का स्वास्थ्य उसका साथ नहीं देता। यदि आड़ी लकीरें मिलकर हृदय-रेखा, मानस-रेखा और जीवन-रेखा तीनों को मिलाकर एक त्रिभुज बना लें, तो व्यक्ति दमे और फेफड़ों का रोगी होता है। यदि जीवन-रेखा से फटकर कोई लहरियादार रेखा बुध-पर्वत की ओर जाती दिखाई दे, तो व्यक्ति कैंसर का मरीज होता है।

यदि जीवन-रेखा से कोई शाखा निकलकर गुरु-पर्वत की ओर जा रही हो तो व्यक्ति में बहुत अधिक महत्त्वाकांक्षाएँ होती हैं तथा उन्हें पूरा करने के लिए निरन्तर प्रयत्न करता रहता है। यदि जीवन-रेखा पर कई प्रशाखाएँ ऊपर की ओर उठती दृष्टिगोचर हों, तो व्यक्ति कर्मठ होता है, तथा साधारण घराने में भी जन्म लेकर श्रेष्ठ, धनी और योग्य पुरुष बनता है। ये प्रशाखाएँ जीवन-रेखा में जिस स्थान पर मिलें, वह स्थान या आयुखण्ड व्यक्ति के लिए सौभाग्यशाली होता है। आयु के उन वर्षों में व्यक्ति असाधारण कार्य कर ऊँचा उठता है।

जीवन-रेखा से निकलकर जो प्रशाखा जिस पर्वत की ओर बढ़ती है, उस पर्वत के विशेष गुण व्यक्ति में विशेष रूप से पाये जाते हैं।

यदि जीवन-रेखा प्रारम्भ से ही अपनी सहायक रेखा लेकर चल रही हो, तो ऐसा व्यक्ति महत्त्वपूर्ण, सोच-समझकर योजनाएँ बनानेवाला, तथा तदनुरूप अपने जीवन को ढालनेवाला, चतुर तथा कल्पनाशील होता है। ऐसे व्यक्ति के लिए इस जीवन में कुछ भी असंभव नहीं होता। यदि जीवन-रेखा उद्गम-स्थल से अकेली चली हो, और कुछ आगे चलकर उसके साथ सहायक रेखा चल पड़ी हो, तो जिस बिन्दु से सहायक रेखा प्रारम्भ हुई है, जीवन की उस आयु से व्यक्ति का भाग्योदय होगा, ऐसा समझना चाहिए।

जीवन-रेखा की अचानक समाप्ति व्यक्ति की आकस्मिक मृत्यु की ओर संकेत करती है। यदि जीवन-रेखा में से एक शाखा फूटकर चन्द्र पर्वत की ओर जा रही हो, तो व्यक्ति वृद्धावस्था मे पागल होगा या सन्निपात से ग्रस्त होगा। यदि जीवन-रेखा में शनि-रेखा आकर मिल रही हो तो व्यक्ति मननशील और तेजस्वी होगा। सूर्य-रेखा आकर मिल

रही हो तो व्यक्ति उच्चपदासीन होगा, बुध-रेखा आकर मिल रही हो तो व्यक्ति सफल व्यापारी, वक्ता और धनी होगा, और यदि मंगल-रेखा आकर मिल रही हो तो व्यक्ति सेना या पुलिस में श्रेष्ठ पद प्राप्त कर यशोवर्द्धक कार्य करेगा।

जीवन-रेखा का अन्तिम स्थल भी सावधानीपूर्वक देखना चाहिए। यदि जीवन-रेखा के अन्त में क्रॉस, नक्षत्र या बिन्दु हो तो व्यक्ति की मृत्यु अचानक होती है। यदि जीवन-रेखा अन्त तक जाते-जाते कई धाराओं में बँट जाय, तो व्यक्ति बुढ़ापे में क्षय रोग से पीड़ित होगा।

यदि जीवन-रेखा सफेद-सी हो तो व्यक्ति में निराशावादी भावना जरूरत से ज्यादा होती है, गुलाबी रंग की जीवन-रेखा स्वस्थता की परिचायक है, गहरी लाल रेखा शक्ति और सामर्थ्य की प्रतीक है तो पीली रेखाएँ विभिन्न बीमारियों को व्यक्त करती हैं, नीली रेखाओं से निर्मित जीवन-रेखा रक्त-संचार में दोष स्पष्ट करती है।

प्रभावक किरणें—ये किरणें बाल की तरह महीन और संख्या में अधिक होती हैं, जोकि या तो जीवन-रेखा से निकलती हैं, या शुक्र-पर्वत से प्रारम्भ होती हैं, अथवा दोनों ही स्थानों से निकलती हैं। यद्यपि ये रेखाएँ अधिक स्पष्ट नहीं होतीं, फिर भी इनका सूक्ष्म अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

शुक्र-पर्वत से आड़ी प्रभावक रेखाएँ यदि जीवन-रेखा की ओर जा रही हों, तो व्यक्ति का आकर्षण विपरीत योनि के सदस्यों के प्रति विशेष होता है, और ये प्रभावक रेखाएँ उसे सफलता भी प्रदान करती हैं। यदि ये रेखाएँ जीवन-रेखा को काटती हों, तो व्यक्ति कई महत्त्वाकांक्षाएँ पालता है, तथा उन्हें पूरी करने को सचेष्ट रहता है। यदि ये प्रभावक रेखाएँ शनि-पर्वत की ओर जा रही हों, तो व्यक्ति आकस्मिक दुर्घटनाओं का शिकार होता है। सूर्य-पर्वत पर ये रेखाएँ जा रही हों, तो भाग्योदय की सूचक हैं। बुध-पर्वत पर जाती हुई ये रेखाएँ व्यावसायिक सफलता की ओर संकेत करती हैं। निम्न मंगल की ओर बढ़ती हुई ये रेखाएँ वासना की दुर्दम्य लालसा को व्यक्त करती हैं।

जीवन-रेखा को काटती हुई ये प्रभावक रेखाएँ हों तो व्यक्ति

की उन्नति में बाधक उसके घरवाले और मित्र-रिश्तेदार ही होते हैं। जीवन-रेखा को काटती हुई यदि ये रेखाएँ हृदय-रेखा तक पहुँच जायें तो व्यक्ति का वैवाहिक जीवन असन्तुलित हो जाता है। यदि इन रेखाओ के मार्ग में एक या कई द्वीप हों, तो व्यक्ति को प्रेम के क्षेत्र में अपमान सहन करना पड़ता है। यदि प्रभावक रेखाएँ सूर्य-रेखा को काट दें, तो व्यक्ति की प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचता है। यदि ये रेखाएँ विवाह-रेखा को काट दें तो व्यक्ति तलाक देता है, या जीवन-भर मनमुटाव बना रहता है।

मणिबंध रेखाएँ—कलाई पर दो, तीन या चार वृत्ताकार रेखाएँ दिखाई देती हैं। यदि ये रेखाएँ स्पष्ट, गहरी और सुडौल हों, तो व्यक्ति को यश, मान, पद, प्रतिष्ठा आदि सहज सुलभ होते हैं। परन्तु यदि कटी-फटी मणिबंध-रेखा हो तो व्यक्ति की प्रगति रुक जाती है, तथा उसे काफी संघर्षों का सामना करना पड़ता है।

मणिबंध से यदि कुछ रेखाएँ चन्द्र-पर्वत की ओर जाती दिखाई दें, तो वे रेखाएँ यात्रा-रेखाएँ कहलाती हैं। ये रेखाएँ जितनी लम्बी होंगी, व्यक्ति की यात्राएँ भी उतनी ही लम्बी और काफी होंगी। यदि कोई रेखा मणिबंध से निकलकर चन्द्र-पर्वत पर से होती हुई शनि-क्षेत्र की ओर जावे तो व्यक्ति की मृत्यु यात्राकाल मे ही हो जाती है। यदि ऐसी रेखा सूर्य-क्षेत्र की ओर जावे तो उच्च पद तथा प्रतिष्ठा मिलती है, तथा यदि ऐसी रेखा बुध-पर्वत की ओर जाती हो तो व्यक्ति को आकस्मिक द्रव्यलाभ होता है।

मंगल-रेखा—निम्न मंगलीय पर्वत से निकलकर जो जीवन-रेखा के समानान्तर चलती है, वह मंगल-रेखा कहलाती है। यदि यह रेखा स्पष्ट होकर जीवन-रेखा के साथ-साथ जाती हो, तो जीवन-रेखा को बल मिलता है तथा उसका जीवन धनी, प्रतिष्ठायुक्त तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

मंगल-रेखा गुरु-पर्वत की ओर जा रही हो, तो व्यक्ति कई महत्त्वाकांक्षाएँ रखता है, तथा उन्हें पूरी करने को प्रयत्नशील रहता है। यदि मंगल-रेखा भाग्य-रेखा से मिले तो सफलता का चिह्न समझना चाहिए। चन्द्र-पर्वत की ओर जाती हुई मंगल-रेखा व्यक्ति

को यात्रा-प्रिय बना देती है।

मगल-रेखा दो, तीन अथवा चार हो सकती हैं।

जीवन-रेखा पर कुछ और विचार

१. यदि किसी व्यक्ति के हाथ में जीवन-रेखा आद्योपान्त लहरदर होकर चल रही हो तो व्यक्ति वंश-परम्परागत रोग से पीड़ित होगा तथा जीवन-भर चिन्तातुर रहेगा।

२. यदि जीवन-रेखा प्रारम्भिक स्थल पर द्विजिह्वी अथवा बहुजिह्वी बन रही हो, तो व्यक्ति उदर रोग से पीड़ित रहता है।

३. जीवन-रेखा जञ्जीरदार हो या उसपर त्रिभुज का चिह्न हो तो व्यक्ति अपने परिवार से जीवन-भर परेशान रहता है।

४. यदि जीवन-रेखा के प्रारम्भ मे ही दो या तीन द्वीप-चिह्न हों तो उस व्यक्ति को वर्णसंकर समझना चाहिए।

५. यदि जीवन-रेखा अन्त मे द्विजिह्वी अथवा बहुजिह्वी बन गई हो तो व्यक्ति विदेश-यात्रा करनेवाला होता है, तथा उसका भाग्योदय विदेश मे ही होता है।

६. यदि जीवन-रेखा के अन्त में मत्स्याकार चिह्न हो, तो व्यक्ति की मृत्यु पानी में डूबने से होती है।

७. यदि जीवन रेखा आगे बढ़ती हुई रुककर शुक्र-क्षेत्र पर अंकुश के चिह्न-सी हो जाय, तो उस व्यक्ति की मृत्यु उसकी प्रेयसी के हाथों होती है।

८. यदि जीवन-रेखा पर काले, लाल या श्वेत तिल के चिह्न हों, तो व्यक्ति उदर रोग से ग्रसित होकर अपव्ययी बनता है।

९. पितृ-रेखा या जीवन-रेखा के आधार पर त्रिभुज का चिह्न बन जाय तो व्यक्ति विलासी तथा कामुक होता है।

१०. यदि जीवन-रेखा पर कोई तारे का चिह्न हो तो वह व्यक्ति को अपयश दिलाने में सहायक होता है।

११. जीवन-रेखा यदि टुकड़े-टुकड़े की स्थिति में हो, पर उसके पास ही कोई सबल सहायक रेखा हो, तो व्यक्ति बाल्यावस्था में कष्ट भोगता है, परन्तु यौवन-काल में सुखी होता है।

१२. गहरी, पुष्ट, स्पष्ट, रक्तिम और सहायक रेखा लेकर चलनेवाली जीवन-रेखा श्रेष्ठ एवं उत्तम फल देनेवाली मानी गई है।

८

मस्तिष्क-रेखा

यदि वास्तव में देखा जाय, तो जीवन और मस्तिष्क का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है, क्योंकि बिना मस्तिष्क या बुद्धि के जीवन व्यर्थ है। जीवन मे यश, मान, पद, प्रतिष्ठा आदि का आधार मस्तिष्क ही होता है, जिनसे जीवन सानन्द व्यतीत होता है; अतः जीवन रेखा के पश्चात् मस्तिष्क-रेखा का विवेचन युक्तिसंगत ही है।

हस्तरेखा-विशेषज्ञों के अनुसार मस्तिष्क-रेखा का स्वस्थ, पुष्ट और गहरी होना परमावश्यक है, क्योंकि यदि मस्तिष्क-रेखा में जरा भी विकृत होती है, तो वह दिमाग को प्रभावित करती है, और विकृत मस्तिष्क पूरे जीवन को चौपट कर देता है।

मैंने अपने जीवन में हजारों नहीं, लाखों हाथ देखे हैं और उन्हें समझा है। इसके आधार पर मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि मस्तिष्क-रेखा के उद्गम-स्थान का कोई निश्चित नहीं है, अपितु अलग-अलग स्थानों से इसका प्रारम्भ होता है। इन अलग-अलग स्थानो से प्रारम्भ ही इसके फलादेश में विभिन्नता लाता है। इसकेस्थल निम्नरूपेण पाये गये हैं—

१. जीवन-रेखा के उद्गम से निकल, जीवन-रेखा ही को काटती हुई और प्लूटो पर्वतो को अलग-अलग करती हुई हथेली के दूसरे छोर पर पहुँच जाती है।

२. जीवन-रेखा के उद्गम-स्थल के पास से निकल हथेली के बीच में जाकर समाप्त हो जाय।

जीवन रेखा

१०	११
१२	१३
१४	१५
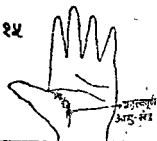
और योजनाबद्ध कार्य करने वाला होता है, परन्तु यदि ये दोनों रेखाएँ उद्गम-स्थल पर अलग-अलग हों तो व्यक्ति स्वतंत्र कार्य करने वाला, अपनी ही धुन में रहने वाला तथा उन्मुक्त विचारों का का स्वामी होता है। यदि किसी हाथ में जीवन-रेखा, मस्तिष्क-रेखा और हृदय-रेखा तीनों ही उद्गम-स्थल पर मिली हुई हों, तो यह एक दुर्भाग्यपूर्ण चिह्न है। ऐसे व्यक्ति की निस्सन्देह हत्या होती है।

जीवन-रेखा पर यदि आड़ी लकीरें हों, जो उसको काटती हों तो व्यक्ति का स्वास्थ्य उसका साथ नहीं देता। यदि आड़ी लकीरें मिलकर हृदय-रेखा, मानस-रेखा और जीवन-रेखा तीनों को मिलाकर एक त्रिभुज बना लें, तो व्यक्ति दमे और फेफड़ों का रोगी होता है। यदि जीवन-रेखा से फटकर कोई लहरियादार रेखा बुध-पर्वत की ओर जाती दिखाई दे, तो व्यक्ति कैंसर का मरीज होता है।

यदि जीवन-रेखा से कोई शाखा निकलकर गुरु-पर्वत की ओर जा रही हो तो व्यक्ति में बहुत अधिक महत्त्वाकांक्षाएँ होती हैं तथा उन्हें पूरा करने के लिए निरन्तर प्रयत्न करता रहता है। यदि जीवन-रेखा पर कई प्रशाखाएँ ऊपर की ओर उठती दृष्टिगोचर हों, तो व्यक्ति कर्मठ होता है, तथा साधारण घराने में भी जन्म लेकर श्रेष्ठ, धनी और योग्य पुरुष बनता है। ये प्रशाखाएं जीवन-रेखा में जिस स्थान पर मिलें, वह स्थान या आयुखण्ड व्यक्ति के लिए सौभाग्यशाली होता है। आयु के उन वर्षों में व्यक्ति असाधारण कार्य कर ऊँचा उठता है।

जीवन-रेखा से निकलकर जो प्रशाखा जिस पर्वत की ओर बढ़ती है, उस पर्वत के विशेष गुण व्यक्ति में विशेषरूप से पाये जाते हैं।

यदि जीवन-रेखा प्रारम्भ से ही अपनी सहायक-रेखा लेकर चल रही हो, तो ऐसा व्यक्ति महत्त्वपूर्ण, सोच-समझकर योजनाएँ बनाने वाला, तथा तदनुरूप अपने जीवन को ढालने वाला, चतुर तथा कल्पनाशील होता है। ऐसे व्यक्ति के लिए इस जीवन में कुछ भी

असंभव नहीं होता। यदि जीवन-रेखा उद्गम-स्थल से अकेली चली हो, और कुछ आगे चलकर उसके साथ सहायक रेखा चल पड़ी हो, तो जिस बिन्दु से सहायक रेखा प्रारम्भ हुई है, जीवन की उस आयु में व्यक्ति का भाग्योदय होगा, ऐसा समझना चाहिए।

जीवन-रेखा की अचानक समाप्ति व्यक्ति की आकस्मिक मृत्यु की ओर संकेत करती है। यदि जीवन-रेखा में से एक शाखा फूटकर चन्द्र-पर्वत की ओर जा रही हो, तो व्यक्ति वृद्धावस्था में पागल होगा या सन्निपात से ग्रस्त होगा। यदि जीवन-रेखा में शनि-रेखा आकर मिल रही हो तो व्यक्ति मननशील और तेजस्वी होगा। सूर्य-रेखा आकर मिल रही हो तो व्यक्ति उच्चपदासीन होगा, बुध-रेखा आकर मिल रही हो तो व्यक्ति सफल व्यापारी, वक्ता और धनी होगा, और यदि मंगल-रेखा आकर मिल रही हो तो व्यक्ति सेना या पुलिस में श्रेष्ठ पद प्राप्त कर यशोवर्द्धक कार्य करेगा।

जीवन-रेखा का अन्तिम स्थल भी सावधानीपूर्वक देखना चाहिए। यदि जीवन-रेखा के अन्त में क्रॉस, नक्षत्र या बिन्दु हो तो व्यक्ति की मृत्यु अचानक होती है। यदि जीवन-रेखा अन्त तक जाते-जाते कई धाराओं में बँट जाय, तो व्यक्ति बुढ़ापे में क्षय रोग से पीड़ित होगा।

यदि जीवन-रेखा सफेद-सी हो तो व्यक्ति में निराशावादी भावना जरूरत से ज्यादा होती है, गुलाबी रंग की जीवन-रेखा स्वस्थता की परिचायक है, गहरी लाल रेखा शक्ति और सामर्थ्य की प्रतीक है तो पीली रेखाएँ विभिन्न बीमारियों को व्यक्त करती हैं, नीली रेखाओं से निर्मित जीवन-रेखा रक्त-सञ्चालन में दोष स्पष्ट करती है।

प्रभावक किरणें—ये किरणें बाल की तरह महीन और संख्या में अधिक होती हैं, जोकि या तो जीवन-रेखा से निकलती हैं, या शुक्र-पर्वत से प्रारम्भ होती हैं, अथवा दोनों ही स्थानों से निकलती हैं। यद्यपि ये रेखाएँ अधिक स्पष्ट नहीं होतीं, फिर भी इनका सूक्ष्म

अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

शुक्र-पर्वत से आड़ी प्रभावक रेखाएं यदि जीवन-रेखा की ओर जा रही हों, तो व्यक्ति का आकर्षण विपरीत योनि के सदस्यों के प्रति विशेष होता है, और ये प्रभावक रेखाएं उसे सफलता भी प्रदान करती हैं। यदि ये रेखाएँ जीवन-रेखा को काटती हों, तो व्यक्ति कई महत्वाकांक्षाएँ पालता है, तथा उन्हें पूरी करने को सचेष्ट रहता है। यदि ये प्रभावक रेखाएं शनि-पर्वत की ओर जा रही हों, तो व्यक्ति आकस्मिक दुर्घटनाओं का शिकार होता है। सूर्य-पर्वत पर ये रेखाएँ जा रही हों, तो भाग्योदय की सूचक हैं। बुध-पर्वत पर जाती हुई ये रेखाएँ व्यावसायिक सफलता की ओर संकेत करती हैं। निम्न मंगल की ओर बढ़ती हुई ये रेखाएँ वासना की दुर्दम्य लालसा को व्यक्त करती हैं।

जीवन-रेखा को काटती हुई ये प्रभावक रेखाएँ हों तो व्यक्ति की उन्नति में बाधक उसके घरवाले और रिश्तेदार ही होते हैं। जीवन-रेखा को काटती हुई यदि ये रेखाएँ हृदय-रेखा तक पहुँच जायँ तो व्यक्ति का वैवाहिक जीवन असन्तुलित हो जाता है। यदि इन रेखाओं के मार्ग में एक या कई द्वीप हों, तो व्यक्ति को प्रेम के क्षेत्र में अपमान सहन करना पड़ता है। यदि प्रभावक रेखाएँ सूर्य-रेखा को काट दें, तो व्यक्ति की प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचता है। यदि ये रेखाएँ विवाह-रेखा को काट दें तो व्यक्ति तलाक देता है, या जीवनभर मनमुटाव बना रहता है।

मणिबंध रेखाएँ—कलाई पर दो, तीन या चार वृत्ताकार रेखाएँ दिखाई देती हैं। यदि ये रेखाएँ स्पष्ट गहरी और सुडौल हों, तो व्यक्ति को यश, मान, पद, प्रतिष्ठा आदि सहज सुलभ होते हैं। परन्तु यदि कटी-फटी मणिबंध-रेखा हो तो व्यक्ति की प्रगति रुक जाती है, तथा उसे काफी संघर्षों का सामना करना पड़ता है।

मणिबंध से यदि कुछ रेखाएँ चन्द्र-पर्वत की ओर जाती दिखाई दें, तो रेखाए यात्रा-रेखाएँ कहलाती हैं। ये रेखाएँ जितनी लम्बी

होंगी, व्यक्ति की यात्राएँ भी उतनी ही लम्बी और कोफी होंगी। यदि कोई रेखा मणिबंध से निकलकर चन्द्र-पर्वत पर से होती हुई शनि-क्षेत्र की ओर जावे तो व्यक्ति की मृत्यु यात्राकाल में ही हो जाती है। यदि ऐसी रेखा सूर्य-क्षेत्र की ओर जावे तो उच्च पद तथा प्रतिष्ठा मिलती है, तथा यदि ऐसी रेखा बुध-पर्वत की ओर जाती हो तो व्यक्ति को आकस्मिक द्रव्यलाभ होता है।

मंगल रेखा—निम्न मंगलीय पर्वत से निकलकर जो जीवन-रेखा के समानान्तर चलती है, वह मंगल-रेखा कहलाती है। यदि यह रेखा स्पष्ट होकर जीवन-रेखा के साथ-साथ जाती है, तो जीवन-रेखा को बल मिलता है तथा उसका जीवन धनी, प्रतिष्ठायुक्त तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

मंगल-रेखा गुरु-पर्वत की ओर जा रही हो, तो व्यक्ति कई महत्वाकांक्षाएँ रखता है, तथा उन्हें पूरी करने को प्रयत्नशील रहता है। यदि मंगल-रेखा भाग्य-रेखा से मिले तो सफलता का चिह्न समझना चाहिए। चन्द्र-पर्वत की ओर जाती हुई मंगल-रेखा व्यक्ति को यात्रा-प्रिय बना देती है।

मंगल-रेखा दो-तीन अथवा चार हो सकती है।

जीवन-रेखा पर कुछ और विचार—

१. यदि किसी व्यक्ति के हाथ में जीवन-रेखा आद्योपान्त लहरदार होकर चल रही हो तो व्यक्ति वंश-परम्परागत रोग से पीड़ित होगा तथा जीवनभर चिन्तातुर रहेगा।

२. यदि जीवन-रेखा प्रारम्भिक स्थल पर द्विजिह्वी अथवा बहुजिह्वी बन रही हो, तो व्यक्ति उदर रोग से पीड़ित रहता है।

३. जीवन-रेखा जंजीरदार हो या उस पर त्रिभुज का चिह्न हो तो व्यक्ति अपने परिवार से जीवनभर परेशान रहता है।

४. यदि जीवन-रेखा के प्रारम्भ में ही दो या तीन द्वीप-चिह्न हों तो उस व्यक्ति को वर्णसंकर समझना चाहिए।

५. यदि जीवन-रेखा अन्त में द्विजिह्वी अथवा बहुजिह्वी बन

गई हो तो व्यक्ति विदेश-यात्रा करने वाला होता है, तथा उसका भाग्योदय विदेश मे ही होती है।

६. यदि जीवन-रेखा के अन्त में मत्स्याकार चिह्न हो, तो व्यक्ति की मृत्यु पानी में डूबने से होता है।

७. यदि जीवन-रेखा आगे बढती हुई रुककर शुक्र-क्षेत्र पर अकुश के चिह्न-सी हो जाय, तो व्यक्ति की मृत्यु उसकी प्रेयसी के हाथों होती है।

८. यदि जीवन-रेखा पर काले, लाल या श्वेत तिल के चिह्न हों तो व्यक्ति उदर रोग से ग्रसित होकर अपव्ययी बनता है।

९. पितृ-रेखा या जीवन-रेखा के आधार पर त्रिभुज का चिह्न बन जाय तो व्यक्ति विलासी तथा कामुक होता है।

१०. यदि जीवन-रेखा पर कोई तारे का चिह्न हो तो वह व्यक्ति को अपयश दिलाने में सहायक होता है।

११. जीवन-रेखा यदि टुकडे-टुकड़े की स्थिति मे हो, पर उसके पास ही कोई सबल सहायक रेखा हो, तो व्यक्ति बाल्यावस्था में कष्ट भोगता है, परन्तु यौवन-काल मे सुखी होता है।

१२. गहरी, पुष्ट, स्पष्ट, रक्तिम और सहायक रेखा लेकर चलने वाली जीवन-रेखा श्रेष्ठ एव उत्तम फल देने वाली मानी गई है।

८

मस्तिष्क-रेखा

यदि वास्तव में देखा जाय, तो जीवन और मस्तिष्क का आपस में घनिष्ठ संबध है, क्योंकि बिना मस्तिष्क या बुद्धि के जीवन व्यर्थ है। जीवन मे यश, मान, पद, प्रतिष्ठा आदि का आधार

मस्तिष्क ही होता है, जिससे जीवन आनन्द स्वनीन होता है, अतः जीवन-रेखा के पश्चात् मस्तिष्क-रेखा का विवेचन युक्तिसगत ही है।

हस्तरेखा-विशेषज्ञों के अनुसार मस्तिष्क-रेखा का स्वस्थ, पुष्ट और गहरी होना परमावश्यक है, क्योंकि यदि मस्तिष्क-रेखा में जरा भी विकृति होती है, तो वह दिमाग को प्रभावित करती है, और विकृत मस्तिष्क पूरे जीवन को चौपट कर देता है।

मैंने अपने जीवन में हजारों नहीं, लाखों हाथ देखे हैं और उन्हें समझा है। इसके आधार पर मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि मस्तिष्क-रेखा के उद्‌गम-स्थान का कोई निश्चित नहीं है, अपितु अलग-अलग स्थानों से इसका प्रारंभ होता है। इन अलग-अलग स्थानों से प्रारभ ही इसके फलादेश में विभिन्नता लाता है। इसके स्थल निम्नरूपेण पाये गये हैं—

१. जीवन-रेखा के उद्‌गम से निकल, जीवन-रेखा ही को काटती हुई राहु और प्लूटो पर्वतों को अलग-अलग करती हुई हथेली के दूसरे छोर पर पहुँच जाती है।

२. जीवन-रेखा के उद्‌गम-स्थल के पास से निकल हथेली के बीच में जाकर समाप्त हो जाय।

३. जीवन-रेखा के समानान्तर चलती हुई काफी आगे जाकर रास्ता बदल दे।

४. जीवन-रेखा के पास से स्पष्ट रूप से हथेली को दो भागों में विभक्त करती हुई दूसरे छोर पर पहुँच जाय।

५. मस्तिष्क-रेखा और हृदय-रेखा एक ही हो, या आपस में लिपटती हुई-सी चलती हो। जहाँ मस्तिष्क-रेखा और हृदय-रेखा एक ही हो, वहाँ उस रेखा को मस्तिष्क-रेखा ही मानना चाहिए, क्योंकि हृदय-रेखा अनुपस्थित हो सकती है, मस्तिष्क-रेखा नहीं।

ऊपर मस्तिष्क-रेखा के विकसित होने के पाँच प्रकार बताये, अब हम इनमें से प्रत्येक का संक्षिप्त फलादेश स्पष्ट करेंगे।

पहला प्रकार -प्रथम प्रकार की मस्तिष्क-रेखा जिसके हाथ में

हो, वह शुभ नहीं होती, क्योंकि जीवन-रेखा को काटना व्यक्ति के जीवन में दुर्घटना का संकेत है। ऐसा व्यक्ति मानसिक रूप से रुग्ण तथा दुर्बल होता है। वह जरा-जरा-सी बात पर उफन पड़ता है, तथा अदूरदर्शिता के कारण अपना ही अहित कर बैठता है। उनके जीवन में मित्रों की संख्या कम होती है। यद्यपि वह दुश्मनों से बदला लेने की भावना में जलता रहता है, परन्तु उसमें इतनी योग्यता भी नहीं होती कि वह बदला ले सके। ऐसा व्यक्ति मंदा, अदूरदर्शी तथा तुनकमिजाजी होता है।

दूसरा प्रकार—दूसरे प्रकार की मस्तिष्क-रेखा श्रेष्ठ मानी गई है। यदि यह रेखा टेढ़ी-मेढ़ी, लहरदार, जंजीरदार, छिन्न-भिन्न या हल्की न हो, तो ऐसी रेखा व्यक्ति को जीवन में महत्त्वपूर्ण पद प्रदान करती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान्, अपने विचारों तथा कार्यों में सामंजस्य रखने वाला, शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता रखने वाला तथा अवसर को भली प्रकार पहचानने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति कुशाग्रबुद्धि होता है, तथा बाल की खाल निकालने में सिद्धहस्त होता है। समुद्री यात्रा का भी संबंध इसी रेखा से होता है।

तीसरा प्रकार—यदि मस्तिष्क-रेखा काफी समय तक जीवन-रेखा के समानान्तर चले, और फिर रास्ता बदलकर हथेली के पार जाने का प्रयत्न करे, तो ऐसा व्यक्ति प्रबल आत्मविश्वासी होता है। वह प्रत्येक बात के मर्म तक शीघ्रता से पैठता है और अपना कार्य निकालने में चतुर होता है। जीवन में वह एक से अधिक कलाएँ जानता है, तथा धन कमाने में सिद्धहस्त होता है। एक बात, जो इनमें कमी पाई जाती है, वह है यदा-कदा अपने-आप में हीन भावना का उदय। इस हीन भावना के कारण वह उन्नति करते-करते रुक जाता है। उसके परिचितों की संख्या में न्यूनता आने लगती है, तथा अधिकतर एकान्तप्रिय हो जाता है।

चौथा प्रकार—ऐसा व्यक्ति जीवन में प्रबल भाग्यशाली होता है, तथा आकस्मिक द्रव्य-प्राप्ति के योग इसके जीवन में कई बार आते

है। यदि यह रेखा निर्दोष, गहरी और स्पष्ट हो तो विदेश-यात्रा-योग बनता है। एक बार जयपुर सेक्रेटेरियट में एक साधारण-से सेक्शन-ऑफिसर के हाथ में मैंने इस प्रकार की रेखा देखकर कहा था कि निकट भविष्य में तुम विदेश-यात्रा करोगे और लखपति बनोगे, तो वह अवश से हँस पड़ा था। मैंने पाँच महीने के भीतर-ही-भीतर ऐसा योग घटित होने का कहा, तो उस सेक्शन के सभी लोग हँस पड़े थे; पर मैं अपने विचारों पर दृढ़ था। परिस्थितियाँ उसकी विदेश क्या, बंबई तक जाने की भी नहीं थी। कर्ज में वह इतना डूबा हुआ था कि लखपति बनने की सोचना भी उसके लिए कठिन था।

पर बात सत्य घटित हुई। लगभग चार महीनों बाद ही एक प्राइवेट फर्म की उच्च नौकरी पाकर वह फर्म की ओर से अमेरिका गया और संयोगवश वहीं उसका विवाह हो गया, जिसके फल-स्वरूप कई लाख रुपये उसके हाथ लगे, और आज वह एक सफल व्यापारी है, तथा लाखों-करोड़ों में खेल रहा है।

कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसी रेखा निश्चित ही अपना प्रभाव समय आने पर बतलाती है।

पाँचवाँ प्रकार—इस प्रकार की मस्तिष्क-रेखा बहुत ही कम हाथों में देखने को मिलती है, पर जिन हाथों में इस प्रकार की रेखा होती है, वे भावनाशून्य होते हैं। ऐसे व्यक्तियों के पास हृदय नाम की कोई वस्तु नहीं होती। अपराधी लोगों में ऐसी रेखा देखने को मिल जाती है।

यदि मात्र मस्तिष्क-रेखा ही हो, हृदय-रेखा हो ही नहीं, या दोनों परस्पर लिपट गई हों, और अंगूठा छोटा तथा गोल हो, तो व्यक्ति जीवन में कई हत्यायें करता है, तथा भयंकर डाकू या अन्तर्राष्ट्रीय लुटेरा बनता है।

कुछ प्रमुख तथ्य मस्तिष्क-रेखा तथा उसके फलाफल को समझने के लिए निम्न तथ्यों को ध्यान में रखना भी जरूरी है

(१) यदि मस्तिष्क-रेखा गुरु-पर्वत से प्रारम्भ हो, या मस्तिष्क-

मस्तिष्क रेखा

१	२	३
४	५	६
७	८	९

रेखा से कोई प्रशाखा निकलकर गुरु-पर्वत की ओर जा रही हो, तो व्यक्ति-कर्मठ, योग्य, बुद्धिमान्, योजनाबद्ध कार्य करने वाला तथा उच्च पदों से भूषित होता है।

(२) सीधी और स्पष्ट मस्तिष्क-रेखा दिमाग के व्यवस्थित होने का संकेत देती है। इस प्रकार के व्यक्ति के दिमाग में कोई उलझन नहीं होती; वह शीघ्र और सही निर्णय लेने की क्षमता रखने वाला होता है।

(३) यदि उद्गम-स्थल पर मस्तिष्क-रेखा तथा जीवन-रेखा अलग-अलग निकलती हों, यानी दोनों का उद्गम-स्थल एक न हो तो व्यक्ति स्वेच्छाचारी तथा स्वतंत्र प्रकृतिप्रिय हो जाता है; न तो वह किसी की सुनता है तथा न किसी को अपने कार्यों में दखल देने देता है। स्त्रियों के हाथ मे इस प्रकार की स्थिति कुलटा बनाने में सहायक होती है।

(४) यदि मस्तिष्क-रेखा से कोई प्रशाखा निकलकर गुरु-पर्वत के मूल तक पहुँच जाती है, तो व्यक्ति श्रेष्ठ व्याख्याता, कलाकार या साहित्यकार होता है। अपने लेखन से वह प्रसिद्धि प्राप्त करता है, तथा ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने मे समर्थ होता है; परन्तु ऐसे व्यक्ति अहंकारी तथा दूसरों को नगण्य समझने वाले भी होते हैं।

(५) यदि मस्तिष्क-रेखा हथेली के बीच तक जाकर नीचे की ओर झुकाव करती हुई रुक जाती है, तो व्यक्ति धनलोलुप बन जाता है; धन ही एकमात्र उसका ईश्वर होता है। ऐसा व्यक्ति भोगी, कामी तथा वैभवमय जीवन बिताने वाला होता है।

(६) यदि मस्तिष्क-रेखा आगे चलकर हृदय-रेखा को छू ले तो व्यक्ति कई प्रेमिकाएँ रखने वाला होता है; परन्तु उसका प्रेम खंडित होता रहता है, जिससे उसका हृदय छिन्न-भिन्न हो जाता है। यदि यह रेखा हृदय-रेखा से काफी दूरी तक लिपटती जाय, तो ऐसा व्यक्ति क्रोधातिरेक में प्रेमिका की हत्या कर बैठता है।

(७) मस्तिष्क-रेखा का झुकाव जिस पर्वत की ओर होता है, उस पर्वत के विशेष गुण व्यक्ति में प्रबल रूप से पाये जाते हैं। गुरु के पर्वत पर रेखा का झुकाव व्यक्ति को पंडित, तत्वज्ञानी, साहित्यकार और मनोवैज्ञानिक बना देता है। शनि-पर्वत पर झुकने से व्यक्ति अध्ययनशील तथा चिन्तक बन जाता है। सूर्य-पर्वत की ओर झुकने से व्यक्ति उच्चपद प्राप्त करने तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने में सफल होता है, तथा बुध-पर्वत की ओर झुकाव व्यक्ति को सफल व्यापारी बना देने में समर्थ होता है। ऐसे व्यक्ति सफल चिकित्सक या वकील भी होते हैं।

(८) यदि मस्तिष्क-रेखा बार-बार मार्ग बदलती हुई लहराती हुई चलती हो तो व्यक्ति अस्थिर बुद्धि-सम्पन्न होता है, तथा उसकी कथनी और करनी में एकरूपता नहीं रहती।

(९) यदि मस्तिष्क-रेखा आगे बढ़कर चन्द्र-पर्वत की ओर मुड़ गई हो तो व्यक्ति कवि होता है, तथा कई बार जलयात्राएँ करता है। यदि ऐसी रेखा का अन्त किसी क्रॉस से हो तो व्यक्ति अंतिम अवस्था में पागल हो जाता है।

(१०) यदि यह रेखा चन्द्र-पर्वत को पारकर मणिबन्ध तक पहुंच जाय, तो व्यक्ति जीवनभर दुःखी, दरिद्री और निकम्मा रहता है, जीवन में वह प्रत्येक कार्य में असफल रहता है। ऐसे व्यक्ति की मृत्यु आत्महत्या से ही होती है।

(११) यदि मस्तिष्क-रेखा हथेली के उस छोर की ओर जाकर दो मुँह वाली हो गई हो तो व्यक्ति कई उपायों से धन संग्रह करता है। ऐसा व्यक्ति विज्ञान में प्रबल रुचि रखने वाला होता है, तथा जीवन में यश, मान, पद और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

(१२) बहुत छोटी, मंगल के क्षेत्र में अचानक समाप्त हो जाने वाली मस्तिष्क-रेखा अपरिपक्व मस्तिष्क की परिचायक है, तथा जीवन में ऐसी रेखा असफलता ही दिखाती है।

(१३) यदि मस्तिष्क-रेखा शनि-पर्वत के पास समाप्त हो

मस्तिष्क रेखा

१०	११	१२
१३	१४	१५
१६	१७	१८

जाय, और समाप्ति पर तारे या क्रॉस का चिह्न बनानी हो तो व्यक्ति असन्तुलित विचारों वाला विक्षिप्त-सा युवक होता है।

(१४) यह रेखा जहां पर भी हृदय-रेखा को काटे, आयु के उस खण्ड में व्यक्ति को भारी कष्ट उठाना पड़ता है।

(१५) बहुत ही कम, पर कई हाथों में दोहरी मस्तिष्क-रेखा भी दिखाई दे जाती है, जो सीधी चलती है। ऐसा व्यक्ति प्रबल भाग्यवान् होता है, तथा निम्न कुल में, उत्पन्न होकर भी अत्यन्त उच्च पद को सुशोभित करता है। कूटनीतिज्ञता में इनका मुकाबिला कोई भी नही कर सकता।

(१६) मस्तिष्क-रेखा का बीच-बीच मे टूट जाना व्यक्ति की मानसिक अस्वस्थता को स्पष्ट करता है। ऐसे व्यक्ति न तो नियमों के पाबंद होते हैं, और न वे अपने कथन को निभा ही पाते हैं।

(१७) गुरु-पर्वत के नीचे मस्तिष्क-रेखा का टूटना बाल्यकाल में भयंकर चोट लगने का संकेत है। मध्यमा के नीचे यह रेखा टूटी हुई हो तो इसे चौबीसवें वर्ष में तेज धार वाले शस्त्र से आहत होना पड़ता है। सूर्य-पर्वत के नीचे यह रेखा टूटी हो तो व्यक्ति नौकरी में बदनामी लेता है, तथा जबरदस्ती से उसे हटा दिया जाता है। यदि ऐसी रेखा बुध-पर्वत के नीचे टूटी हो तो व्यक्ति दिवालिया घोषित होता है।

(१८) जंजीर के समान मस्तिष्क-रेखा दिमाग-संबंधी रोग बढ़ाने में सहायक होती है।

(१९) मस्तिष्क-रेखा पर यदि गुरु-पर्वत के नीचे द्वीप का चिह्न हो तो व्यक्ति विकृतावस्था में रहता है। शनि-पर्वत के नीचे द्वीप हो तो व्यक्ति ३६वें वर्ष के बाद उन्मादावस्था मे आ जाता है। सूर्य-पर्वत के नीचे द्वीप का चिह्न हो तो मस्तिष्क-संबंधी त्रुटि के कारण परेशानियां उठानी पड़ती हैं, तथा बुध-पर्वत के नीचे ऐसा चिह्न हो तो व्यक्ति विज्ञान-संबंधी कार्य करते समय विस्फोट के कारण मृत्यु को प्राप्त होता है।

(२०) मस्तिष्क-रेखा के मार्ग में पड़ने वाले कटाक्ष, बिन्दु, या आड़ी रेखायें मस्तिष्क की विकृति या प्रमादोन्मुखता का ही परिचय देते हैं। यदि मस्तिष्क-रेखा से अगल-बगल कई रेशे-सी रेखाएँ निकलती-सी दिखाई दें तो व्यक्ति अस्थिर चित्त वाला तथा तुरन्त निर्णय बदलने वाला होता है, ऐसे व्यक्ति का विश्वास कर अपने को धोखे में रखना है।

(२१) मैंने कुछ हाथों में मस्तिष्क-रेखा घूमकर शुक्र-पर्वत की ओर जाते भी देखी है। ऐसी रेखा सुदीर्घ तो होती ही है, साथ ही परिपक्व मानसिक स्थिति भी प्रकट करती है। इनके कार्यों तथा विचारों पर शुक्र का पूर्ण प्रभुत्व रहता है। स्त्रियों में ऐसा व्यक्ति अत्यन्त लोकप्रिय होता है।

(२२) मस्तिष्क या मानस-रेखा पर श्वेत बिन्दु सफलता के चिह्न हैं; काले बिन्दु मानसिक विकृति स्पष्ट करते हैं। रेखा पर क्रॉस की उपस्थिति दुर्घटना की सूचना देती है; रेखा पर नक्षत्र का उदय दुर्घटना में चोट लगने का लक्षण है। रेखा पर वृत्त का होना अदूरदर्शिता, त्रिकोण का भयंकर हानि तथा आयत का होना प्रबल भाग्यहीनता का द्योतक है।

प्रतिभा रेखा—यह रेखा हजारों में एक-आध के हाथ में देखी गई है, पर जिसके हाथ में होती है, उसका जीवन धन्य होता है। यह रेखा चन्द्र-पर्वत से निकल, अर्द्धवृत्त का आकार बनाती हुई, ऊर्ध्व मंगल को घेरकर बुध पर्वत पर समाप्त होती है। ऐसे व्यक्तियों को भगवान् की देन होती है, और वे भावी घटनाओं को पहले से ही जान लेने की क्षमता रखते हैं। आत्मा बुलाने वाले योगी, भविष्यवक्ता, सफल ज्योतिषी, और परा-मनोविज्ञानी के हाथों में ऐसी रेखा न्यूनाधिक रूप में देखी जा सकती है।

वस्तुतः हस्त-रेखाविद् को मस्तिष्क-रेखा का प्रामाणिक एवं सांगोपांग अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि इस रेखा पर जो फल कथन किया जाता है, वह अचूक होता है, साथ ही जीवन की

सफलता-असफलता बहुत-कुछ इसी रेखा से संबंधित होती है। अतः व्यक्ति के हाथ में श्रेष्ठ, उन्नत, गहरी एवं स्पष्ट मस्तिष्क रेखा उज्ज्वल भविष्य के लिए मार्गदर्शन का काम करती है।

९

हृदय-रेखा

पिछले अध्यायों में हमने जीवन-रेखा और मस्तिष्क-रेखा पर विचार किया, परन्तु यदि मानव के समग्र जीवन को वास्तविक रूप से देखें, तो पता चलेगा कि यदि मानव के पास जीवन और मस्तिष्क दोनों हैं, परन्तु वह सहृदय नहीं है, या हृदय के स्थान पर वह बिल्कुल कोरा है, तो उसका जीवन निरर्थक-सा ही कहलायेगा। एक कहावत के अनुसार मानव और ईश्वर के बीच में हृदय ही होता है, अर्थात् हृदय ही वह सेतु है जो मानव को ईश्वर से मिलाता है।

किसी भी मनुष्य के हाथ में सरल, स्पष्ट, गहरी और रक्तिम-रंग की हृदय-रेखा ही व्यक्ति को मानवीय गुणों से भूषित करती है। शुद्ध और निष्कपट हृदय ही व्यक्ति को संवेदनशील और विश्व में रहने लायक बनाता है। इसलिये दाहिने हाथ की हृदय-रेखा जितनी अधिक स्पष्ट और गहरी होगी, वह मनुष्य उतना ही अधिक सरस, न्यायप्रिय तथा परोपकारी होगा, परंतु यदि हृदय-रेखा कटी-छँटी, उथली, अस्पष्ट, या टूटी हुई हो तो व्यक्ति दिखने में चाहे कितना ही शरीफ क्यों न हो, वह आत्मा से कलुषित और पापी होगा। ऐसा व्यक्ति असभ्य, बदचलन, चरित्रहीन, विवेकशून्य तथा कामी होगा। ऐसे व्यक्ति का सहज ही विश्वास करना अपने-आप को धोखा देना होगा। इसलिये हस्तरेखा-जिज्ञासुओं को चाहिए कि वे हृदय-रेखा का सम्यक् अध्ययन सावधानीपूर्वक कर तथ्यातथ्य का निर्णय करें।

हृदय रेखा

१० ११ १२

१३ १४ १५

१६ १७ १८

वाली नहीं होता।

२०—यदि हृदय-रेखा औसत से अधिक चौड़ी हो, तो व्यक्ति हृदय की कमजोरी से पीड़ित रहता है।

२१—लाल रंग की हृदय-रेखा प्रेम में अधीरता स्पष्ट करती है। पीली हृदय-रेखा व्यक्ति को कामी, व्यसनी और विषयी बना देती है।

२२—यदि किसी स्त्री के हाथ में हृदय-रेखा शनि-पर्वत पर जंजीरवत् बन गई हो, तो वह स्त्री निश्चय ही एक से अधिक पति रखती है, इसमें सदेह नहीं।

२३—यदि हृदय-रेखा से कोई शाखा निकलकर मंगल-पर्वत की ओर जाती हो, तो ऐसा व्यक्ति कठोर हृदय का होता है, तथा प्रेम में असफल हो जाने पर सब-कुछ कर गुजरने को तैयार हो जाता है।

२४—हृदय-रेखा पर श्याम बिन्दु उसके विवाह में बाधास्वरूप होते हैं, इसके विपरीत श्वेत बिन्दु उसके वैवाहिक जीवन के सफल होने की घोषणा करते हैं।

२५—हृदय-रेखा यदि हथेली के बीच में त्रिकोण बनाती हो तो व्यक्ति विश्वव्यापी कीर्ति प्राप्त करता है।

वस्तुतः हथेली मे हृदय-रेखा का अपना महत्त्व है, जिसका साङ्गोपांग अध्ययन किसी भी हस्तरेखाविद् के लिए परमावश्यक है।

१०

यश-रेखा (सूर्य-रेखा)

सामाजिक मनुष्य की यह आदिम युग से इच्छा रही है कि समाज में उसे सम्माननीय स्थान मिले, लोग उसके कार्यों का वर्णन करें, तथा अनुकरण करें; वह कुछ ऐसा कार्य कर जाय, जो अक्षय कीर्ति का

आधार हो। जीवन सफल एवं श्रेष्ठ तभी माना जा सकता है, जबकि समाज, देश और विश्व में उसकी प्रसिद्धि हो, उसके किये गये कार्यों की प्रशंसा हो, तथा वह यशवान् बने।

वास्तव में देखा जाय, तो यश-रेखा हथेली की आवश्यक रेखाओं में से एक है। इसे हिन्दी में सूर्य-रेखा या रवि-रेखा भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसको Sun line कहते हैं। यह सूर्य-रेखा ही मानव को यश, मान, प्रतिष्ठा, पद, ऐश्वर्य, अक्षयकीर्ति और सफलता दिलाने में समर्थ होती है। व्यक्ति के हाथ में चाहे जीवन-रेखा, मानस-रेखा और हृदय-रेखा कितनी ही प्रबल क्यों न हो, परन्तु यदि उसके हाथ में श्रेष्ठ यश-रेखा नहीं है, तो शेष सभी व्यर्थ हैं। स्पष्ट, गहरी, सीधी और निर्दोष रवि-रेखा ही व्यक्ति को उच्च गुणों से भूषित कर सकने में समर्थ होती है। प्रेक्षक को चाहिए कि वह किसी का भी हाथ देखते समय सर्वप्रथम यश-रेखा पर ही ध्यान दे।

यद्यपि रवि-रेखा का इतना महत्त्व है, फिर भी यह रेखा परतंत्र रेखा ही कहलाती है क्योंकि भाग्य-रेखा जबतक गहरी और प्रभावयुक्त नहीं होती, तब तक सूर्य-रेखा भी निष्क्रिय-सी ही होती है; अतः श्रेष्ठ रवि-रेखा के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति के हाथ में श्रेष्ठ भाग्य-रेखा भी हो।

अब यहाँ एक प्रश्न उठता है कि क्या सभी व्यक्तियों के हाथों में यश-रेखा होती है? क्या इसका उद्गम-स्थान सभी व्यक्तियों के हाथों में एक ही होता है? मेरा अनुभव यह कहता है कि सभी व्यक्तियों के हाथों में यश-रेखा का होना आवश्यक नहीं; अपितु मैं तो कहता हूँ, चालीस प्रतिशत से ज्यादा लोगों के हाथों में यह रेखा होती ही नहीं है, साथ ही इसका उद्गम-स्थल भी विभिन्न हाथों में विभिन्न स्थानों से होता है। हाँ, इसकी लम्बाई, निर्दोषता और स्पष्टता से इसके प्रभाव में न्यूनाधिक्यता संभव होती है। सभी मानव उन्नति की आकांक्षा करते हैं, पर अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफल कम ही लोग होते हैं। इसका कारण भी यही यश-रेखा के उद्गम-स्थलों की विभिन्नता है, इसलिए प्रेक्षक को यश-रेखा के उद्गम-स्थल पर विशेष ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

यह रेखा मुख्यतः सूर्य-पर्वत के नीचे होती है। एक बात का ध्यान विशेषरूप से रखना चाहिए कि सूर्य-रेखा का उद्गम चाहे कहीं हो, पर जिस रेखा का अवसान सूर्य-पर्वत पर आकर हो, वही रेखा सूर्य-रेखा कहलाने की हकदार है।

अब प्रश्न उठता है कि फिर इस रेखा का उद्गम-स्थल कौन-सा हो सकता है? मैंने अपने जीवन के पच्चीस-तीस वर्षों के अनुभव में इस रेखा के बारह उद्गम-स्थलों का पता लगाया है, जहाँ से ये रेखाएँ प्रारम्भ हो सकती हैं; परन्तु जैसाकि मैं ऊपर कह चुका हूँ, इसका अवसान या समाप्ति सूर्य-पर्वत पर अत्यन्त आवश्यक है।

नीचे मैं पाठकों के हितार्थ उन बारह उद्गम-स्थलों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर रहा हूँ—

(१) कुछ लोगों के हाथों में यश-रेखा शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर रवि-क्षेत्र तक जाती है। इस प्रकार यह मार्ग की सभी रेखाओं को काटती हुई आगे बढ़ती है, पर कुछ हाथों में यह मार्ग में पड़नेवाली जीवन, भाग्य या हृदय-रेखाओं को काटकर नहीं, अपितु स्वयं कटती हुई आगे बढ़ती रहती है, और सूर्य-पर्वत पर जा पहुँचती है।

(२) कुछ हथेलियों में यश-रेखा जीवन-रेखा के समाप्ति-स्थल से प्रारम्भ होती है; कुछ समय तक तो यह जीवन-रेखा के समानान्तर चलती रहती है, परन्तु फिर एकदम से मुड़कर सूर्य-क्षेत्र पर जा पहुँचती है।

(३) इसका उद्गम मंगल-क्षेत्र पर से भी होता देखा गया है। यह रेखा वृत्ताकार होकर हृदय-रेखा को काटती हुई सूर्य-पर्वत पर जा पहुँचती है।

(४) कुछ व्यक्तियों के हाथों में इसका प्रारम्भ मस्तिष्क-रेखा से होकर सूर्य-पर्वत पर जा मिलना होता।

(५) कभी-कभी इसका उद्गम हृदय-रेखा पर से भी देखा है; हृदय-रेखा पर से निकल सूर्य-पर्वत पर जा छिपती है। देखने में यह रेखा अत्यन्त छोटी होती है।

(६) किसी-किसी के हाथ में यह हर्शल-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर

यश रेखा	
१	२
३	४
५	६

भी अनामिका के मूल तक जाती देखी गई है।

(७) चन्द्र-रेखा पर से प्रारम्भ होकर यह रेखा अर्द्ध-चन्द्राकार बनाती हुई सूर्य-पर्वत पर भी जाती हुई देखी गई है।

(८) मैंने कुछ हाथों में इस रेखा का प्रारम्भ मणिबन्ध से भी देखा है। मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर यह रेखा मार्ग की समस्त रेखाओं को काटती हुई सूर्य-पर्वत पर जा पहुँचती है।

(९) इस रेखा को केतु-क्षेत्र से प्रारम्भ होते हुए भी देखा गया है। ऐसी रेखा हृदय-रेखा तथा शीर्ष-रेखा को काटकर अनामिका के तीसरे पोर तक पहुँचती है।

(१०) राहु-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर भी मैंने इस रेखा को सूर्य-पर्वत की ओर जाते देखा है।

(११) यह रेखा कई बार हथेली के बीच में से अकस्मात् शुरू होकर सूर्य-क्षेत्र तक भी पहुँचती है।

(१२) बहुत ही कम, पर कुछ हाथों में यह रेखा बुध-पर्वत के कुछ नीचे निकलकर सूर्य-पर्वत पर पहुँचते भी देखी गई है।

वस्तुतः ये बारह उद्गम-स्थल ही हैं जहाँ से यश-रेखा प्रारम्भ हो सकती है। परन्तु सभी रेखाएँ, चाहे उनका उद्गम-स्थल कहीं पर भी हो, अवसान-स्थल एक ही—सूर्य-पर्वत—होता है।

अब उपर्युक्त में से प्रत्येक प्रकार की रेखा का संक्षिप्त विवेचन, तदनुसार फलाफल स्पष्ट कर रहा हूँ।

प्रथमावस्था—जो यश-रेखा शुक्र-पर्वत से प्रारम्भ होकर रवि-क्षेत्र तक जाती है, वह सौभाग्यशालिनी रेखा कहलाती है, क्योंकि ऐसी रेखा रखनेवाला व्यक्ति अपनी प्रेमिका से काफी धन प्राप्त करता है, या उसे ससुराल से भारी जायदाद मिलती है। ऐसा व्यक्ति सफल प्रेमी होगा, तथा उसका भाग्योदय भी किसी प्रेमिका के माध्यम से ही होगा। अनुभव में ऐसा भी आया है कि ऐसी रेखा होने पर व्यक्ति किसी विधवा की गोद चला जाता है और उसे सहज ही द्रव्य-प्राप्ति हो जाती है।

द्वितीयावस्था—इस प्रकार की रेखा बहुत ही कम हाथों में देखने को मिलती है, परन्तु जिन हाथों में यह रेखा स्पष्ट, सीधी और

निर्दोष हो, वे व्यक्ति कलाकार होते हैं, तथा कला के द्वारा द्रव्य-संचय करते हैं। ऐसी रेखा ही उनके उज्ज्वल भविष्य का संकेत देनेवाली होती है। ऐसे व्यक्ति मिलनसार, रसिक, मधुरभाषी, हुनर-मंद और मोहक रूप रखनेवाले होते हैं।

तृतीयावस्था—मंगल-क्षेत्र को उद्गम-स्थल बनानेवाली यश-रेखा मानव को दृढ़ता और साहस प्रदान करती है। ऐसा व्यक्ति निश्चय ही पुलिस या सेना में अलौकिक वीरता दिखाकर ख्याति अर्जित करता है। ऐसे व्यक्ति अधिकतर Self-made होते हैं; आत्मविश्वास इनमें कूट-कूटकर भरा होता है। जीवन के प्रारम्भ से ही ये विभिन्न कठिनाइयों में घिर जाते हैं, पर धीरे-धीरे ये परिश्रम द्वारा अपनी उन्नति का पथ प्रशस्त कर सफलता प्राप्त करके ही रहते हैं।

चतुर्थावस्था—इस प्रकार की रेखा जिस किसी भी व्यक्ति के हाथ में होगी, वह मस्तिष्क से कार्य करनेवाला होगा। ऐसे व्यक्ति उच्चकोटि के वैज्ञानिक, तार्किक और साहित्यिक होंगे। जीवन के ये चाहे किसी भी क्षेत्र में हों, और आजीविका के लिए कोई-सा भी कार्य करते हों, प्रत्येक कार्य में बुद्धि का भरपूर उपयोग करते हैं और श्रेष्ठ धन कमाते हैं। इनके कार्य चौंकानेवाले तथा समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाले होंगे। परन्तु ऐसे व्यक्ति जीवन के छब्बीस वर्षों के बाद ही प्रगति करते हैं, इससे पूर्व इनका भाग्योदय नहीं-सा होता है।

पंचमावस्था—ऐसी रेखा जिस किसी भी पुरुष या स्त्री के हाथ में होती है, वह सफल जीवन व्यतीत करनेवाला होता है, परन्तु जीवन के प्रारम्भिक वर्ष काफी कष्टकर होते हैं। ये जीवन में इतने अधिक सफल रहते हैं कि लोग आश्चर्य करते हैं, परन्तु इनकी सफलता प्रौढ़ावस्था में ही दिखाई देती है। जीवन के ४५ वर्षों के बाद इन्हें सफलता के चरण चूमते देखा है। ऐसे व्यक्ति अलौकिक शक्ति-सम्पन्न होते हैं। इनके कार्य चमत्कारिक होते हैं। मृत्यु के पश्चात् भी ये यश प्राप्त करते रहते हैं। परन्तु यदि यश-रेखा बीच में टूटी हुई या द्वीपदार हो तो इनकी सफलता आधी ही रह जाती है। रवि-रेखा का दोषयुक्त होना बदनामी का ही कारण बनता है।

षष्ठावस्था—इस प्रकार की सूर्य-रेखा जिस किसी भी व्यक्ति के हाथों में होती है, वह गरीब घराने का ही व्यक्ति होता है। न तो उनकी व्यवस्थित रूप से शिक्षा ही होती है, और न ही वे व्यवस्थित रूप से ऊँचे पद पर पहुँच सकते हैं, फिर भी ऐसे व्यक्ति कठोर परिश्रमी होते हैं। घरवालों से सहायता प्राप्त न होने पर भी ये शिक्षा चालू रखते हैं और आगे जाकर सफल वकील, न्यायाधीश तथा शिक्षाशास्त्री बन जाते हैं।

यौवनावस्था में ये विदेश-यात्रा भी करते हैं, तथा अपने कार्यों से कीर्ति अर्जित करते हैं। जलयात्रा-योग विशेषरूप से बनता है। यदि ऐसी रेखा सदोष या टूटी हुई हो तो जलयात्रा का मरणांतक संकट झेलना पड़ता है, अथवा विदेश में प्रेम-सम्बन्ध स्थापित कर बदनामी मोल लेते हैं।

मैंने एक उच्च राजघराने के प्रमुख कुँवर के हाथ में ऐसी रेखा देखकर कहा था कि जहाँ यह विदेश में प्रेम-सम्बन्ध स्थापित कर बदनाम होगा, वहाँ घरवालों के लिए भी संकट उपस्थित करेगा। लोगों ने यह बात नहीं मानी, क्योंकि उनका विवाह बाल्यकाल में ही एक उच्च घराने की सुन्दर लड़की से हो चुका था। समय बीतता गया और होनी होकर रही। वह कुँवर शिक्षा लेने विदेश गया, और वहाँ एक अमेरिकन कुमारी से प्रेम कर बैठा; प्रेम ही नहीं विवाह तक हो गया। वह जब भारत लौटा, तो महीने-भर बाद वह युवती भी चुपके से यहाँ आ गई। यहाँ आने पर जब उसने देखा कि उसका तो विवाह पहले से ही हो चुका है, तो इतना वावेला मचा, इतनी हँगाई हुई कि पूछो मत! किसी प्रकार ले-देकर मामला रफा-दफा किया गया, और कही गई बात सत्य होकर रही। वास्तव मे यह रेखा इस तथ्य को उजागर करती भी है।

सप्तमावस्था—जिन व्यक्तियों के हाथों में इस प्रकार की रवि-रेखा हो, वे भिन्न-लिंगी प्राणियों के सम्पर्क मे आने के बाद ही उन्नति करते हैं, अर्थात् जब तक पुरुष किसी स्त्री के, या स्त्री किसी पुरुष के सम्पर्क में नहीं आ जाती, तबतक उसकी उन्नति असम्भव ही होती है।

दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि ऐसे व्यक्तियों का भाग्योदय विवाह के पश्चात् ही होता है। इनका स्वभाव शंकालु होता है, जिससे ये सफलता की पूर्णता तक नहीं पहुँच पाते। ये मिलनसार, रसिक और सहृदय होते हैं, पर अस्थिरचित्त होने के कारण इनपर सहज ही विश्वास नहीं किया जा सकता। ये व्यक्ति दिखावा-पसन्द होते हैं, तथा जो भी सामाजिक कार्य करते हैं, उनके पीछे यही दिखावे की प्रवृत्ति प्रमुख रूप से विद्यमान रहती है।

अष्टमावस्था—इस प्रकार की रेखा कठिनता से हजारों में एक या दो व्यक्तियों के हाथों में देखने को मिलती है। ऐसे व्यक्ति सफलता का अन्तिम चरण चूमते हैं। इनके जीवन में मान, प्रतिष्ठा, आदर, प्रतिभा और पद की कोई कमी नहीं रहती। ऐसा व्यक्ति भक्त, दानी व परोपकारी तथा सानन्द सादगीपूर्ण जीवन बितानेवाला होता है। ये उच्चकोटि के व्यापारी, ठेकेदार, श्रेष्ठ एवं सफल साहित्यकार तथा प्रधान न्यायाधीश होते हैं। ऐसी रेखा विरले लोगों के हाथों में ही देखने को मिलती है।

नवमावस्था—यदि यह रेखा सुन्दर, स्पष्ट तथा निर्दोष हो तो व्यक्ति का बाल्यकाल सानन्द बीतता है। उसे जीवन में वंशगत कीर्ति, प्रभुता और ऐश्वर्य मिलता है। उन्हें अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता, अपितु सफलताएँ स्वतः ही उनके चरण चूमती रहती हैं। ऐसे व्यक्ति ऊँचे स्तर के व्यापारी या जौहरी होते हैं।

ऐसे व्यक्तियों की मित्रता निम्न चरित्र के लोगों से तथा व्यसनियों से हो जाती है, जिससे इनका चरित्र भी उज्ज्वल नहीं रहता। ये समाज की न तो परवाह करते हैं, और न उसकी चिन्ता ही करते हैं।

दशमावस्था—ये व्यक्ति उत्साही, कर्मठ तथा चतुर होते हैं। बात के मूल में ये तुरन्त पहुँच जाते हैं। इनकी योजनाएँ शत-प्रतिशत सही उतरती हैं। ऐसे व्यक्ति सफल पत्रकार हो सकते हैं। जीवन में ये स्वच्छन्द रहते हैं तथा एक बार जो निर्णय ले लेते हैं, उसपर जमे रहते हैं। ये व्यक्ति सफल मित्र सिद्ध होते हैं।

एकादशावस्था—जिन हाथों में इस प्रकार की रेखा होती है, वे

प्रबल भाग्यशाली होते हैं। जीवन में एक-दो बार नहीं, कई बार ये आकस्मिक द्रव्य प्राप्त करते हैं। समाज में इन्हें पूरा सम्मान मिलता है, बैंक-बैलेन्स हर समय बढ़ता ही रहता है।

द्वादशावस्था—इस प्रकार की रेखाएँ कम ही हाथों में पाई जाती हैं, परन्तु होती जरूर हैं। जिन व्यक्तियों के हाथों में इस प्रकार की रेखा पाई जाय, वे सफल ऐक्टर या अभिनेता होते हैं। मैंने एक क्लर्क के हाथ में ऐसी रेखा देखी थी और उसे सलाह दी थी कि वह बम्बई जाकर फिल्म-व्यवसाय में भाग्य-आजमाइश करे। हाथ की रेखा पुकार-पुकारकर कह रही थी कि वह फिल्म-व्यवसाय में लाखों में खेलेगा, हालाँकि उसके पास इतना भी पैसा नहीं था कि वह बम्बई जाकर आ सके। मैंने एक बार फिर गणना की और पाया कि उसका भाग्योदय अगले पाँच महीनों के भीतर-भीतर होनेवाला है। मैंने उसे अपनी जेब से तीन सौ रुपये दिए और महीने की छुट्टी दिलाई, साथ ही एक प्रसिद्ध निर्देशक के नाम पत्र भी लिखकर उसे दिया। वह बड़े अनमनेपन से रवाना हुआ।

आज वह एक सफल अभिनेता है, कई फिल्मों में नायक बन चुका है, और लाखों-करोड़ों मे खेलता है। वस्तुतः यह रेखा फिल्म-सम्बन्धी कार्यों से ही प्रसिद्धि दिलाती है।

यश रेखा के सम्बन्ध में कुछ नवीन तथ्य—

१—लम्बी सूर्य-रेखा व्यक्ति को यश, मान, पद और प्रतिष्ठा दिलाने में सहायक होती है। छोटी सूर्य-रेखा प्रतिभा की परिचायक तो है, पर समाज मे सफलता के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ता है।

२—सूर्य-रेखा मार्ग में जहाँ टूट गई हो, आयु के उस खण्ड में व्यक्ति अपना व्यवसाय या कार्य बदल लेते हैं।

३—सूर्य-रेखा के मार्ग मे द्वीप हो तो व्यक्ति द्रव्य-हानि सहन कर दिवालिया बन जाता है।

४—सूर्य-रेखा जहाँ पर सर्वाधिक गहरी और स्पष्ट हो, आयु के उस भाग में ही विशेष यशोर्जन समझना चाहिये।

५—सूर्य-रेखा का अन्त बिन्दु के रूप में हो तो व्यक्ति परम कष्ट,

पाता है। अन्त में नक्षत्र हो तो व्यक्ति परम यश लाभ करता है। सूर्य-रेखा पर दो नक्षत्रों की उपस्थिति सफलता के दो चरण बताती है। यदि सूर्य-रेखा के प्रारम्भ में और अन्त में नक्षत्र हो, तो व्यक्ति जीवनभर सुखी एवं प्रतिष्ठावान् बना रहता है।

६—यदि सूर्य-रेखा का अन्त आड़ी रेखा से हो तो व्यक्ति की प्रगति समाप्त हो जाती है, तथा वह निष्क्रिय-सा जीवन व्यतीत करने लगता है।

७—यदि क्रॉस से सूर्य-रेखा की समाप्ति होती हो तो व्यक्ति गंभीर दुष्परिणाम भोगता है।

८—सूर्य-रेखा पर वर्ग की उपस्थिति दुष्परिणामों से बचाव की द्योतक है।

९—सूर्य-रेखा का अंत यदि द्विशाखी या बहुशाखी के रूप में हो तो व्यक्ति की समाज में निन्दा होती है।

१०—यदि सूर्य-रेखा के साथ कई सहायक रेखाएँ हों तो ये शुभ कही जाती हैं।

११—यदि सूर्य-रेखा के बीच में से कोई शाखा फटकर बुध या शनि-पर्वत पर जाती है तो इस रेखा को बल मिलता है, तथा उस पर्वत-विशेष के गुण इसमें आ जाते हैं।

१२—सूर्य-रेखा की कोई प्रशाखा गुरु-पर्वत पर जाती हो, तो व्यक्ति को राज्य से आकस्मिक लाभ मिलता है।

१३—सूर्य-रेखा स्पष्ट हो, पर अनामिका उँगली यदि टेढ़ी-मेढ़ी हो, तो व्यक्ति धन के लिए अपराधपूर्ण कार्य करने को सन्नद्ध रहता है।

१४—यदि सूर्य-पर्वत पर कई छोटी-छोटी रेखाएँ हों, तो यह असफलता का चिह्न है।

१५—जब सूर्य-रेखा को परिणय-रेखा काटे तो व्यक्ति अनमेल विवाह के कारण दुःखी रहता है।

१६—यदि सूर्य-रेखा को काटनेवाली आड़ी रेखा शनि-पर्वत से आ रही हो तो व्यक्ति आर्थिक कठिनाइयों से ग्रस्त रहता है, तथा सफलता में व्यवधान पड़ता है।

१७—यदि रेखा बीच-बीच में काफी जगह छोडकर बढ़ रही हो तो व्यक्ति की उन्नति में उसी के द्वारा निर्मित बाधाएँ व्यवधान उपस्थित करती हैं।

१८—यदि रवि रेखा लहरदार, जंजीरदार या शृंखलावद् हो तो व्यक्ति की उन्नति क्षीण तथा कई बाधाओं से परेशान रहनेवाला होता है।

१९—यदि रवि-रेखा टेढ़ी मेढ़ी तथा हृदय-रेखा लहरदार हो तो उनके कार्य ही उनकी उन्नति में बाधक होते हैं।

२०—यदि रवि-रेखा के साथ भाग्य-रेखा भी श्रेष्ठ एवं उन्नत हो तो व्यक्ति शीघ्र ही सफलता प्राप्त करता है।

२१—हाथ में सूर्य-रेखा का लोप होना भाग्यहीनता का ही द्योतक है।

२२—सूर्य-रेखा जितनी ही अधिक स्पष्ट, गहरी और ललाई लिये हुए होती है, वह उतनी ही अधिक प्रभावकारी एवं श्रेष्ठ कही जाती है।

वस्तुतः हाथ में सूर्य-रेखा ही सफलता की रेखा है, अतः उन्नति के लिए सूर्य-रेखा का निर्दोष होना अत्यावश्यक है।

११

भाग्य-रेखा

यदि जीवन में सब-कुछ है, पर भाग्य साथ न दे तो वह सब-कुछ भी व्यर्थ है। श्रेष्ठ एव स्वस्थ जीवन, उन्नत एवं विचारशील मस्तिष्क तथा उदार एवं परिष्कृत हृदय होने पर भी व्यक्ति के पास प्रारब्ध न हो, तो ये सब-कुछ निष्क्रिय-से प्रतीत होते हैं। यदि भाग्य साथ हो और व्यक्ति मिट्टी भी छू ले तो सोना बन जाती है। इसके विपरीत

अभाग्यवान् व्यक्ति को तो सोने को हाथ लगाने पर भी मिट्टी का ढेला ही हाथ लगता है।

अतः जीवन में भाग्य का महत्त्व सर्वाधिक माना गया है। इसी प्रकार हाथ में भी भाग्य-रेखा, ऊर्ध्व-रेखा या प्रारब्ध-रेखा का महत्त्व सर्वोपरि है। यह रेखा जितनी ही अधिक स्पष्ट, गहरी और ललाई लिये हुए होती है, उतनी ही श्रेष्ठ होती है। भाग्य-रेखा की धूमिलता अन्य गुणों को भी प्रभावहीन बना देती है। व्यक्ति के हाथ में सभी दुर्गुण दिखाई देते हों, पर यदि भाग्य-रेखा स्पष्ट है, तो व्यक्ति के अन्य दुर्गुण छिप जायेंगे। इसलिए किसी भी व्यक्ति का हाथ देखते समय भाग्य-रेखा का अध्ययन सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

भाग्य-रेखा सभी व्यक्तियों के हाथों में हो, ऐसा आवश्यक नहीं है। साठ प्रतिशत लोगों के हाथों में यह नहीं भी होती, परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि भाग्य-रेखा न होने से व्यक्ति भाग्यहीन है। भाग्य-रेखा हाथ में पड़कर यह स्पष्ट करती है कि व्यक्ति का भाग्य औरों की अपेक्षा ज्यादा प्रबल है। भाग्य-रेखा होने से व्यक्ति अपनी नैसर्गिक, शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं का पूरा-पूरा उपयोग करने में सक्षम होता है।

भाग्य-रेखा को प्रारब्ध-रेखा या शनि-रेखा भी कहते हैं, क्योंकि इस रेखा की समाप्ति शनि-पर्वत या शनि-क्षेत्र पर होती है।

मेरे अनुभव में यह आया है कि जिन लोगों के हाथों में यह रेखा होती है, वे अपने परिवार से या अन्य कारणों से सक्षम होते हैं। उनके भाग्य-निर्माण में उनका परिवार, बन्धु तथा अन्य तत्त्व भी काम करते हैं। परन्तु जिन लोगों के हाथोंमें इस रेखा का अभाव होता है, वे पूर्णतः स्वनिर्मित अस्तित्ववाले (Self-made man) होते हैं। न तो उन्हें समाज से कोई सक्रिय सहायता मिलती है, और न परिवार से। ऐसे व्यक्ति जब भी और जितना भी ऊँचा उठते हैं, मात्र अपने ही प्रयत्नों, अपनी ही योग्यता, चतुराई और सक्रियता से। यदि कोई व्यक्ति सफल या ऐश्वर्यवान् हो, और उसके हाथ में शनि-रेखा अनुपस्थित हो, तो इसका तात्पर्य यह समझें कि यह जो कुछ भी ऐश्वर्य दिखाई दे रहा है, वह सब उस व्यक्ति के प्रयत्नों ही से सम्भव हुआ

जितनी अधिक साफ, स्पष्ट, गहरी और निर्दोष होगी, उतनी ही अच्छी कही जायेगी। इस रेखा में एक बात का ध्यान रखना चाहिये कि यदि यह शनि क्षेत्र तक ही पहुँचती है, तब तो सर्वोत्तम है, परन्तु यह शनि-क्षेत्र को पार कर मध्यमा के निचले पोरुए को छुए या ऊपर बढ़ जाय, तो विपरीत फल देने लग जाती है। किसी-किसी हाथ में तो यह बेल की तरह उँगली के दूसरे पोरुए तक पहुँच जाती है। इस प्रकार की रेखा बनने से स्पष्ट है कि व्यक्ति महत्त्वाकांक्षी है, वह योजनाबद्ध काम करनेवाला है, परन्तु उसकी योजनाएँ सफल नहीं होतीं। यह बढ़ी हुई रेखा व्यक्ति के बने-बनाये कार्य को अंतिम अवस्था में जाकर बिगाड़ देती है।

यदि यह रेखा शनि-क्षेत्र तक ही पहुँचे, उँगली पर न चढ़े तो शुभ कही गई है। यदि शनि-क्षेत्र पर यह रेखा द्विजिह्वी हो गई हो तो विशेष शुभ समझना चाहिए। यदि इस प्रकार की द्विजिह्वी भाग्य-रेखा में से एक रेखा शनि-पर्वत पर तथा दूसरी रेखा बृहस्पति-पर्वत पर पहुँचे, तो व्यक्ति अत्यन्त उच्च पद पर पहुँचता है। ऐसे व्यक्ति सामान्य घरानों में जन्म लेकर भी उत्तम पद प्राप्त कर लेते हैं। लालबहादुर शास्त्री इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ऐसा व्यक्ति अपने देश की भलाई में अपने-आप को न्यौछावर कर देता है। यह व्यक्ति सबका प्रिय, स्वाभिमानी, दानी, सबकी सुननेवाला, तथा छोटे-बड़े प्रत्येक का हित करनेवाला होता है। यह व्यक्ति उन्मुक्त सिंह की तरह अपने विचार धड़ल्ले के साथ व्यक्त करनेवाला होता है।

यदि इस प्रकार की श्रेष्ठ भाग्य-रेखा को आड़ी रेखाएँ काटती हों, तो निश्चय ही उसकी भाग्योन्नति में बाधाएँ आती हैं। यद्यपि यह व्यक्ति सफल अवश्य होता है, परन्तु बीच में बाधाएँ अत्यधिक आने से परेशान हो जाता है। ये अवरोधक रेखाएँ जितनी भी कम हों, उतनी ही शुभ कही जाती हैं।

मैंने एक-दो हाथों में इस प्रकार की भाग्य-रेखा को नीचे मणिबन्ध की रेखाओं को काटकर और नीचे की ओर उतरते देखा है। ऐसी रेखा पूर्णतः दोषपूर्ण तथा भाग्यहीनता की सूचक होती है, तथा उसके

कार्य सफल नहीं होते।

स्वतन्त्र भाग्य-रेखा जहाँ श्रेष्ठ मानी गई है, वहाँ परतन्त्र भाग्य-रेखा धीरे-धीरे फलदायी होती देखी गई है।

द्वितीयावस्था—इस प्रकार की भाग्य-रेखा भी व्यक्ति के जीवन को देदीप्यमान करने में समर्थ है। परन्तु यदि यह रेखा भी मध्यमा उँगली के पोरुओं पर चढ़ने का प्रयत्न करे, तो अशुभ एवं संकटवर्धक बन जाती है। ऐसी रेखा परतन्त्र भाग्य-रेखा ही कही जायेगी। ये व्यक्ति साहसी होने पर भी मुसीबतों से घिरे रहते हैं। ऐसे व्यक्ति परिश्रमी तथा क्रियाशील होते हैं।

यदि यह रेखा शनि-पर्वत तक ही पहुँचती हो तो श्रेष्ठ कही जाएगी। ये व्यक्ति बाल्यकाल मे परमुखापेक्षी होते हैं, तथा किसी-न-किसी के आश्रय से आगे बढ़ते हैं, परन्तु यौवनकाल में इनकी वृत्तियाँ बढ़ने लगती हैं, २८वें साल के बाद पूर्ण भाग्योदय होता है।

ऐसे व्यक्ति स्वतन्त्र निर्णय लेने में समर्थ नहीं होते। यदि ये किसी के सहयोग से कार्य करें, तो अधिक लाभप्रद स्थिति में रहते हैं। यदि ऐसी रेखा पर आड़ी या अवरोधक रेखाएँ हों, तो व्यक्ति के जीवन में कई बार दुर्भाग्यपूर्ण स्थितियाँ आती हैं और वह विचलित होने लगता है। उसका कोई भी काम एक ही यत्न में नहीं होता। द्विजिह्वी भाग्य-रेखा शुभ मानी गई है।

यदि इस प्रकार की भाग्य-रेखा जीवन-रेखा के साथ-साथ चली हो तो शुभ नहीं कही जाएगी। जब जीवन-रेखा और भाग्य-रेखा अलग-अलग होंगी, तब भाग्योदय होगा। इन दोनों रेखाओं की पृथकता ही उन्नतिसूचक कही जा सकती है।

तृतीयावस्था—यह रेखा जितनी निर्दोष होगी, उतनी ही सफल एवं श्रेष्ठ होगी। यह भाग्य-रेखा जीवन-रेखा को काटकर ही आगे बढ़ती है, अतः यदि यह जीवन-रेखा को गहराई से काटकर आगे बढ़ी हो, तो व्यक्ति जीवन में दो बार भयंकर कष्टों का सामना करता है। परन्तु यदि यह स्वयं कटकर जीवन-रेखा को छोड़ फिर आगे बढ़ गई हो, तो शुभ कही जाएगी।

भाग्य-रेखा जिस स्थान पर जीवन-रेखा को काटे, आयु के उस

भाग में व्यक्ति मरणांतक कष्ट पाता है। वह दिवालिया हो सकता है, मुकद्दमे मे हार सकता है, या किसी भयंकर एक्सीडेंट से घायल हो सकता है। सम्भव है उसके किसी अत्यन्त प्रिय परिजन की मृत्यु से उसे भारी मानसिक कष्ट उठाना पड़ जाय।

चूँकि यह भाग्य-रेखा शुक्र-पर्वत से निकलती है, अत: व्यक्ति का भाग्योदय विवाहोपरान्त समझना चाहिए; या बीस वर्षों के बाद भाग्योदय हो सकता है। ऐसा व्यक्ति प्रेम के क्षेत्र में बढ़ा-चढ़ा होता है। अत. प्रेम-निर्वाह मे भी विशेष लाभ हो सकता है।

ऐसे व्यक्ति का बचपन तथा वृद्धावस्था सुखकर नहीं होती। अपितु यौवनावस्था ही Cream Life होती है। ऐसे व्यक्ति की स्त्री (स्त्री हो तो पुरुष) तड़क-भड़क पसन्द करनेवाली, नजाकतपूर्ण तथा शौकीन होती है। ससुराल से खूब धन मिलता है, या स्त्री पढ़ी-लिखी मिलती है, जो नौकरी कर द्रव्योपार्जन में सहयोग देती है।

ऐसे व्यक्ति का वैवाहिक जीवन सुखकर नही होता। यदि ऐसी भाग्य-रेखा के बीच में द्वीप हो तो इन दोनों के बीच में अवश्य तलाक होता है। भाग्य-रेखा के जिस स्थान पर द्वीप हो, आयु के उस भाग में अनबन या तलाक की स्थिति बनती है।

चतुर्थावस्था—यह रेखा भी एक शुभ भाग्य-रेखा कही गई है, यदि यह निर्दोष हो। इस रेखा को रखनेवाला व्यक्ति चाहे कितना ही अधिक परिश्रम करे, यौवनावस्था से पहले उसका भाग्योदय नहीं होता। बाल्यकाल मे उसे कष्ट ही मिलते हैं। शिक्षा मे बाधा होती है, परीक्षा-परिणाम अनुकूल नहीं रहते, तथा घर में प्रेम नही मिलता।

यदि भाग्य-रेखा के साथ कोई सहयोगी रेखा न हो, तो व्यक्ति अपनी ही की गई गलतियों के कारण पछताता रहता है। उसकी संगति ठीक नही होती, फलस्वरूप जीवन मे उन्नति के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ता है।

मैंने ऐसे व्यक्तियों का भाग्योदय देरी से ही होता देखा है, साथ ही ऐसे लोगों का भाग्योदय किसी सामर्थ्यवान् व्यक्ति के प्रयत्नों से ही होता है। ऐसा व्यक्ति पुलिस या सेना में शीघ्र उन्नति करता है, अथवा खास वस्तुओं के व्यापार से, गोला-बारूद बनानेवाली फैक्टरी में कार्य

करने से विशेष लाभ उठाता है। जीवन में यह प्रभावशाली व्यक्ति का प्रियपात्र बनता है, और वही उसे उन्नति की ओर बढ़ाता है।

इस रेखा का टूटकर आगे बढ़ना विपत्ति को स्पष्ट करता है। अवरोधक रेखाओं का काटना, लहरदार रेखा होना या रेखा पर द्वीपों की स्थिति, व्यक्ति की भाग्यहीनता ही स्पष्ट करती है।

पंचमावस्था—यह भाग्य-रेखा जीवन-रेखा से निकलती है, परन्तु इसके लिए कोई स्थान निर्धारित नहीं ; जीवन-रेखा पर कहीं से भी इसका उद्गम संभव है।

यह रेखा भाग्य-रेखा तथा शीप-रेखा को काटकर स्वाभाविक रूप से शनि-पर्वत की ओर जाती हो, तो शुभ कही जाती है ; और शुभ फल प्रदान करती है। परन्तु यदि यह रेखा मध्यमा उँगली के तीसरे या दूसरे पोरुए पर चढ़ने का प्रयत्न करे, तो अशुभ कही जाएगी। ऐसा व्यक्ति प्रयत्न करके भी शुभ परिणाम नहीं भोग सकता। यह व्यक्ति आगे बढ़ने की आकांक्षा रखेगा, परिस्थितियाँ भी साथ देंगी, पर अन्तिम स्थिति में कुछ-न-कुछ ऐसी गड़बड़ हो जाएगी कि शुभ परिणाम में विलम्ब हो जायगा। जीवन चिन्तित एवं भारयुक्त बना रहता है, तथा बिना किसी प्रभावशाली व्यक्ति के सहयोग से यह उन्नति नहीं कर पाता।

इस व्यक्ति की उन्नति तभी होती है, जब यह जीवन-रेखा से आगे बढ़ती है। आयु के उस भाग मे इसका स्वतन्त्र विकास होने लगता है। जीवन के मध्यकाल में ये व्यक्ति तेजी से प्रयत्न कर आगे बढ़ते हैं। ऐसे व्यक्ति सफल कलाकार, चित्रकार या दस्तकार होते हैं, तथा अपने फन के एक ही उस्ताद होते हैं।

जीवन-रेखा से आगे बढ़ने पर भी यदि भाग्य-रेखा टूटी हुई, दूषित या लहरियादार हो, तो व्यक्ति अपनी ही गलतियों से अपना नुकसान करता है। उसकी उन्नति मे उसके परिवारवाले ही बाधक रहते हैं, तथा उसकी प्रगति रुक-रुककर ही होती है।

आडी रेखाओं का जगह-जगह पर भाग्य-रेखा को काटना भाग्योन्नति के बीच में बाधक ही समझना चाहिए। हाँ, ऐसी रेखा वाले व्यक्ति सफल देशभक्त होते हैं ; घर की तथा समाज की ये अधिक

चिन्ता नहीं करते। वृद्धावस्था इनकी सुखकर होती है।

षष्ठावस्था—यह रेखा व्यक्ति के प्रबल भाग्योदय की सूचक है। परन्तु ऐसी रेखा मध्यमा उँगली पर चढ़ने का प्रयत्न करे तो अशुभ फलदायी बन जाती है। राहु-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर ऊपर उठनेवाली भाग्य-रेखा यह स्पष्ट करती है कि व्यक्ति का भाग्योदय ३६वें वर्ष से पहले सम्भव नहीं। जीवन के ३०वें वर्ष से उसके जीवन मे स्थिरता आयेगी, धनागम के आसार बनने प्रारम्भ होंगे तथा वह कुछ ऐसा महसूस करने लगेगा कि अब वह धीरे-धीरे जमने लगा है। ३६वें वर्ष से ४२वें वर्ष के बीच यह शीघ्रता से उन्नति कर लाभ प्राप्त करने लगता है।

यदि यह रेखा मस्तिष्क-रेखा पर से उठती है, और शनि-क्षेत्र तक पहुँचती है तो व्यक्ति ३६वें वर्ष के बाद मस्तिष्क-सम्बन्धी उत्तम कार्य करेगा; वह परीक्षा में लगा हुआ है तो परीक्षा पास कर लेगा; किसी आविष्कार में लगा हुआ है तो इस समय में कार्य सम्पन्न होगा; किसी ग्रन्थ-लेखन में लगा है तो ३६वें वर्ष के बाद ही वह कीर्ति का अधिकारी होगा। तात्पर्य यह कि ऐसी रेखा रखनेवाला व्यक्ति मस्तिष्क-सम्बन्धी कार्यों से सफलता और प्रसिद्धि ३६वें वर्ष के बाद ही प्राप्त करता है।

ऐसे व्यक्ति की प्रारम्भिक अवस्था सन्तोषजनक नहीं कही जा सकती। जीवन का मध्यकाल और उत्तरकाल ही श्रेष्ठ होता है तथा धन, मान, यश पदवी और प्रतिष्ठा से सम्पन्न होता है।

टूटी हुई भाग्य-रेखा उन्नति में बाधा बताती है, शृंखलाबद्ध भाग्योन्नति में रुकावटें, द्वीप भाग्योदय के मार्ग में परेशानियाँ, तथा वृत्त भाग्योदयहीनता का सूचक है। यदि ऐसी रेखा की कोई शाखा गुरु-पर्वत की ओर जाती हो तो व्यक्ति नौकरी में, तथा सूर्य-पर्वत की ओर जाती हो तो व्यक्ति व्यापार में अपूर्व सफलता प्राप्त करता है।

सप्तमावस्था—यह भाग्य-रेखा हृदय-रेखा से निकलती है। किसी व्यक्ति के हाथ में यह सीधी ही शनि-क्षेत्र तक जाती है, किसी के हाथ में द्विजिह्वी बनकर, तो किसी-किसी के हाथ में मैंने इस रेखा

को त्रिशूलवत् भी देखा है, जिसका एक सिरा सूर्य-पवत पर, दूसरा शनि तथा तीसरा गुरु-पर्वत पर पहुँचता है। यह एक श्रेष्ठ लक्षण है। जिस स्थान से यह तीन भागों में विभक्त होती है, आयु के उस भाग में व्यक्ति उन्नति की ओर बढ़ने लगता है, भाग्य इसका साथ देता है, तथा इस आयु के बाद यह जिस कार्य में भी हाथ डालता है, सफलता प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति परोपकारी, धर्मात्मा और परलोक की चिन्ता करनेवाला होता है। यह व्यक्ति लाखों-करोड़ो रुपयों का स्वामी होता है। व्यापार में यह अतुलनीय धन कमाता है, तथा जीवनभर धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करने में लगा रहता है। ऐसा व्यक्ति इहलोक और परलोक, दोनो को सुधार लेता है।

इस रेखा के बीच यदि द्वीप हो तो व्यक्ति को उस आयु-विशेप में बदनामी उठानी पड़ती है। जहाँ से ऐसी रेखा टूटी हो, वहाँ भारी आर्थिक हानि सहन करनी पड़ती है, तथा यदि रेखा पर आड़ी रेखाएँ या अवरोधक रेखाएँ हो तो व्यक्ति जीवन में कई बार संघर्षों से उलझता है तथा अन्त में सफलता प्राप्त करता है।

ऐसी रेखा के शनि-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो व्यक्ति अकाल मृत्यु का शिकार होता है। यदि यह रेखा मध्यमा उँगली के पोरुओं पर चढ़ती दिखाई दे, तो व्यक्ति काफी बाधाओं का सामना करता है।

अष्टमावस्था—इसका उद्गम नेपच्यून-क्षेत्र से होता है। अधिकतर हाथों में ऐसी भाग्य-रेखा परतन्त्र ही देखी गई है, परन्तु कुछ हाथों मे यह स्वतन्त्र-रेखा के रूप मे भी विकसित होती है।

यदि यह रेखा निर्दोष, स्पष्ट और गहरी हो तो विद्यार्थी का बाल्यकाल सानन्द व्यतीत होता है, तथा श्रेष्ठ विद्या से भूषित होता है। ऐसे बालक कुशाग्रबुद्धि होते हैं, तथा अपने स्वतन्त्र विचार रखते हैं। यद्यपि ऐसे बालकों की सामाजिक स्थिति इनके अनुकूल नहीं होती, फिर भी ये बाहरी व्यक्तियों के संरक्षण में अपना पथ टटोल लेते हैं तथा आगे बढ़कर उन्नति के पथ को पकड़ लेते हैं।

ऐसा व्यक्ति सफल लेखक, दार्शनिक, तार्किक, वकील, न्यायाधीश या वक्ता होता है। थोड़े-बहुत रूप में ये सभी गुण उसमें विद्यमान

होते हैं। ऐसे व्यक्तियों का गार्हस्थ्य जीवन सुखकर होता है।

ऐसे व्यक्ति निश्चय ही विदेश-यात्रा करते हैं। यदि ऐसी रेखा टूटी हुई, शृङ्खलाकार, लहरिदार या द्वीपयुक्त हो तो शुभ फल में बाधा पहुँचती है, तथा बढ़ते हुए उत्कर्ष में रुकावट आती है, साथ ही इनके जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं।

त्रिमुँही भाग्य-रेखा होने पर व्यक्ति दुहरी प्रगति करता है, तथा उसकी वृद्धावस्था सुखमय बीतती है।

भवभाग्यरेखा—इस भाग्य-रेखा का उद्गम चन्द्र-पर्वत से होता है। यदि ऐसी रेखा शनि-पर्वत पर दोमुँही या तीनमुँही बन जाय, तो श्रेष्ठतम फल देती है, तथा वह व्यक्ति जीवन में एक से अधिक कार्यों या उपायों से धन अर्जित करता है। यदि ऐसी त्रिमुँही रेखा की एक शाखा गुरु-पर्वत की ओर जा रही हो तो व्यक्ति अपने कार्यों, व्यवसाय या लेखन से श्रेष्ठ धन अर्जित करता है। ऐसा व्यक्ति कोमल स्वभाव रखनेवाला, दीनों का रक्षक तथा परोपकारी होता है। यदि इसकी एक शाखा रवि-पर्वत पर जा रही हो तो व्यक्ति व्यापार से प्रचुर धन कमाता है, परिस्थितियों के अनुसार वह धार्मिक कार्यों में व्यय करता है, तथा समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त करता है।

यदि ऐसी रेखा मध्यमा उँगली के पोरुओं पर चढ़ रही हो, या दूषित, टूटी हुई, शृंखलाकार हो तो व्यक्ति को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

इस भाग्य-रेखा को रखनेवाले व्यक्ति स्वतन्त्र निर्णय लेने में असफल रहते हैं। विवाहोपरान्त ही इनका भाग्योदय होता है, तथा इनकी बुद्धि चंचल एवं मन अस्थिर होता है। इनका जीवन रंगीलियों से सराबोर रहता है। यदि इनका विवाह २२वें वर्ष तक नहीं होता तो ये चरित्रहीन भी हो जाते हैं। जलयात्रा का योग इनके जीवन में प्रबल होता है।

मैंने ऐसे व्यक्तियों में से अस्सी प्रतिशत व्यक्तियों को प्रेम-विवाह करते देखा है। यदि शुक्र-क्षेत्र उठा हुआ होता है, तो ये निश्चय ही विजातीय स्त्री से विवाह करते हैं।

ऐसे व्यक्ति एकान्तप्रेमी, सहृदय और भावुक होते हैं।

दशमावस्था—इस प्रकार की भाग्य-रेखा रखनेवाला व्यक्ति उच्च पद प्राप्त कर जीवन को सुखमय बनाने में समर्थ होता है ; वायुसेना का प्रधान या वायुयान-चालक बनता है। यह व्यक्ति इंजीनियर, पायलेट अथवा अणु-विज्ञानी होता है। जीवन में ये कई बार राज्यस्तरीय पुरस्कार प्राप्त कर सम्मानित होते हैं। युद्ध के दिनों में ऐसे व्यक्ति स्थिरचित्त बने रहते हैं। साहस और धैर्य की इनमें कमी नहीं रहती।

मध्यमा उँगली पर चढ़नेवाली, टूटी हुई, लहरदार या शृंखला-युक्त ऐसी रेखा भाग्योन्नति में बाधक कही गई है। यदि यह रेखा स्पष्ट और निर्दोष होकर शनि-पर्वत पर जाती हो तथा इसकी एक शाखा गुरु-पर्वत पर गई हो तो व्यक्ति अतुलनीय धनाधीश और सम्मान का अधिकारी होता है।

एकादशावस्था—ऐसी भाग्य-रेखा विरले लोगों के हाथों में ही पाई जाती है। ये व्यक्ति संसार में धूमकेतुवत् चमकते हैं, तथा अपने कार्यों से, व्यवहार से तथा निर्णयों से सभी को प्रभावित करते हैं, योजनाबद्ध रूप में करते हैं। एक साधारण कुल में जन्म लेकर भी ये अत्यन्त उच्च स्थान पर पहुँचते हैं, अपने ही प्रयत्नों से धनार्जन कर धनकुबेर बनते हैं, तथा चिर-लक्ष्मी एवं स्थायी कीर्ति के अधिकारी बनते हैं। श्री घनश्यामदास जी बिड़ला के हाथों में ऐसी रेखा देखी जा सकती है।

यदि यह रेखा द्विजिह्वीवत् होकर शनि-क्षेत्र पर स्थिर हो तो व्यक्ति उच्च पद का अधिकारी होता है, तथा जीवन में समस्त प्रकार के सुखों का भोग करता है। यदि इनमें से एक शाखा गुरु-पर्वत पर जा रही हो तो व्यक्ति राजदूत बनता है।

मैंने एक बार जब एक राज्यस्तर के मंत्री को कहा था कि तीन महीनों के भीतर-भीतर आप किसी देश में राजदूत बनोगे, तथा भारत के हितों का प्रतिनिधित्व करोगे तो वह जोरों से हँसा था, क्योंकि उस समय ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं था, और न कोई ऐसी चर्चा ही थी ; पर जब दो महीने बाद ही उसने अकस्मात् राजदूत होने का सुना, तो आश्चर्यचकित रह गया, और रात को डेढ़ बजे जगाकर मुझे

शनि, जीवन, हृदय व मानस रेखाओं पर समय-निर्धारण

फोन पर संदेश देकर रेखाओं की सत्यता में विश्वास किया था। वस्तुतः ऐसी रेखा व्यक्ति को ऐसे महत्त्वपूर्ण पद पर पहुँचाती ही है।

हमने ग्यारह प्रकार से भाग्य-रेखाओं के उद्गम-स्थल तथा उनसे सम्बन्धित फलादेश का विवेचन किया। जिज्ञासुओं को चाहिए कि वे धैर्यपूर्वक इस रेखा का अध्ययन करें, क्योंकि कई लोगों के हाथों में यह रेखा नहीं भी दिखाई देती, पर कई लोगों के हाथों में दो-तीन और चार-चार भाग्य-रेखाएँ भी देखने को मिल जाती हैं।

यदि एक से अधिक भाग्य-रेखाएँ बन रही हों, और उनकी समाप्ति शनि-पर्वत पर हो रही हो तो दोनों रेखाओं का मिला-जुला फलादेश उसके जीवन में घटित होता है। भाग्य-रेखाएँ नीचे से ऊपर की ओर जाती हैं। पूरी भाग्य-रेखा को नापकर १०० भागों में बाँट देना चाहिए, और फिर उस रेखा के बीच में जहाँ अवरोध हों, आयु के उस भाग में अड़चनें, तथा जहाँ श्रेष्ठता हो आयु के उस भाग में सफलता बतानी चाहिए।

शनि-रेखा या भाग्य-रेखा में से ऊपर की ओर निकलनेवाली महीन रेखाएँ व्यक्ति के उन्नत भविष्य और महत्त्वाकांक्षाओं की सूचक होती हैं। नीचे की ओर गिरती हुई महीन रेखाएँ परेशानियों, कठिनाइयों तथा विफलता की सूचक हैं।

भाग्य-रेखा : कुछ विशेष तथ्य—

१—भाग्य-रेखा में से निकलकर कोई शाखा जिस पर्वत पर भी पहुँचती है, व्यक्ति के जीवन में उन गुणों का प्रभाव बढ़ जाता है।

२—यदि भाग्य-रेखा चलते-चलते एकदम रुक जाय, और दूसरी भी किसी रेखा को आगे न बढ़ने दे, तो व्यक्ति के जीवन में उस आयुविशेष में एक गहरा मोड़ आयेगा, तथा जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन करने में समर्थ होगा।

३—भाग्य-रेखा जहाँ-जहाँ भी साफ, निर्दोष और गहरी हो, आयु के उस भाग में विशेष लाभ मिलने की संभावना रहती है।

४—भाग्य-रेखा बीच में जितनी बार टूटती है, व्यक्ति को जीवन में उतनी ही बार प्रबल भाग्य के धक्के खाने पड़ते हैं।

५—भाग्य-रेखा के साथ सहायक रेखा हो तो शुभ कही जाती है।

६—भाग्य-रेखा में से कुछ शाखाएँ निकलकर ऊपर की ओर बढ़ रही हों तो व्यक्ति के भाग्योदय में प्रबलता लाती है।

७—अपने उद्गम-स्थल पर ही यदि भाग्य-रेखा दो-तीन या चार शाखाओं में बँट गई हो तो व्यक्ति कई बार यात्राएँ करता है तथा यात्राओं से ही उसका भाग्योदय होता है।

८—उद्गम-स्थल से ही यदि कोई शाखा निकलकर शुक्र-पर्वत की ओर गई हो तो व्यक्ति विदेशों में भाग्योदय प्राप्त करता है।

९—भाग्य-रेखा पर जितनी ही आड़ी रेखाएँ होंगी, वे भाग्य की उन्नति में अवरोधक होंगी।

१०—यदि शनि-पर्वत पर ही भाग्य-रेखा को आड़ी रेखाएँ काटें या तारे का चिह्न बन जाय, तो व्यक्ति की वृद्धावस्था अत्यन्त कष्टकर और दुःखद होती है।

११—यदि भाग्य-रेखा और विवाह रेखा परस्पर मिल जायँ, तो व्यक्ति वैवाहिक जीवन में घोर दुःख और परेशानियाँ उठाता है।

१२—यदि कोई प्रभावक रेखा भाग्य-रेखा से मिले, तो व्यक्ति के विवाह में बाधा उपस्थित होती है, तथा उसका विवाह विजातीय होता है।

१३—प्रभावक-रेखा जितनी अधिक स्पष्ट और गहरी होती है, उतनी ही भाग्य को बढ़ानेवाली होती है।

१४—भाग्य-रेखा पर धन का चिह्न शुभ माना गया है।

१५—भाग्य-रेखा गहरी, निर्दोष और स्पष्ट होती है, तो व्यक्ति शीघ्र ही प्रगति करता है।

प्रेक्षकों को भाग्य-रेखा का अध्ययन अत्यन्त गम्भीरता से कर शुभाशुभ वर्णित करना चाहिए।

१२

स्वास्थ्य-रेखा

मानव-जीवन में धन, मान, पद, प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य से भी स्वास्थ्य को अधिक महत्त्व दिया गया है, क्योंकि यदि व्यक्ति के पास समस्त सुख और ऐश्वर्य है, परन्तु वह रुग्ण है, तो उसके लिए यह सब धन, मान और ऐश्वर्य व्यर्थ है। मानव की हथेली में सबसे पहले जीवन का महत्त्व है और उसके बाद ही स्वास्थ्य का महत्त्व है, इसलिए *जीवन-रेखा के बाद ही स्वास्थ्य-रेखा का सुचारु दर्शन, परीक्षण और* अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

स्वास्थ्य का पूरा प्रभाव उसके समस्त कार्यकलापों पर पड़ता है। वह तभी सफल हो सकता है, जबकि उसका स्वास्थ्य उसे साथ दे। अतः हथेली में स्वास्थ्य-रेखा का महत्त्व नगण्य नहीं समझना चाहिए।

स्वास्थ्य-रेखा का उदय हथेली में कहीं से भी देखा जा सकता है, पर एक बात स्पष्ट है कि इसकी समाप्ति बुध-पर्वत पर आकर होती है; परन्तु यह भी कोई सर्वमान्य तथ्य नहीं है। कई बार स्वास्थ्य-रेखा बुध-पर्वत पर नहीं भी पहुँच पाती; ऐसी दशा में एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि जिस रेखा का उद्गम हथेली के नीचे के भाग से कहीं से भी हो, और जो रेखा बुध-पर्वत पर पहुँचती हो, या जिसका झुकाव बुध-पर्वत की ओर हो, वह स्वास्थ्य-रेखा कहलाने की अधिकारी है। ऐसी रेखाएँ कई बार मस्तिष्क-रेखा के पास, तो कई बार हृदय-रेखा के पास ही आकर रुक जाती हैं, हाँ, उनका झुकाव अवश्य बुध-पर्वत की ओर होता है। ऐसी रेखा को बुध-रेखा, जिगर-रेखा या स्वास्थ्य-रेखा ही समझना चाहिए।

हथेली में यह रेखा शुक्र-पर्वत से, जीवन-रेखा से, हृदय-रेखा से, मणिबन्ध से, चन्द्र-पर्वत से, और भाग्य-रेखा से भी प्रारम्भ होते देखी गई है, परन्तु सभी रेखाओं का झुकाव निश्चय ही बुध-पर्वत की ओर होता है।

इस रेखा का अध्ययन करते समय यह समझ लेना चाहिए कि यह रेखा जितनी ही अधिक निर्दोष, स्पष्ट और गहरी होती है, उतनी ही श्रेष्ठ कही जाएगी। ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य उत्तम कोटि का होगा, तथा शरीर सुगठित और प्रभावशाली बना रहेगा। इसके विपरीत यदि स्वास्थ्य-रेखा कटी-फटी, लहरदार या शृंखलादार होगी, व्यक्ति उतना ही स्वास्थ्य से वंचित होगा। स्वास्थ्य-रेखा का निर्दोष होना सफल व्यक्ति के लिए परमावश्यक है।

कई व्यक्तियों के हाथों में स्वास्थ्य-रेखा का अभाव भी दिखाई देता है। जहाँ तक मेरा अनुभव है, हाथ में इस रेखा का अभाव एक शुभ चिह्न है। जिस व्यक्ति के हाथ में स्वास्थ्य-रेखा नहीं होती वे सबल, स्वस्थ एवं आकर्षक जिन्दगी जीनेवाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति बीमारियों से दूर रहते हैं। दूसरे मनुष्यों की अपेक्षा ये व्यक्ति अधिक क्रियाशील, परिश्रमी तथा पुरुषार्थी होते हैं।

चौड़ी और सुन्दर रेखा गिरे हुए स्वास्थ्य और शक्ति की प्रतीक है। यदि बुध-रेखा या स्वास्थ्य-रेखा शृङ्खलित हो तो ऐसा व्यक्ति आमाशय रोग से पीड़ित रहता है, उसका स्नायु-संस्थान दुर्बल और अशक्त होता है।

लहरदार बुध-रेखा व्यक्ति की यकृत बीमारी को प्रदर्शित करती है। पीलिया, मलेरिया आदि रोगों से ये कई बार ग्रसित होते हैं। यदि स्वास्थ्य-रेखा टुकड़ों के रूप में हो तो व्यक्ति जीवनभर आमाशय-सम्बन्धी रोगों से दुःखित रहता है। स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु व्यक्ति की घोर अस्वस्थता प्रकट करते हैं। यदि स्वास्थ्य-रेखा को जगह-जगह पर अवरोधक रेखाएँ काटती हों तो व्यक्ति जीवन-भर बीमार रहता है।

स्वास्थ्य-रेखा : कुछ विशेष तथ्य—

१—स्वास्थ्य-रेखा जितनी अधिक लम्बी और निर्दोष होती है,

यह उतनी ही अधिक श्रेष्ठ एवं शुभ फलदायी मानी गई है। इस रेखा का उद्गम स्थल अधिकतर मणिबन्ध होता है।

२—यदि हथेली में स्वास्थ्य-रेखा लाल या सुर्ख रंग की हो तो व्यक्ति को अत्यन्त भोगी, कामुक और व्यभिचारी समझना चाहिए। यह व्यक्ति अपनी वंश-मर्यादा को मिटानेवाला होता है।

३—यदि इस प्रकार की लाल रंग की स्वास्थ्य-रेखा हृदय रेखा तक आकर समाप्त हो जाय, तो व्यक्ति का हृदय अत्यन्त कमजोर समझना चाहिए, तथा उसे जीवन-भर हृदय-सम्बन्धी बीमारी बनी रहती है।

४—यदि स्वास्थ्य-रेखा छोटी तथा लाल रंग की होकर हृदय-रेखा से निकल रही हो तो व्यक्ति तिल्ली या मदाग्नि रोग से पीड़ित रहता है।

५—बुध-रेखा में से छोटी-छोटी रेखाएँ निकलकर ऊपर की ओर बढ़ रही हों, तो व्यक्ति उत्तम स्वास्थ्य रखनेवाला तथा नीरोग होता है। परन्तु यदि इस प्रकार की प्रशाखाएँ नीचे की ओर जा रही हों तो अशुभ स्वास्थ्य की ही परिचायक हैं।

६—यदि बुध-रेखा में से कोई प्रशाखा निकलकर शनि-पर्वत की ओर जा रही हो तो व्यक्ति अध्ययनशील और गम्भीर होता है। यदि ऐसी प्रशाखा सूर्य-पर्वत पर जा रही हो तो वह प्रखर बुद्धिवाला तथा प्रतिभासम्पन्न होता है। यदि बुध-रेखा में चन्द्र-रेखा आकर मिल रही हो तो व्यक्ति सफल कवि, लेखक या वक्ता होता है।

७—यदि हथेली में स्वास्थ्य-रेखा हृदय-रेखा को काट रही हो तो व्यक्ति मूर्च्छा या रक्तचाप की बीमारी से ग्रस्त रहता है।

८—यदि स्वास्थ्य-रेखा पीले रंग की हो तो व्यक्ति के शरीर में रक्त की कमी स्पष्ट रहती है। ऐसे व्यक्ति को धातुक्षीणता की बीमारी भी होती है।

९—लहरदार स्वास्थ्य-रेखा व्यक्ति की पेट-सम्बन्धी बीमारियों को स्पष्ट करती है। ऐसी लहरदार रेखा भाग्य-रेखा को छुए तो भाग्य में कमी करती है, मस्तिष्क-रेखा को छुए तो मस्तिष्क विकृत बनाती है तथा रवि-रेखा को छुए तो पद-प्रतिष्ठा में व्याघात उपस्थित

करती है। ऐसी रेखा यदि बुध-पर्वत पर बनी हो तो व्यक्ति को व्यापार में जबरदस्त धक्का लगता है, तथा उसे घाटा उठाना पड़ता है। शुक्र-क्षेत्र पर ऐसी रेखा की उपस्थिति प्रेम में असफलता को व्यक्त करती है।

१०—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप का चिह्न हो तो व्यक्ति के फेफड़े कमजोर होते हैं, तथा फेफड़ों-सम्बन्धी बीमारी से वह ग्रस्त रहता है।

११—यदि स्वास्थ्य-रेखा का रंग गुलाबी हो, तथा इसके आस-पास कई छोटी-छोटी रेखाएँ हों तो व्यक्ति रक्त-सम्बन्धी बीमारियों से ग्रस्त रहता है।

१२—यदि स्वास्थ्य-रेखा कहीं पर चमकदार तथा कहीं पर धीमी हो, या टुकड़े-टुकड़े हो तो व्यक्ति जीवन-भर रोगी रहता है; साथ ही आयु के उस भाग में, जहाँ स्वास्थ्य-रेखा टूटी हुई है, उसे मरणान्तक कष्ट उठाना पड़ता है।

१३—यदि स्वास्थ्य-रेखा पीली हो तो व्यक्ति कफ-प्रकृति-प्रधान होता है। ऐसा व्यक्ति जुकाम आदि रोगों से पीड़ित रहता है; उसके चेहरे पर सुस्ती तथा मुर्दनी छाई रहती है।

१४—यदि स्वास्थ्य-रेखा मस्तिष्क-रेखा से मिलकर त्रिकोण बनाती हो तो व्यक्ति का मस्तिष्क उर्वर होता है, तथा वह जीवन में समस्त क्षमताओं का पूरा-पूरा उपयोग करता है।

१५—यदि बुध-रेखा का अन्त बीच में ही कहीं पर आड़ी रेखा से हो तो व्यक्ति का भयंकर एक्सीडेंट होता है।

१६—यदि स्वास्थ्य-रेखा जंजीरदार हो तो व्यक्ति स्वास्थ्य की ओर से सदैव चिंतित रहता है, तथा वह किसी भी लम्बी बीमारी से ग्रस्त रहता है।

१७—यदि स्वास्थ्य-रेखा के मार्ग में राहु-क्षेत्र पर द्वीप का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति निस्सन्देह राजयक्ष्मा के रोग से पीड़ित रहता है।

१८—यदि मस्तिष्क-रेखा पर द्वीप का चिह्न हो तो व्यक्ति मस्तिष्क-सम्बन्धी बीमारी से ग्रस्त रहता है, अर्थात् हथेली में स्वास्थ्य-

रेखा को छूते हुए जहाँ भी द्वीप का चिह्न होगा, उस रेखा के प्रभाव को तथा उस पर्वत के प्रभाव को धूमिल बना देगा।

१९—स्वास्थ्य-रेखा यदि अत्यधिक गहरी हो तो व्यक्ति गुप्त-रोग से पीड़ित रहता है।

२०—यदि बुध-रेखा पर ऊपर की ओर क्रॉस हो तो व्यक्ति को अन्धेपन का खतरा रहता है। बुध-रेखा पर पड़नेवाले क्रॉस स्वास्थ्य के लिए हानिकारक ही कहे गए हैं।

२१—बुध-रेखा पर यदि नक्षत्र हो तो व्यक्ति को पारिवारिक सुख का अभाव रहता है।

२२—यदि बुध-रेखा तथा प्रणय-रेखा संगम हो जाय तो व्यक्ति की पत्नी उम्रभर रुग्ण रहती है।

२३—यदि बुध-रेखा का अन्त किसी नक्षत्र से होता है तो व्यक्ति को जीवन में असाधारण सफलता मिलती है।

२४—यदि स्वास्थ्य-रेखा दोहरी हो तो व्यक्ति के भाग्य को बढ़ानेवाली होती है। यदि ऐसी दोहरी रेखा सूर्य-पर्वत को भी छूती हो तो व्यक्ति राजनीति में उत्तम पद तक पहुँचता है।

२५—यदि मस्तिष्क-रेखा और हृदय-रेखा दोनों बुध-पर्वत के नीचे मिलती हों तो व्यक्ति की असामयिक मृत्यु होती है।

२६—यदि मानस-रेखा शनि-रेखा को पार करने से पूर्व ही समाप्त हो जाय, तथा उसपर क्रॉस का चिह्न बना हुआ हो तो व्यक्ति का असामयिक निधन होता है।

२७—बुध-रेखा पर विचार करते समय हस्तरेखाविद् को नाखून का भी सम्यक् अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि नाखून भी बुध-रेखा के सहायक माने गये हैं।

२८—नाखूनों पर पीली धारियाँ तथा जीवन-रेखा का अभाव व्यक्ति की मृत्यु का पूर्वसंकेत है।

२९—यदि जीवन-रेखा क्रमशः क्षीण पड़ती जाय, और क्षीण होते-होते उसके अन्त में बिन्दु या तारे का चिह्न बन जाय, तो व्यक्ति की मृत्यु शीघ्र ही समझनी चाहिए।

३०—यदि नाखून गंदगी हो जाय, तथा जीवन-रेखा कई धाराओं

में बैठकर मणिबन्ध का छूती हो तो व्यक्ति की मृत्यु शीघ्र समझनी चाहिए।

३१—स्वास्थ्य-रेखा पर जाली होना भी क्षीण उम्र का संकेत है।

३२—यदि यात्रा-रेखा, जीवन-रेखा, तथा स्वास्थ्य-रेखा तीनों का संयोग हो तो व्यक्ति की मृत्यु यात्रा में होती है।

३३—स्वास्थ्य-रेखा के चन्द्र-पर्वत पर जाली का बनना उस आयु-विशेष में मृत्यु का सूचक है।

३४—नीले नाखून स्नायविक बीमारियाँ बताते हैं। इसी प्रकार जरूरत से बड़े नाखून भी रोगवर्धक कहे गये हैं।

३५—यदि नीलिमा लिये हुए त्रिकोण नाखून हों तथा स्वास्थ्य-रेखा एवं जीवन-रेखा का अन्त नक्षत्र से हो तो व्यक्ति पक्षाघात से बीमार रहता है।

३६—कटी हुई मानस-रेखा तथा अत्यन्त छोटे नाखून मिर्गी के चिह्न हैं।

३७—धारियोंवाले सँकरे नाखून भी व्यक्ति के स्वास्थ्य में कमी ही बताते हैं।

३८—बुध-रेखा लहरदार हो, तथा जीवन-रेखा धूमिल और कटी-फटी हो तो व्यक्ति गठिया की बीमारी से दुःखी रहता है।

३९—उत्तम स्वास्थ्य-रेखा या स्वास्थ्य-रेखा का अभाव ही योग्य एवं सफल जीवन के लिए श्रेयस्कर रहता है।

ऊपर हमने स्वास्थ्य-रेखा तथा उससे सम्बन्धित कुछ रोगों का जिक्र किया। यों तो यह विषय इतना बड़ा है कि इसके लिए पृथक् पुस्तक की रचना हो, फिर भी पाठकों की जानकारी के लिए कुछ प्रमुख रोगों का वर्णन इस अध्याय में कर दिया है। प्रेक्षक यदि सावधानीपूर्वक स्वास्थ्य-रेखा का अध्ययन करे, तो वह रोग होने का निश्चित समय स्पष्ट कर सकता है। मेरा अपना अनुभव इसमें रहा है, और कई महीनों पहले इस रेखा के आधार पर जो बीमारियाँ तथा उनके होने का जो समय बताया वह शत-प्रतिशत सही उतरा। अतः यह तो निर्विवाद है कि यदि प्रेक्षक लगन, मनन तथा परिश्रम से इस

रेखा का अध्ययन करें, तो अपने फलादेश में पूर्णतः सही उतर सकता है।

१२

विवाह-रेखा

पूरे शरीर में हृदय एक विचित्र-सा अवयव है। एक तरफ यह समस्त शरीर को खून पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है, तो दूसरी तरफ यह अपने-आप में इतनी सूक्ष्म और कोमल कल्पनाएँ रखता है कि जिसको समझना किसी के बूते की बात नहीं। यह कोमल इतना होता है कि छोटी-सी बात से भी इसको इतनी अधिक ठेस लगती है कि यह बिल्लोरी काँच की तरह टूटकर चूर-चूर हो जाता है। यह एक प्रतीक है अनुभूतियों का, सुन्दर स्वप्न है मानवीय कल्पनाओं का और कोष है सद्भावना, करुणा, ममत्व, सहानुभूति और स्नेह का।

हृदय की पूर्ति होती है एक-दूसरे हृदय से, जो उसी की तरह कोमल कल्पनाओं से ओतप्रोत हो, जिसमें प्यार का सागर ठाठें मार रहा हो, और जिसकी अनुभूति रोम-रोम में गुदगुदी मचा देने में समर्थ हो। इसीलिए भारतीय आर्य ऋषियों ने वर्णाश्रम की व्यवस्था करते हुए गृहस्थाश्रम को सर्वाधिक महत्त्व दिया है।

वस्तुतः मानव-जीवन तभी सफल कहा जाता है, जब उसका अर्द्धांग भी पूर्णतः उसके साथ एकाकार हो गया हो। जिसके घर में सुलक्षणा, सुशील, सुन्दर और शिक्षित पत्नी हो, वह घर निश्चय ही इन्द्रभवन से बढ़कर है। इसीलिए हस्त-रेखा का अध्ययन करते समय जितना महत्त्व जीवन, धन, यश, स्वास्थ्य और पराक्रम को दिया जाना चाहिए, उतना ही पत्नी और विवाह को भी।

जीवन के कण्टकाकीर्ण पथ को पार करने के लिए सहयोगी क जरूरत होती है। यदि यह सहयोगी हमारे जीवन को समझनेवाला होता है, दुःख मे धैर्य बँधाने और प्रसन्नता में किलकनेवाला होता है, तो जीवनपथ सानन्द पार किया जा सकता है। यह जीवन-साथी चाहे विवाह से प्राप्त किया जाय चाहे प्रेम से, है यह सौभाग्य की बात मानव के जीवन में प्रफुल्लता और प्रसन्नता की बात !

काम (सेक्स) मानव की प्राथमिक आवश्यकता है। फ्रायड औ युङ्ग ने तो यहाँ तक सिद्ध कर दिया है कि जीवन में हम छोटे-से-छोट और बड़े-से-बड़ा जो भी कार्य करें, उसके मूल में यही काम-भावन रहती है।

विवाह-रेखा, प्रणय-रेखा, प्रेम-रेखा, वासना-रेखा या परिणय रेखा देखने मे तो छोटी-सी होती है, पर इसका महत्त्व छोटा नहं समझना चाहिए। यह रेखा कनिष्ठिका उँगली के नीचे बुध-क्षेत्र पर हृदय-रेखा के ऊपर, बुध-क्षेत्र के बाहर की ओर से हथेली के अन्दर की ओर आती दिखाई देती है, यही विवाह-रेखा कहलाती है।

ये रेखाएँ दो, तीन या चार भी होती हैं, परन्तु इनमें से एक सर्वाधिक मुख्य होती है। ये रेखाएँ यदि हृदय-रेखा के मूलोद्गम से ऊपर की ओर हो, तो व्यक्ति का विवाह निश्चित रूप से होता है, परन्तु ये रेखाएँ यदि हृदय-रेखा के नीचे हों, तो उसका विवाह असम्भव ही समझना चाहिए।

अब एक प्रश्न उठता है कि यदि ये विवाह-रेखाएँ एक से ज्यादा हों तो उसका तात्पर्य क्या होगा ? यह मैं स्पष्ट कह आया हूँ कि इनमें एक रेखा मुख्य होती है जो लम्बी, स्पष्ट, गहरी और हथेली के अन्दर घुसती-सी प्रतीत होती है ; यही विवाह-रेखा है और यह स्पष्ट करती है कि व्यक्ति का एक बार विवाह अवश्य होगा। हाँ, यदि ऐसी ही स्पष्ट, गहरी और लम्बी दो या तीन रेखाएँ हों, और वे सभी हथेली के भीतर घुसने का प्रयत्न कर रही हों, तो उस व्यक्ति के दो या तीन विवाह भी हो सकते हैं। ऐसी जितनी रेखाएँ होंगी, व्यक्ति के उतने ही विवाह होते हैं।

पर इसके साथ-साथ जो छोटी-छोटी रेखाएँ होती हैं और मुख्य-

प्रणय और परिणय रेखाए
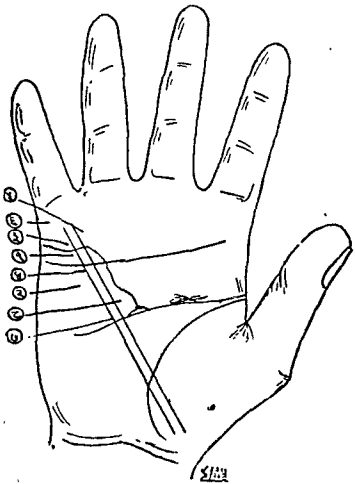
रेखा के समानान्तर होती हैं, उनका महत्त्व भी कम नहीं। ऐसी रेखाएँ जीवन में संख्यारूप से विरोधी योनि का प्रवेश स्पष्ट करती है, अर्थात् ऐसी जितनी भी रेखाएँ होंगी, व्यक्ति उतनी ही स्त्रियों से अनैतिक सम्बन्ध रखेगा। यही बात स्त्रियों के लिए पुरुषों के रूप में लागू समझनी चाहिए।

पर इसके साथ-ही-साथ पर्वतों का उभार भी ध्यान में रखना चाहिए। यदि इस प्रकार की रेखाएँ हों, और गुरु का पर्वत सर्वाधिक उन्नत हो, तो व्यक्ति इतने ही प्रेम-सम्बन्ध स्थापित करता है। शनि-पर्वत प्रधान हो, तो व्यक्ति अपने से प्रौढ़ स्त्रियों से सम्पर्क रखता है। रवि-पर्वत प्रधान हो, तो व्यक्ति सोच-समझकर प्रणय के क्षेत्र में कदम रखता है। चन्द्र-पर्वत प्रधान हो तो व्यक्ति कामुक, भावुक तथा स्त्रियों के पीछे मारा-मारा फिरनेवाला होता है, तथा यदि शुक्र-पर्वत प्रधान हो तो व्यक्ति प्रणय में पूरी सफलता प्राप्त करता है। उसके जीवन में स्त्रियों की कमी नहीं रहती, तथा वह सभी के साथ सहभोग कर आनन्द लूटने में समर्थ होता है।

प्रणय-रेखा का हृदय-रेखा से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। प्रणय-रेखाएँ हृदय-रेखा के जितनी अधिक नजदीक होंगी, व्यक्ति की उतनी ही कम उम्र में इस प्रकार की घटनाएँ घटित होंगी, तथा यदि ऐसी प्रणय-रेखाएँ हृदय-रेखा से दूर होंगी तो ये घटनाएँ जीवन-वृद्धि के साथ-साथ ही घटित होंगी।

यदि इस प्रकार की छोटी-छोटी प्रणय-रेखाएँ न हों, तो व्यक्ति संयमी होते हैं, तथा अधिक कामेच्छु नहीं होते।

प्रणय-रेखा का अध्ययन सावधानी चाहता है। यदि प्रणय-रेखा गहरी और लम्बी होगी तो व्यक्ति के प्रणय-सम्बन्ध भी गहरे और दीर्घ-काल तक के लिए होंगे। इसके विपरीत यदि ये प्रणय-रेखाएँ सँकरी, सूक्ष्म तथा छोटी होती हैं, तो व्यक्ति के प्रणय-सम्बन्ध भी कम काल तक ही रहते हैं।

यदि दो प्रणय-रेखाएँ साथ-साथ चल रही हों तो इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति दो स्त्रियों से वासनात्मक सम्पर्क साथ-साथ रखेगा। यदि प्रणय-रेखा पर द्वीप का चिह्न हो, तो व्यक्ति के प्रणय की समाप्ति

अत्यन्त दुःखदायी होती है। यदि प्रणय-रेखा पर क्रॉस का चिह्न हो तो व्यक्ति का प्रेम बीच में ही टूट जाता है। यदि प्रणय-रेखा पर नक्षत्र हो तो प्रेम के कारण बदनामी ओढ़नी पड़ती है, और यदि प्रणय-रेखा बढ़कर सूर्य-पर्वत को छूती है तो उसका विवाह अत्यन्त प्रसिद्ध व्यक्ति से या आई०ए०एस० अधिकारी से होता है।

यदि प्रणय-रेखा आगे जाकर दो शाखाओं में बंट जाय, तो व्यक्ति का प्रणय-सम्बन्ध बीच में ही भंग हो जाता है। प्रणय-रेखा में से यदि कोई रेखा निकलकर नीचे की ओर जा रही हो तो व्यक्ति का वैवाहिक या प्रणयी जीवन दुःखदायी होता है। यदि प्रणय-रेखा से कोई रेखा ऊपर की ओर उठती हो तो व्यक्ति का वैवाहिक जीवन अत्यन्त सुखी समझना चाहिए। बीच में टूटी हुई प्रणय-रेखा से प्रणय-सम्बन्धों का बीच में ही विच्छेद समझना चाहिए।

विवाह-रेखा : कुछ नवीन तथ्य—

१—यदि विवाह-रेखा कनिष्ठिका उँगली के तीसरे या दूसरे पोरुए पर चढ़े तो व्यक्ति आजीवन कुँआरा ही रहेगा, ऐसा समझना चाहिए।

२—यदि यह विवाह-रेखा निम्नोन्मुख होकर हृदय-रेखा की ओर बहुत अधिक झुक जाय तो उसकी स्त्री की मृत्यु बहुत शीघ्र समझनी चाहिए। स्त्री के हाथ में यह पुरुष के लिए लागू होगी।

३—यदि यह प्रणय-रेखा आगे जाकर द्विजिह्वी या तीन मुँह-वाली हो जाय तो स्त्री-पुरुष के विचारों में मतभेद बना रहेगा, तथा वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण ही रहेगा।

४—यदि प्रणय-रेखा द्विजिह्वी हो और उसकी एक शाखा हृदय-रेखा को छूती हो, तो वह व्यक्ति अपनी पत्नी की अपेक्षा अपनी साली से यौन-सम्बन्ध रखेगा।

५—यदि इस प्रकार से एक शाखा मस्तिष्क-रेखा को छू ले तो व्यक्ति निश्चय ही तलाक देता है। ऐसा व्यक्ति अपनी पत्नी की हत्या भी कर दे तो कोई आश्चर्य नहीं।

६—यदि इस प्रकार प्रणय-रेखा की एक शाखा नीचे की ओर

झुकाकर शुक्र-पर्वत तक पहुँच जाय, तो व्यक्ति का वैवाहिक जीवन मटियामेट ही समझना चाहिए

७—यदि प्रणय-रेखा आगे बढ़कर आयु-रेखा को काटती हो तो व्यक्ति जीवनभर अपनी स्त्री से दुःखी रहता है।

८—यदि प्रणय-रेखा आगे बढ़कर भाग्य-रेखा एवं मस्तिष्क-रेखा से मिलकर त्रिभुज बनावे तो व्यक्ति का वैवाहिक जीवन दुःखदायी ही समझना चाहिए।

९—यदि विवाह-रेखा को कोई आड़ी रेखा काटती हो तो व्यक्ति के वैवाहिक जीवन में व्यवधान समझना चाहिए।

१०—यदि कोई अन्य रेखा द्विजिह्वी प्रणय-रेखा के बीच में घुसती हो तो व्यक्ति का वैवाहिक जीवन किसी तीसरे प्राणी के बीच में आ जाने से दुःखदायी हो जाता है।

११—यदि विवाह-रेखा के प्रारम्भ में द्वीप का चिह्न हो तो व्यक्ति का विवाह कई परेशानियों एवं बाधाओं के बाद होता है।

१२—यदि विवाह-रेखा को सन्तान-रेखाएँ काटती हों, तो व्यक्ति का विवाह असम्भव ही समझना चाहिए।

१३—यदि विवाह-रेखा पर एक से अधिक द्वीप हों तो व्यक्ति जीवन-भर कुँआरा रहता है।

१४—यदि बुध-क्षेत्र पर विवाह-रेखा के समानान्तर दो या तीन रेखाएं चल रही हों तो व्यक्ति का यौन-सम्बन्ध अपनी पत्नी के अतिरिक्त भी दो या तीन स्त्रियों से समझना चाहिए।

१५—यदि विवाह-रेखा चलते-चलते कनिष्ठिका की ओर झुक गई हो तो उसके जीवन-साथी की मृत्यु उससे पूर्व होती है।

१६—विवाह-रेखा जितनी ही गहरी, स्पष्ट और निर्दोष होगी व्यक्ति का वैवाहिक जीवन भी उतना ही सुखी समझना चाहिए।

१७—विवाह-रेखा का अचानक टूट जाना व्यक्ति को वियोगी बनाता है, तथा पति-पत्नी के सम्बन्धों में दरार का संकेत करता है।

१८—यदि बुध-क्षेत्र पर विवाह की दो रेखाएँ समानान्तर हों तो व्यक्ति के दो सम्बन्ध आते हैं, या उसका दो बार विवाह होता है।

१९—यदि विवाह-रेखा सूर्य-रेखा से मिलती हो, तो पत्नी नौकरी

करनेवाली होती है।

२०—विवाह-रेखा के ऊपर अटूट जो बारीक रेखाएँ होती हैं, वे सन्तान-रेखाएँ कहलाती हैं।

२१—दोहरी हृदय-रेखा प्रबल हो तो विवाह-रेखा होने पर भी व्यक्ति अविवाहित ही रहता है।

२२—यदि चन्द्र-पर्वत से या शुक्र-पर्वत से कुछ रेखाएँ निकलकर विवाह-रेखा से मिलती हों, तो व्यक्ति कामुक, व्यसनी और प्रेमी होता है।

२३—यदि मंगल-रेखा से कोई रेखा निकलकर विवाह-रेखा को छूती हो तो व्यक्ति के विवाह में निश्चय ही व्यवधान उपस्थित होता है।

सन्तान-रेखा—विवाह-रेखा पर कुछ खड़ी लकीरें होती है, जो पतली-पतली पर निर्दोष तथा अक्षुण्ण होती हैं, संतान-रेखाएँ कहलाती हैं। ये इतनी अधिक महीन होती है कि कई बार नंगी आँखों से देखना संभव नही, इसलिए अभिवर्द्धक ताल का प्रयोग करने पर ही ये रेखाएँ दिखाई देती हैं। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के हाथो में यह स्पष्टता से देखी जा सकती हैं।

इनमें से जो लम्बी, पुष्ट और स्पष्ट रेखाएँ होती हैं, वे पुत्र-संतान की द्योतक होती हैं, तथा जो रेखाएँ निर्बल, कमजोर तथा पतली होती हैं, वे कन्या-संतान को स्पष्ट करती हैं। यदि इनमे से कोई रेखा बीच में टूटी हुई हो तो उस सतान की मृत्यु समझनी चाहिए।

यदि मणिबन्ध हथेली में धँसा हुआ हो तथा शुक्र-पर्वत का उभार कमजोर हो तो संतानहीनता ही स्पष्ट करती है।

स्पष्ट और सीधी रेखाएँ स्वस्थ संतान को प्रदर्शित करती हैं, तथा हल्की एवं अस्त-व्यस्त रेखाएँ निर्बल सन्तानों की बात बताती हैं।

विवाह-आयु—क्या हस्त-रेखा से आधार पर विवाह की ठीक आयु निकाली जा सकती है? मेरा अनुभव इसके लिए 'हाँ' भरता है, और यहाँ तक कहता है कि विवाह का वर्ष ही नही, महीना और तारीख तक निकाली जा सकती है। मैने इस बात का अनुभव एक-

दो हाथों पर नहीं, सैकड़ों हाथों पर किया है और वे सभी तारीखें शत-प्रतिशत सही उतरी हैं।

मैं ऊपर लिख चुका हूं कि हृदय-रेखा से विवाह-रेखा की दूरी ही वह समय है, जो विवाह के लिए निर्धारित होता है। इसका अनुभव एकदम से प्रेक्षक नहीं कर सकेगा, क्योंकि इसके लिए अनुभव और परिश्रम की आवश्यकता है।

सबसे पहले तो व्यक्ति का हाथ ठीक प्रकार से कागज पर उतार लें, या उसका फोटो खिचवा लें (यह प्रारम्भिक अवस्था के लिए है; अनुभव होने के बाद तो हाथ देखकर ही समय निकाला जा सकता है); फिर जहां से हृदय-रेखा निकल रही हो उस स्थान पर बिन्दु लगा दें। ठीक ऐसा ही एक बिन्दु कनिष्ठिका उँगली के मूल मे तीसरे पोर के जोड़ में लगा दें। इस दूरी को हल्की लकीर खीचकर मिला दें, तथा पैमाने की सहायता से इसे नाप लें।

यह दूरी ६० वर्ष की होती है। यदि इस दूरी के ठीक बीच मे बिन्दु लगा दें, तो यह बिन्दु ३० वर्ष की अवस्था सूचित करता है। *यदि विवाह-रेखा इस मध्यबिन्दु तथा हृदय-रेखा के बीच में है*, तो व्यक्ति का विवाह जीवन के तीस वर्षों के पश्चात् ही समझना चाहिए।

हृदय-रेखा से मध्यबिन्दु तक की दूरी जीवन के प्रथम तीस वर्ष हैं। इसके बीच मे जहां पर भी विवाह-रेखा है इस दूरी को नापकर तीस वर्ष के अनुपात मे सही-सही अर्थ निकाला जा सकता है। तात्पर्य यह है कि इस दूरी को पैमाने की सहायता से तीन भागों में बांट दो। विवाह-रेखा जिस भाग को छुए, जीवन के उसी वर्ष में विवाह होगा।

इसके साथ-ही-साथ सूर्य-पर्वत पर तथा सूर्य-रेखा पर भी दृष्टि डालनी होगी। सूर्य-रेखा के अन्त पर एक बिन्दु लगाकर दूसरा बिन्दु हृदय-रेखा के मूलोद्गम पर लगाएँ, तथा इस दूरी को बराबर बारह भागो में बांट दें। सूर्य-रेखा के अन्त मे जो बिन्दु लगा है उसे एप्रिल मास समझना चाहिए, इसके बाद के बिन्दु को मई, फिर जून, इस प्रकार गणना करते रहना चाहिए। इस बीच में विवाह-रेखा जहाँ छूती हो, विवाह का वही मास समझना चा[illegible]

तारीख निकालने के लिए सावधानी जरूरी है। सूर्य-रेखा से हृदय-रेखा के बीच में जिस मास से आगे विवाह-रेखा छुई हो, उसकी भी सावधानीपूर्वक गणना करके तारीख का निर्धारण कर लें।

उदाहरणार्थ सूर्य-रेखा के अन्त से ग्यारहवें तथा बारहवें बिन्दु के बीच विवाह-रेखा छू रही हो, तो एप्रिल मास से गणना कर ग्यारहवाँ मास फरवरी होगा, अतः यह स्पष्ट है कि फरवरी तथा मार्च के बीच विवाह होगा। अब इस खण्ड को भी तीस भागों में बाँट दें, तथा बिन्दु लगा दें। वह जिस बिन्दु को छुएगी, वही तारीख होगी। हस्त-रेखा में मास का प्रारम्भ अठारह तारीख से होता है। उपर्युक्त उदाहरण में फरवरी तथा मार्च के बीच पाँचवें बिन्दु को विवाह-रेखा छू रही है, तो १८ से गणना करने पर पाँचवीं तारीख २२ आती है, अतः उसका विवाह बाईस फरवरी को होगा, यह निर्णय करना चाहिये।

यह पद्धति पूर्णतः सही है, तथा पूरी तरह से परीक्षित है, अतः हस्त-रेखा के जिज्ञासु यदि परिश्रमपूर्वक इस विधि का उपयोग करें तो ठीक तिथि तक पहुँच सकते हैं।

हस्त-रेखा एक निश्चित विज्ञान है। हाथ की प्रत्येक लकीर बोलती है, आवश्यकता है उसे सुनने की, सुनकर समझने की और समझकर अर्थ करने की। फिर कोई कारण नहीं कि प्रेक्षक का कथन शत-प्रतिशत सही न उतरे।

१६

गौण-रेखाएँ

यद्यपि मैंने इस अध्याय का नाम 'गौण-रेखाएं' दिया है, पर वास्तव में देखा जाय तो जिन रेखाओं का विवरण मैं यहाँ प्रस्तुत

सहायक रेखाएं और चिह्न (१)
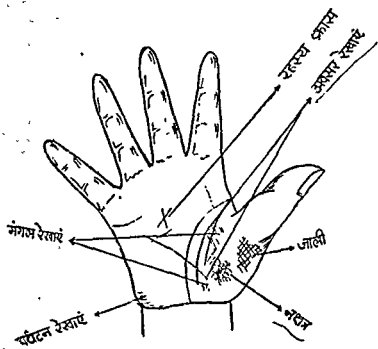
कर रहा हूँ, वे गौण नहीं हैं, अपितु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। पिछले अध्यायों में हमने सात प्रमुख रेखाओं का विवेचन किया, फिर भी हाथ में कुछ रेखाएँ ऐसी भी बची रहती हैं, जिनका अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

इन सभी रेखाओं का अपने-आप में महत्त्व है। इनमें से कुछ रेखाएँ तो स्वतन्त्र रूप में, तथा कुछ बड़ी रेखाओं के सम्पर्क में आकर या उन्हें सहयोग देकर अपना प्रभाव डालती हैं। नीचे मैं प्रत्येक का नाम, हाथ में उसकी स्थिति तथा उससे सम्बन्धित फलाफल का संक्षिप्त वर्णन कर रहा हूँ—

(१) मंगल-रेखा—मंगल-रेखा या मंगल-रेखाएँ वे रेखाएँ हैं, जो निम्नमंगलीय क्षेत्र से, या जीवन-रेखा के प्रारम्भिक भाग से निकलकर, जीवन-रेखा के समानान्तर चलती हुई शुक्र-क्षेत्र की ओर जाती हैं। ये रेखाएँ एक, दो, तीन या चार भी हो सकती हैं। ये सभी एक-समान न होकर छोटी, बड़ी, पतली, मोटी, उथली व गहरी हो सकती हैं, परन्तु इन सभी का उद्गम मंगल-क्षेत्र होने के कारण इन्हें मंगल-रेखाएँ ही कहते हैं। कुछ लोग इन्हें सहायक जीवन-रेखाएँ भी कहते हैं, पर यह युक्तिसंगत नहीं।

इन रेखाओं को हम दो भागों में बाँट सकते हैं। एक तो वे रेखाएँ होती है, जो जीवन-रेखा के साथ-साथ उसकी सहायक रेखाएँ-सी बनकर चलती हैं और जीवन-रेखा की समाप्ति तक उसका साथ देती हैं।

ऐसी रेखा रखनेवाले व्यक्ति अत्यन्त प्रतिभासम्पन्न और कुशाग्र-बुद्धि होते हैं; प्रत्येक बात को ये थोड़े में और तुरन्त समझ लेते हैं, तथा तदनुरूप निर्णय ले लेते हैं। ये जो भी कार्य करते हैं, खूब सोच-विचारकर करते हैं, तथा एक बार जो निर्णय कर लेते हैं, उसे अन्त तक कुशलता के साथ निभाते हैं। इन लोगों की कथनी और करनी में अन्तर नहीं होता।

ये लोग विज्ञान में गहरी रुचि लेनेवाले होते हैं। जटिल उपकरणों, पेचीदा मशीनरी तथा सूक्ष्म कार्यों को करने मे इन्हें आनन्द आता है। ये शारीरिक रूप से हृष्टपुष्ट तथा सुन्दर चेहरेवाले होते हैं। मौजी,

सहायक रेखाएं और चिह्न (१)

कर रहा हूँ, वे गौण नहीं हैं, अपितु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। पिछले अध्यायों में हमने सात प्रमुख रेखाओं का विवेचन किया, फिर भी हाथ में कुछ रेखाएँ ऐसी भी बची रहती हैं, जिनका अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

इन सभी रेखाओं का अपने-आप में महत्त्व है। इनमें से कुछ रेखाएँ तो स्वतन्त्र रूप में, तथा कुछ बड़ी रेखाओं के सम्पर्क में आकर या उन्हें सहयोग देकर अपना प्रभाव डालती हैं। नीचे मैं प्रत्येक का नाम, हाथ में उसकी स्थिति तथा उससे सम्बन्धित फलादेश का संक्षिप्त वर्णन कर रहा हूँ—

(१) मंगल-रेखा—मंगल-रेखा या मंगल-रेखाएँ वे रेखाएँ हैं, जो निम्नमंगलीय क्षेत्र से, या जीवन-रेखा के प्रारम्भिक भाग से निकलकर, जीवन-रेखा के समानान्तर चलती हुई शुक्र-क्षेत्र की ओर आती हैं। ये रेखाएँ एक, दो, तीन या चार भी हो सकती हैं। ये सभी एक-समान न होकर छोटी, बड़ी, पतली, मोटी, उथली व गहरी हो सकती हैं, परन्तु इन सभी का उद्‌गम मंगल-क्षेत्र होने के कारण इन्हें मंगल-रेखाएँ ही कहते हैं। कुछ लोग इन्हें सहायक जीवन-रेखाएँ भी कहते हैं, पर यह युक्तिसंगत नहीं।

इन रेखाओं को हम दो भागों में बाँट सकते हैं। एक तो वे रेखाएँ होती है, जो जीवन-रेखा के साथ-साथ उसकी सहायक रेखाएँ-सी बनकर चलती हैं और जीवन-रेखा की समाप्ति तक उसका साथ देती हैं।

ऐसी रेखा रखनेवाले व्यक्ति अत्यन्त प्रतिभासम्पन्न और कुशाग्र-बुद्धि होते हैं; प्रत्येक बात को ये थोड़े में और तुरन्त समझ लेते हैं, तथा तदनुरूप निर्णय ले लेते हैं। ये जो भी कार्य करते हैं, खूब सोच-विचारकर करते हैं, तथा एक बार जो निर्णय कर लेते हैं, उसे अन्त तक कुशलता के साथ निभाते हैं। इन लोगों की कथनी और करनी में अन्तर नहीं होता।

ये लोग विज्ञान में गहरी रुचि लेनेवाले होते हैं। जटिल उपकरणों, पेचीदा मशीनरी तथा सूक्ष्म कार्यों को करने मे इन्हे आनन्द आता है। ये शारीरिक रूप से हृष्टपुष्ट तथा सुन्दर चेहरेवाले होते हैं। मौजी,

सहायक रेखाएं और चिह्न (१)

शान्त प्रकृति तथा सरल स्वभाव के धनी ऐसे लोग जीवन में सुखी होते हैं।

दूसरे प्रकार की मंगल-रेखाएँ वे होती हैं, जो जीवन-रेखा का साथ छोड़ शुक्र-पर्वत की ओर बढ़ती हैं। ऐसे व्यक्तियों के जीवन में उस समय-विशेष से, जबकि ऐसी रेखाएँ जीवन-रेखा से हटने लगती हैं, लापरवाही-सी बढ़ जाती है। उनका स्वभाव जिद्दी तथा चिड़चिड़ा हो जाता है तथा शीघ्र ही आवेश में आकर सम्बन्ध बिगाड़ने में देर नहीं लगाते। इनकी संगति भी निम्नस्तर के लोगों से होती है।

यदि जीवन-रेखा निर्दोष हो, तथा मंगल-रेखाएँ भी उपस्थित हों तो व्यक्ति की जीवन-शक्ति बढ़ जाती है। यदि मंगल-रेखा से कुछ रेखाएँ ऊपर की ओर उठती हों, तो व्यक्ति के जीवन में महत्त्वाकांक्षाएं होती हैं। ये रेखाएँ भाग्य-रेखा से मिलकर मानसिक शक्ति को बढ़ाती हैं, तथा हृदय-रेखा से मिलकर व्यक्ति को अधिक भावुक बना देती हैं।

यदि मंगल-रेखा की शाखाएँ शनि-रेखा या सूर्य-रेखा को काटती हो तो व्यक्ति के जीवन में कई प्रकार की अड़चनें आती है, तथा भाग्य-उन्नति में बाधा पहुँचती हैं। प्रणय-रेखा को छूकर ये मंगल-रेखाएं वैवाहिक जीवन को सुखी बनाने में सहायक होती हैं।

मगल-रेखा प्रबल हो, तथा हृदय-रेखा दुहरी हो तो व्यक्ति निश्चय ही डाकू बनता है। यदि ऐसी स्थिति में अंगूठा छोटा और गोल हो, तो डाकू बनने में शक की गुन्जाइश ही नहीं रहती।

हृदय-रेखा दुहरी न हो तथा मगल-रेखा प्रबल हो तो व्यक्ति पुलिस या सेना में उच्च-अधिकारी बनता है। ऐसे व्यक्ति धीर, वीर, साहसी तथा युद्धप्रिय होते हैं।

(२) गुरु-वलय—तर्जनी उंगली के आधार में अर्द्धवृत्ताकार फैली हुई रेखा, जो गुरु-पर्वत को घेरती हुई तर्जनी के बाहरी भाग से शनि-क्षेत्र की ओर जाती है, गुरु-मुद्रा या गुरु-वलय कहलाती है। यह रेखा बहुत ही कम हाथों में देखने को मिलती है। लोगों ने इसके बहुत-बहुत गुणगान किये है, परन्तु अनुभव से ऐसी बात सिद्ध नहीं होती :

इस प्रकार की रेखा रखनेवाले व्यक्ति गंभीर बने रहते हैं। उनकी इच्छाएं तथा आकांक्षाएं इतनी अधिक बढ़ी-चढ़ी होती हैं कि वे अपने-आपको अत्यन्त गुणवान् और समझदार समझने लगते हैं। यदि गुरु-पर्वत शुभ हो तो व्यक्ति श्रेष्ठ विद्या प्राप्त कर लेता है, परन्तु इनमें कमी यही होती है कि ये जितना होते नहीं, उससे अधिक रोब दिखलाते हैं। व्यर्थ का आडम्बर और ऊपरी टीमटाम का लबादा हर समय ओढ़े रहते हैं। प्रयास कम करते हैं और पाने की आशा ज्यादा रखते हैं। यदि उनके प्रयत्न सफल होते नही दीखते, तो परलोक में प्रयत्न सफल होने की बात का प्रचार कर अपने को श्रेष्ठ घोषित करने का प्रयत्न करते हैं।

ये व्यक्ति आडम्बरप्रिय, रसिक और खुशमिजाज होते हैं।

(३) शनि-वलय—मध्यमा के आधार पर शनि-पर्वत को घेरनेवाली रेखा, जो तर्जनी और मध्यमा से निकल मध्यमा और अनामिका के बीच में समाप्त होती है, शनि-मुद्रा या शनि-वलय कहलाती है।

यह वलय शुभ नहीं कहा गया है, क्योंकि इस प्रकार की रेखा रखनेवाले व्यक्ति अधिकतर ससार से विरक्त-से होते हैं। वे इहलोक की चिन्ता छोड़ परलोक सँवारने की चिन्ता में लग जाते हैं, जिससे अधिकाधिक एकांतप्रिय होते जाते हैं।

ऐसे व्यक्ति तन्त्र-साधना अथवा मन्त्र-साधना में भी रत देखे गए हैं। यदि यह शनि-वलय भाग्य-रेखा को नही छूता, तो व्यक्ति अपने ध्येय में सफल हो जाता है; परतु यदि यह शनि-मुद्रा भाग्य-रेखा को छती हो, तो व्यक्ति जीवन में कई बार गृहस्थ बनता है, और कई बार सन्यासी; साथ ही यह लक्ष्य-प्राप्ति भी नही कर पाता। ऐसे व्यक्ति की कार्य-प्रणालियाँ दूषित और अस्तव्यस्त-सी होती हैं। अधिकतर ऐसे व्यक्ति स्नायविक संस्थान के रोगी होते हैं, तथा किसी भी समय आत्महत्या करने को उतारू हो जाते हैं।

शनिप्रधान व्यक्ति एकान्तप्रिय, चिन्तनशील, संसार से उदासीन और निराशाप्रधान होता है, और यदि शनिवलय-रेखा हो तो उपर्युक्त गुणों की वृद्धि ही होती है।

यह रेखा सूर्य के उत्तम प्रभावों को भी न्यून कर देती है।

(४) रवि-वलय—यदि अर्द्धचन्द्राकार की तरह मध्यमा और अनामिका के बीच में से निकलकर रवि-पर्वत को घेरती हुई अनामिका और कनिष्ठिका के बीच में जाकर रेखा समाप्त होती है, तो रवि-मुद्रा या रविवलय-रेखा कहलाती है।

यह रेखा दूषित प्रभाव ही स्पष्ट करती है चाहे रवि-पर्वत कितना ही शुभ और उच्च क्यों न हो। रवि-वलय होने से रवि-पर्वत के गुणों का ह्रास ही होता है। ऐसा व्यक्ति सदैव अपने कार्यों में असफल रहता है। यद्यपि यह कार्य श्रेष्ठ करता है, परन्तु यश इसे नहीं मिलता, अपितु यह अधिकतर अपयश का ही भागी होता है। रवि-पर्वत के सभी शुभ गुण, अशुभ गुणों में परिवर्तित हो जाते हैं, तथा व्यक्ति जीवन में एक असफल व्यक्ति बनकर रह जाता है।

ऐसा व्यक्ति जीवन में सच्चरित्र रहते हुए भी कलंकित होता है, दुश्चरित्रता की निंदा और अपयश इसे भोगना पड़ता है। जीवन में इसे खिन्न तथा दुःखी होते ही देखा गया है।

(५) शुक्र-वलय—गुरु और शनि-पर्वतों के बीच में से निकलकर चाप की तरह होती हुई सूर्य-पर्वत या बुध-पर्वत पर समाप्त होनेवाली रेखा शुक्र-वलय कहलाती है।

जिन हाथों में यह रेखा देखी गई है, इसी प्रकार से देखी गई है, फिर भी यह इससे भिन्न प्रकार बनती भी अनुभव में आई है, जो निम्नरूपेण है—

(क) तर्जनी उँगली से रेखा प्रारम्भ होकर गुरु, शनि और सूर्य-पर्वत को घेरती हुई कनिष्ठिका उँगली पर जाकर समाप्त होती है।

(ख) तर्जनी और मध्यमा के बीच में से निकल अनामिका और कनिष्ठिका उँगलियों के बीच में जाकर समाप्त होनेवाली रेखा भी शुक्र-वलय कही जाती है।

(ग) शुक्रवलय-रेखा वह भी कहलाती है, जो मात्र मध्यमा और अनामिका उँगली को घेरकर समाप्त हो जाती है।

(घ) शुक्र-मुद्रा या शुक्रवलय-रेखा वह भी कहलाती है जो गुरु-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर बुध-पर्वत तक जाते-जाते बीच में ही समाप्त हो

सहायक रेखाएं और चिह्न (२)

जाती है।
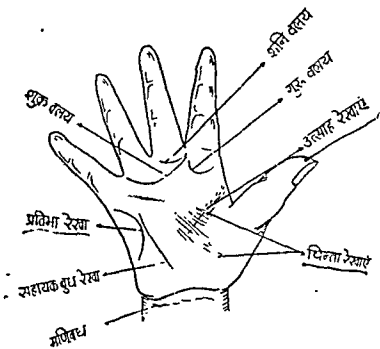
इन चार शुक्र-मुद्राओं में से किसी-किसी व्यक्ति के हाथ में एक, दो, तीन तथा किसी-किसी के हाथ में तो ये चारों प्रकार की शुक्र-मुद्राएँ देखी गई हैं। यह हृदय-रेखा की अनुपस्थिति में उसका कार्य करती हैं।

शुक्र-वलय रखनेवाले व्यक्ति स्नायविक दुर्बलताओं से ग्रस्त होते हैं। वे अधिकाधिक भौतिक टाइप के व्यक्ति होते जाते हैं, तथा विक्षिप्तता आदि रोगों से पीड़ित होते हैं।

यदि यह शुक्र-मुद्रा चौड़ी, गहरी तथा लाल रंग की हो तो व्यक्ति उपार्जित द्रव्य समाप्त कर डालता है। इसके विचार दूषित होते हैं, तथा प्रेम के सम्बन्ध में उतावली करनेवाला, कामी, व्यभिचारी तथा लम्पट होता है, पर अपनी लम्पटता को यह छुपाने में भी माहिर होता है।

यदि शुक्र-मुद्रा की रेखा पतली और उथली हो तो व्यक्ति को ज्यादा नुकसान नहीं पहुँचता। ऐसे व्यक्ति समझदार, परिस्थितियों को तुरन्त समझनेवाले, चतुर प्रेमी और वार्तालाप में माहिर होते हैं।

यदि एक से अधिक शुक्र-वलय पुरुष या स्त्री के हाथ में हों तो व्यक्ति (या स्त्री) निश्चय ही परस्त्रीगामी और लम्पट होता है।

यदि शुक्र-मुद्रा टूटी हुई हो, तो व्यक्ति अपने से निम्न कुल की स्त्रियों से प्रेम-सम्बन्ध रखता है, तथा दुष्कर्म करता है। यह जीवन-भर अपने दुष्कृत्यों के फलस्वरूप पछताता भी रहता है।

यदि शुक्र-मुद्रा आगे बढ़कर विवाह-रेखा को काट दे, तो या तो व्यक्ति का विवाह होता नहीं, और होता भी है तो वैवाहिक जीवन सुखी नहीं रहता।

ऐसी शुक्र-मुद्रा भाग्य-रेखा को काटे तो व्यक्ति भाग्यहीन, स्वास्थ्य-रेखा को काटे तो स्वास्थ्यहीन, तथा हृदय-रेखा को काटे तो व्यक्ति हृदय का रोगी होता है।

ऐसी मुद्रा रखनेवाले व्यक्ति यौन-विज्ञान के लेखक होते हैं, तथा मानसिक रति में आनन्द अनुभव करते हैं।

यदि शुक्र-मुद्रा पर द्वीप के चिह्न हों तो व्यक्ति प्रेमिका के षड्-

यन्त्रों के फलस्वरूप मारा जाता है।

(६) चन्द्र-रेखा—यह रेखा पूरे हाथ में सर्वोत्कृष्ट मानी गई है। यह रेखा मणिबन्ध या चन्द्र-पर्वत से प्रारम्भ होकर धनुषाकार रूप धारण करती हुई बुध-क्षेत्र तक पहुँचती है।

यह रेखा रखनेवाले व्यक्ति साधारण झोंपड़ियों में जन्म लेकर राष्ट्रपति या सेनाध्यक्ष तक के पदों पर पहुँचते हैं। देश के सर्वोच्च पदों को भी ये प्राप्त कर सकने में सफल रहते हैं।

जल-यात्रा इनके लिए घातक कही गई है, और जीवन में एक-दो बार ये जलघात से उलझते है, और बच जाते हैं। इनका स्वभाव शान्त, मधुर तथा स्थिर होता है। जरा-जरा-सी बात पर ये उफनते नहीं। शत्रुओं को भी अपने वश में कर लेने की कला इन्हें आती है। यदि किसी ने इनके जीवन में उपकार किया हो तो ये जीवन-भर भूलते नहीं, तथा उपकार का बदला पूरा-पूरा चुकाते हैं।

ऐसा व्यक्ति शिष्ट, संयत, सादगीप्रिय और आडम्बरशून्य होता है।

(७) प्रभावक रेखाएँ—ये वे रेखाएँ होती हैं, जो अलग-अलग स्थानों से निकल शुक्र, सूर्य, बुध, गुरु, शनि आदि पर्वतों को प्रभावित करती हैं।

बलवान् प्रभायक रेखाएँ हृदेरी के ऊपर बुध, सूर्य, शनि, गुरु-पर्वत तक पहुँच जाती हैं, पर कमजोर रेखाएँ नीचे ही रह जाती हैं।

ये रेखाएँ यदि भाग्य-रेखा को काटें तो भाग्यहीनता की स्थिति ले आती हैं, जीवन-रेखा को काटे तो मरणांतक कष्ट देती हैं तथा स्वास्थ्य-रेखा को काटें तो स्वास्थ्य चौपट कर देती हैं। इन रेखाओं द्वारा मस्तिष्क-रेखा प्रभावित होने पर व्यक्ति विक्षिप्त और पागल तक हो जाता है।

परन्तु यदि ये रेखाएँ या रेखा भाग्य रेखा को काटे नहीं, अपितु उसमें मिल जाय और उसके समानान्तर चलने लगे तो भाग्य-वृद्धि में सहायक समझी जानी चाहिए। ऐसे व्यक्ति को निश्चय ही आकस्मिक द्रव्यलाभ होता है। स्वास्थ्य-रेखा के साथ इसी प्रकार सहयोग करने पर स्वास्थ्य उन्नत होता है, तथा उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली होता

है।

चन्द्र-क्षेत्र से ऊपर उठनेवाली प्रभावक रेखाएँ व्यक्ति को सौन्दर्य-प्रिय तथा कलाप्रेमी बना देती हैं। ऐसा व्यक्ति ललितकलाओं में रुचि लेनेवाला, आकर्षक तथा सम्मोहक व्यक्तित्व रखनेवाला होता है।

यदि ये प्रभावक रेखाएँ शुक्र-पर्वत से ऊपर उठ रही हों तो व्यक्ति अधिक कामी, लम्पट तथा परस्त्रीगामी होता है। मंगल-रेखा से ऊपर उठ रही हों तो व्यक्ति को साहसी और रणप्रिय बना देती है।

(८) यात्रा-रेखाएँ—यात्रा-रेखाएँ वे होती हैं जो परिस्थितियाँ उत्पन्न कर व्यक्ति को यात्रा करने के लिए विवश कर देती हैं। कुछ यात्रा-रेखाएँ स्पष्ट की जा रही हैं—

(क) मंगल-रेखा से निकलकर जीवन-रेखा पर मिलनेवाली रेखा कम-से-कम सौ मील की यात्रा उस समय कराती है, जब मध्यमा उँगली के नाखून पर सफेद अर्द्धचन्द्र बना हो।

(ख) यदि मध्यमा उँगली के नाखून पर सफेद चन्द्र तीन माह तक लगातार रहे, और इन्द्र-क्षेत्र से रेखा निकलकर रवि-पर्वत पर पहुँचती है तो व्यक्ति वायुयान से विदेश-यात्रा करता है।

(ग) शुक्र-पर्वत से अर्द्धचन्द्राकार में कोई रेखा चन्द्र-पर्वत पर जाती हो, तथा महीनेभर से मध्यमा उँगली पर सफेद चन्द्र बना रहे तो व्यक्ति जलयान से विदेश-यात्रा करता है।

(घ) चन्द्र-क्षेत्र पर कोई दो रेखाएँ मिलकर पंतालीस डिग्री का कोण बनाती हों तो व्यक्ति तीर्थ-यात्राएँ करता है।

(ङ) इसी प्रकार (घ की तरह) शुक्र, प्रजापति तथा मंगल-क्षेत्र पर भी कोण बने तो यात्रा-योग होता है।

(९) विज्ञान-रेखाएँ—सन्तान-रेखा (बुध-पर्वत से हटकर विवाह-रेखा के ऊपर) की तरह यदि बुध-पर्वत पर पाँच खड़ी रेखाएँ हों तो ये रेखाएँ विज्ञान-रेखाएँ कहलाती हैं। ऐसा व्यक्ति वैज्ञानिक विषयों का लेखक होता है; कई पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, जिनसे धन तथा सम्मान मिलता है।

ऐसे व्यक्ति परिश्रमी, धनी, चतुर तथा तुरन्त निर्णय लेनेवाले होते हैं।

(१०) विद्या-रेखा—ये रेखाएँ मध्यमा तथा अनामिका उँगलियों के बीच में पाई जाती हैं, जो रवि-क्षेत्र की ओर झुकती हुई खड़ी होती हैं। जिन हाथों में ये रेखाएँ होती हैं, वे व्यक्ति निर्धन घर में भी जन्म लेकर श्रेष्ठ विद्या उपार्जित करने में सफल हो जाते हैं।

कई बार ऐसा भी देखा गया है कि जिन हाथों में ये रेखाएँ होती हैं, वे कम पढ़े-लिखे होने पर भी पढ़े-लिखे लोगों से भी तीव्र बुद्धि एवं ज्ञान रखनेवाले होते हैं। विद्वान् इनका आदर करते हैं, तथा ऐसे लोग अपनी बुद्धि से अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे लोगों को भी निरुत्तर कर देते हैं।

(११) मातृ-भगिनी-रेखा—इनका उद्‌गम शुक्र-पर्वत पर होता है। ये रेखाएँ अंगूठे के तीसरे भाग से मंगल-क्षेत्र की ओर जाते देखी जाती हैं। ये रेखाएँ संख्या में जितनी होती हैं, उतने ही भाई-बहिन व्यक्ति के होते हैं।

ये रेखाएँ जितनी अधिक स्पष्ट, निर्दोष और गहरी होती हैं, व्यक्ति के भाई-बहिनों का स्वास्थ्य उतना ही उत्तम होता है। इसके विपरीत ये रेखाएँ कमजोर, टूटी हुई या दूषित हों तो व्यक्ति के भाई-बहिनों का स्वास्थ्य गिरा हुआ समझना चाहिए।

इन रेखाओं में जो चौड़ी और गहरी होती हैं, वे भाइयों की सूचक हैं, तथा पतली और उथली रेखाएँ बहिनों की संख्या बताती हैं।

इनमें से जो रेखाएँ टूटी हुई हों, या जिनका अन्त आड़ी रेखा से हो, उतने भाई-बहिनों की मृत्यु समझनी चाहिए।

इन रेखाओं का न होना जातक के एकाकी होने का सबल प्रमाण है।

(१२) मित्र रेखाएँ—उँगली के पोरुओं को ध्यान से देखें तो इनपर कुछ खड़ी लकीरें दिखाई देंगी। ये रेखाएँ मित्र रेखाएँ कहलाती हैं। यदि ये रेखाएँ न हों तो प्रेक्षक को समझना चाहिए कि व्यक्ति एकान्तप्रिय है, तथा इसके कोई ऐसा मित्र नहीं है, जो इसकी समय पर सहायता करे।

ये रेखाएँ जितनी ही अधिक स्पष्ट, गहरी और निर्दोष होती हैं, व्यक्ति के मित्र भी उतने ही अधिक सबल और समय पड़ने पर काम आनेवाले होते हैं। इसके विपरीत ये रेखाएँ कमजोर, नकली और सदोष हों तो व्यक्ति के मित्र भीरु, अवसरवादी तथा समय पड़ने पर पीठ दिखानेवाले होते हैं।

उँगलियों के पोरुओं पर आड़ी लकीरें शत्रुओं की द्योतक हैं। ये स्पष्ट, गहरी और निर्दोष हों तो व्यक्ति के शत्रु मजबूत, स्वार्थ और हानि पहुँचानेवाले समझने चाहिए ; इसके विपरीत यदि ये आड़ी रेखाएँ कटी-फटी, कमजोर या सदोष हों तो व्यक्ति के शत्रु कमजोर तथा अस्पष्ट होंगे।

प्रत्येक उँगली पर ये रेखाएँ पाई जाती हैं ; इनका फलादेश भी भिन्न है—

(क) तर्जनी उँगली पर खड़ी लकीरें नौकरी करनेवाले मित्र तथा आड़ी लकीर नौकरी करनेवाले शत्रु समझने चाहिए।

(ख) मध्यमा उँगली पर खड़ी लकीरें कलाकार मित्र तथा आड़ी लकीरें कलाकार स्वभाव के शत्रु स्पष्ट करती हैं।

(ग) अनामिका उँगली पर खड़ी लकीरें ऊँचे स्तर के मित्र तथा आड़ी लकीरें ऊँचे पदसम्पन्न शत्रु समझने चाहिए।

(घ) कनिष्ठिका उँगली पर खड़ी लकीरें व्यापारी मित्र तथा आड़ी लकीरें व्यापारी शत्रु समझने चाहिए।

ये रेखाएँ यदि पोरुओं की रेखाओं को काटकर आगे बढ़ती हों तो मित्र भी समय पड़ने पर शत्रुवत् आचरण करते हैं।

इन रेखाओं का अध्ययन भी सावधानीपूर्वक करके ही फलादेश कथन करना चाहिए।

(२४) आकस्मिक रेखाएँ—ये वे रेखाएँ होती हैं, जो समय-समय पर उत्पन्न होकर अपना अच्छा या बुरा प्रभाव दिखाकर लुप्त हो जाती हैं। हथेली के किसी भी भाग, किसी भी पर्वत, किसी भी रेखा पर इन रेखाओं का उदय देखा जा सकता है।

ये रेखाएँ यदि किसी रेखा के साथ-साथ चलती हों, तो उसके गुणों में वृद्धि होती है। इसके विपरीत यदि ये किसी रेखा को काटती

हों, तो उस रेखा के गुणा का ह्रास समझना चाहिए।

उदाहरणार्थ यदि किसी समय कोई आकस्मिक रेखा स्वास्थ्य-रेखा के समानान्तर सहयोगी रूप में चलती दिखाई दे, तो व्यक्ति के स्वास्थ्य में शीघ्र ही सुधार होगा, ऐसा समझना चाहिए। यदि वह स्वास्थ्य-रेखा को काटे तो व्यक्ति का स्वास्थ्य कमजोर होगा, यानी उसे बीमारी भोगनी पड़ेगी, ऐसा समझना चाहिए।

(१४) सुमन-रेखा—यह रेखा केतु-क्षेत्र से उठकर बुध-क्षेत्र तक जाती दिखाई देती है। यह रेखा स्वास्थ्य-रेखा को स्पर्श करे तो व्यक्ति भयंकर बीमारी भोगेगा, ऐसा समझना चाहिए; परन्तु यदि यह स्वास्थ्य-रेखा के समानान्तर चलती हो तो व्यक्ति नीरोग तथा हृष्ट-पुष्ट रहता है।

ऐसे व्यक्ति सफल राजदूत होते हैं, यदि ऐसी रेखा बिना किसी को काटे बुध-पर्वत पर पहुँचती हो, इसीलिए इस रेखा को कूटनीतिक रेखा भी कहते हैं।

यदि सुमन-रेखा लहरदार हो तो व्यक्ति पांडु रोग से पीड़ित होता है। यदि रेखा जंजीरदार हो तो व्यक्ति के परिवार में उम्रभर अनबन और कलह रहती है। यदि यह द्विजिह्वी हो तो व्यक्ति को नपुंसक बना देती है, तथा यदि इस रेखा का उद्गम शुक्र-पर्वत से हो और रेखा बुध-पर्वत की ओर जाती दीखे तो व्यक्ति लम्पट, धूर्त, कामासक्त और सनकी होता है।

(१५) मणिबन्ध रेखाएँ—कलाई पर तीन आड़ी रेखाएँ मणिबन्ध-रेखाएँ कहलाती हैं। ये संख्या में दो, तीन या चार भी होती हैं। ये रेखाएँ स्वास्थ्य, धन तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि करनेवाली मानी गई हैं।

मणिबन्ध से निकलकर ऊपर की ओर जाती हुई रेखाएँ व्यक्ति की उन्नति तथा मनोकामनाओं को व्यक्त करती हैं, तथा चन्द्र-क्षेत्र की ओर जाती हुई रेखाएँ यात्रा-योग बताती हैं।

यदि ये रेखाएँ चार हों तो व्यक्ति की आयु सौ वर्ष समझनी चाहिए, तीन हों तो पचहत्तर वर्ष, दो होने पर पचास वर्ष तथा एक होने पर पच्चीस वर्ष आयु समझनी चाहिए।

यदि ये रेखाएँ टूटी हुई हों तो व्यक्ति के जीवन की बाधाएँ स्पष्ट करती हैं, तथा पूरी एवं निर्दोष रेखाएँ जीवन में उन्नति तथा भाग्योदय की ओर संकेत करती हैं।

मणिबन्ध-रेखा पर यव के चिह्न सौभाग्यसूचक हैं, बिन्दु पेट-रोग स्पष्ट करते हैं। जंजीरदार रेखा जीवन में बाधाएँ उत्पन्न करती, है। इन रेखाओं पर द्वीप का होना दुर्घटनाओं का संकेत है, तथा शृंखलादार रेखा दुर्भाग्य की सूचक है। ऐसा व्यक्ति परिश्रमी होने पर भी सफलता से वंचित रहता है।

मणिबन्ध-रेखाएँ परस्पर मिली हुई हों तो भयंकर दुर्घटनाओं को सूचित करती हैं। इससे यदि कोई रेखा शुक्र-पर्वत पर जाती हो तो कामुकता बताती है तथा केतु-क्षेत्र की ओर जाती हो तो व्यक्ति के स्वभाव को चिड़चिड़ा बना देती है।

लाल मणिबन्ध-रेखाएँ यात्रा में दुर्घटना की सूचक हैं, गुलाबी रेखाएँ आर्थिक हानि की ओर संकेत करती हैं, तथा नीली रेखाएँ यात्रा में बीमारी भोगने को विवश करती हैं, तथा पीली रेखाएँ बताती हैं कि किसी सम्बन्धी द्वारा विश्वासघात होने से भयंकर कष्ट भोगना पड़ेगा। ये रेखाएँ निर्दोष होने पर ही शुभ फल देती हैं।

(१६) शुक्र रेखाएँ—ये रेखाएँ शुक्र-पर्वत पर खड़ी तथा आड़ी रेखाओं के रूप में देखी जा सकती हैं। ये तभी शुक्र-रेखाएँ कहलाने की अधिकारिणी हैं, जबकि ये अंगूठे की ओर से आयु-रेखा की ओर जाती हों।

ये रेखाएं जितनी ही स्पष्ट तथा निर्दोष होंगी उतना ही शुभ-फल देने में समर्थ होंगी। यदि ये रेखाएँ खण्डित, लहरदार, द्वीपयुक्त या जंजीरदार हों तो व्यक्ति कई स्त्रियों के साथ भोग करनेवाला होता है। स्त्री के हाथ में ये रेखाएँ हों तो वह स्त्री कुलटा होती है। यदि ये रेखाएँ जीवन-रेखा को काटकर भाग्य-रेखा को छुएँ तो धनजन की हानि करती हैं।

(१७) बुध-वलय—*अनामिका और कनिष्ठिका उंगलियों के बीच* में से जो रेखा निकलकर बुध-पर्वत को घेरती हुई कनिष्ठिका के पार हथेली के बाहरी भाग की ओर जाती है, और इस प्रकार से जो अर्द्ध-

शनि वलय
शुक्र वलय
वृहत आयत
रहस्य स्वस्तिक
प्रधान त्रिकोण
मंगल रेखाएं
पर्यटन रेखाएं

चन्द्र बनता है, वह बुध-वलय कहलाता है।
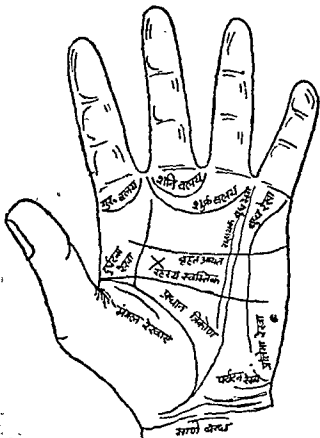
यह बुध-वलय या बुध-मुद्रा बुध के पर्वतीय गुणों को न्यून करती है। बचपन में व्यक्ति शिक्षा से वंचित रहता है, तथा यौवनावस्था में धन की न्यूनता से दुःख उठाता है। इनकी उम्र ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है, ये दूषित कार्यों में रत होते देखे गए हैं।

(१८) रहस्य-क्रॉस—यह हृदय और मस्तिष्क-रेखा के बीच बननेवाला क्रॉस है, जो रहस्य-क्रॉस या La croix mysique कहलाता है। ऐसा क्रॉस रखनेवाला व्यक्ति वैज्ञानिक प्रतिभासम्पन्न होता है।

यह क्रॉस गुरु-पर्वत के नीचे हो तो व्यक्ति ऊँचे लक्ष्य की ओर परिश्रमपूर्वक बढ़ता ही रहता है। शनि-पर्वत के नीचे हो तो शोध-ग्रन्थ लिखता है, तथा चन्द्र-क्षेत्र के समीप हो तो सुन्दर रहस्यवादी कवि तथा प्रतिभासम्पन्न होता है। पर्वतों से प्रभावित, या जो पर्वत इस क्रॉस से प्रभावित होता है, उसके गुणों में वृद्धि हो जाती है।

(१९) दुर्घटना-रेखाएँ—हाथ में कोई भी रेखा महत्वशून्य नहीं होती। शनि-पर्वत से निकलकर जो रेखाएँ मस्तिष्क-रेखा को काटती हैं, वे दुर्घटना-रेखाएँ कहलाती हैं। दुर्घटना से जीवन और मस्तिष्क विशेष रूप से प्रभावित होते हैं।

क्रॉस का चिह्न भी दुर्घटना की ओर ही संकेत करता है। यदि गुरु-पर्वत पर क्रॉस हो तो शुभ फल देनेवाला होता है। शनि-पर्वत पर क्रॉस हो तो मृत्युसूचक है। मंगल-क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न युद्ध में मृत्यु, सूर्य-पर्वत पर क्रॉस का चिह्न तेज हथियार से मृत्यु तथा बुध-पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हो तो तीव्र गतिवाले वाहन से एक्सीडेंट होने की सम्भावना होती है।

हृदय अथवा मस्तिष्क-रेखा पर क्रॉस हो तो आयु के उस भाग में पत्नी की मृत्यु (या पति की, स्त्री के हाथ में) समझनी चाहिए।

चन्द्र-पर्वत पर क्रॉस का चिह्न जल में डूबने से मृत्यु का संकेत देता है।

(२०) त्रिकोण—मस्तिष्क-रेखा, जीवन-रेखा और बुध-रेखा से मिलकर यदि त्रिकोण बनता हो, तो व्यक्ति के जीवन में धनाभाव

नहीं रहता।

(२१) आयत—मस्तिष्क तथा हृदय-रेखा मिलकर यदि आयत की रचना करते हों तो ऐसा आयत मस्तिष्क तथा हृदय का सन्तुलन व्यक्त करता है।

वस्तुतः हस्तरेखाविद् को इन छोटी-छोटी गौण, पर महत्त्वपूर्ण रेखाओं का भी सम्यक् अध्ययन करना चाहिए जिससे उनके फलादेश में शत-प्रतिशत सफलता का प्रवेश हो। अभ्यास, अध्ययन और लगन से यह सब-कुछ सम्भव है।

१५

हस्त-चिह्न

अभी तक हमने हाथ में पाई जानेवाली मुख्य रेखाओं तथा गौण रेखाओं का विवेचन किया, पर हाथ में ध्यानपूर्वक देखने से प्रतीत होगा कि इन रेखाओं के अतिरिक्त भी कुछ ऐसे चिह्न हाथ में रह जाते हैं, जिनका अध्ययन भी जरूरी है।

इस अध्याय में हम उन चिह्नों का संक्षिप्त परिचय देंगे, जो हाथ में पाये जाते हैं। ऐसे चिह्न प्रमुखतः आठ हैं—

१—त्रिभुज—(Triangles)
२—क्रॉस (Crosses)
३—बिन्दु (Dots)
४—वृत्त (Circles)
५—द्वीप—(Islands)
६—वर्ग (Squares)
७—जाल (Grills)
८—नक्षत्र या तारा (Stars)
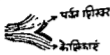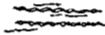
दोषयुक्त रेखाएं – चिह्नादि

पर्व शिखर केशिकाएं	द्विभागी रेखाएं	सहायक रेखाएं
बहुशाखी रेखाएं	ऊर्ध्व प्रशाखाएं	निम्न प्रशाखाएं
लहरीली रेखाएं	श्रृंखलित रेखाएं	टूटी हुई रेखाएं
नक्षत्र	बिन्दु	क्रास
रेखा व्यूह	द्वीप या यव	त्रिकोण
वर्ग	वृत्त	असम्बद्ध रेखाएं

अब हम इनमें से प्रत्येक का वर्णन स्पष्ट कर रहे हैं—

त्रिभुज (Triangles)—तीन तरफ से आकर मिली हुई रेखाओं से बनी जो आकृति होती है, वह त्रिभुज कहलाती है। ये तीन रेखाएँ जब मिलती हैं, तो कभी न्यून कोण, कभी समकोण तो कभी अधिक कोण बना देती हैं, जिसके फलस्वरूप त्रिभुज का आकार छोटा या बड़ा बन जाता है।

हथेली पर अलग-अलग स्थानों पर बने त्रिभुज चिह्नों का महत्त्व भी अलग-अलग है। स्पष्ट, निर्दोष तथा गहरी रेखाओं से निर्मित त्रिभुज शुभ फलदायी होते हैं।

त्रिभुज कम हाथों में ही देखने को मिलते हैं। त्रिभुज आकार में जितना ही अधिक बड़ा होगा, वह उतना ही अधिक श्रेष्ठ तथा फलदायी माना जाता है।

जिस व्यक्ति की हथेली के मध्य में त्रिभुज पाया जाता है, वह व्यक्ति भाग्यवान्, सच्चरित्र, सद्गुणों से भूषित, क्रियाशील, ईश्वर में आस्था रखनेवाला तथा उन्नतिशील होता है। उसकी शारीरिक एवं मानसिक सभी वृत्तियाँ निरन्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर होती रहती हैं। ऐसा व्यक्ति शान्त एवं मधुर स्वभाव का तथा धीर-गंभीर होता है।

त्रिभुज जितना बड़ा होगा, व्यक्ति उतना ही विशाल हृदय रखनेवाला होगा। परन्तु संकीर्ण, अस्पष्ट तथा न्यूनाकार के त्रिभुज रखनेवाला व्यक्ति संकीर्ण हृदय का तथा कठिनतापूर्वक सफलता प्राप्त करनेवाला व्यक्ति होता है। ऐसे व्यक्ति का आत्मविश्वास उसका साथ नहीं देता, फलस्वरूप जीवन-संग्राम में वह देरी से विजय-लाभ करता है।

यदि किसी व्यक्ति के हाथ में बड़े त्रिभुज में एक छोटा और त्रिभुज बन जाय, तो वह व्यक्ति निश्चय ही उच्च पद प्राप्त करने में समर्थ होता है।

यदि निर्दोष त्रिभुज शुक्र-क्षेत्र में हो तो व्यक्ति रसिक मिजाज, सरल तथा सरस स्वभाववाला, गायन-नृत्य-ललितकला आदि का प्रेमी, अपनी बात को निभानेवाला तथा उन्नत जीवनस्तर रखनेवाला

होता है। उसका प्रेम भी सौम्य होता है।

परन्तु दूषित त्रिभुज (त्रिभुज की रेखा टूटी हुई हो, लहरदार या जंजीरदार होने) से व्यक्ति कामान्ध होता है। यदि स्त्री के हाथ में ऐसा त्रिभुज हो, तो वह निश्चय ही परपुरुषगामिनी होती है।

मंगल-क्षेत्र पर निर्दोष त्रिभुज हो तो व्यक्ति धैर्यवान् तथा रण-कुशल होता है, तथा वीरता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित होता है। युद्ध में यह अपूर्व वीरता दिखलाता है, तथा विपत्ति में भी यह अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होता।

परन्तु यदि दूषित त्रिभुज हो तो व्यक्ति परपीड़नरत, निर्दयी तथा कायर होता है।

राहु-क्षेत्र पर निर्दोष त्रिभुज हो तो व्यक्ति यौवनकाल में श्रेष्ठ पद पर पहुँचता है, तथा राजनीति में विशेष सफलता प्राप्त करता है। सदोष त्रिभुज राहु-क्षेत्र पर हो तो व्यक्ति अभागा तथा कठिनता से जीवन-निर्वाह करनेवाला होता है।

प्लूटो-क्षेत्र पर निर्दोष त्रिभुज हो तो व्यक्ति की वृद्धावस्था सानन्द व्यतीत होती है, पर सदोष त्रिभुज होने पर व्यक्ति बुढ़ापे में अत्यन्त कष्ट उठाता है।

बृहस्पति-क्षेत्र पर निर्दोष त्रिभुज हो तो व्यक्ति चतुर, कार्यदक्ष, कुशाग्रबुद्धि रखनेवाला तथा सदैव उन्नति की आकांक्षा रखनेवाला होता है। ऐसे व्यक्ति धूर्त तथा सफल कूटनीतिज्ञ होते हैं। जन-साधारण को अपने प्रभाव मे रखने की इन्हें कला आती है। सदोष त्रिभुज होने पर व्यक्ति घमण्डी, बातूनी, तथा अपनी प्रशंसा आप करनेवाला होता है।

शनि-क्षेत्र पर निर्दोष त्रिभुज हो तो व्यक्ति तंत्र-मंत्र-साधना में रत, गुप्त विद्याओं में पारंगत, तथा हिप्नोटिज्म में दक्ष होता है। सदोष त्रिभुज होने पर व्यक्ति अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त ठग और धूर्त होता है।

सूर्य-क्षेत्र पर निर्दोष त्रिभुज हो तो व्यक्ति धार्मिक, परोपकारी, कलाकार तथा दूसरों की भलाई करनेवाला होता है। वह जिस कार्य

में हाथ डालता है, सफलता प्राप्त कर लेता है। ऐसे व्यक्ति कुशाग्र-बुद्धि होते हैं। सदोष त्रिभुज होने पर व्यक्ति अपने कार्यों में सफल नहीं होता, तथा समाज में निन्दा का पात्र बनता है।

बुध-क्षेत्र पर त्रिभुज हो तो व्यक्ति सफल वैज्ञानिक या उच्च कोटि का व्यापारी होता है जिसका व्यापार विदेशों तक फैला होता है। ऐसे लोग दूसरों की कमजोरियों को समझने में माहिर होते हैं, तथा फिर उससे फायदा उठा लेते हैं।

यदि सदोष त्रिभुज हो तो व्यक्ति व्यापार में दिवालिया होता है, तथा पिता का संचित द्रव्य भी समाप्त कर लेता है।

यदि आयुरेखा पर त्रिभुज हो तो व्यक्ति दीर्घायु होता है। मस्तक-रेखा पर हो तो कुशाग्र बुद्धि रखनेवाला तथा श्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त करनेवाला होता है। हृदय-रेखा पर हो तो वृद्धावस्था में व्यक्ति का अकस्मात् भाग्योदय होता है। स्वास्थ्य-रेखा पर हो तो स्वास्थ्य उन्नत रखता है। सूर्य-रेखा पर हो तो व्यक्ति लेखन में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित करता है। भाग्य-रेखा पर हो तो व्यक्ति भाग्यहीन बनता है, तथा उसके समस्त सोचे हुए काम अधूरे रहते हैं। विवाह-रेखा पर हो, तो विवाह में बाधाएँ उपस्थित होती हैं। चन्द्र-रेखा पर हो तो व्यक्ति जीवन में कई बार विदेश-यात्राएँ करता है।

क्रॉस (Crosses)—गणित में धन का चिह्न या एक आड़ी रेखा पर दूसरी खड़ी रेखा क्रॉस कहलाती है। यह हथेली में कहीं पर भी शुभ नहीं कहा जाता, फिर भी बृहस्पति-क्षेत्र पर इसकी उपस्थिति शुभ कही गई है।

(१) बृहस्पति-क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो तो व्यक्ति आदर्श विवाह का हामी, धनपति तथा सोच-समझकर कार्य करनेवाला होता है। ससुराल से खूब धन मिलता है तथा इसे पत्नी पढ़ी-लिखी एवं पतिव्रता मिलती है। ऐसा मनुष्य धार्मिक विचारों का तथा परोपकारी होता है।

(२) शनि-क्षेत्र पर यदि क्रॉस पाया जाय, तो व्यक्ति के शरीर में कई बार घाव लगते हैं। ऐसा व्यक्ति रहस्यमय दुर्घटना का शिकार होता है, तथा इसकी अकाल मृत्यु होती है।

(३) यदि रवि-क्षेत्र पर क्रॉस हो तो व्यक्ति व्यवसाय में भारी पराजय देखता है, व्यापार में इसे हानि उठानी पड़ती है, तथा समाज में इसकी निन्दा एवं उपहास होता है। भाग्य इसका कभी भी साथ नहीं देता।

(४) बुध-क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो तो व्यक्ति धूर्त, ठग, धोखेबाज, अपना उल्लू सीधा करनेवाला, तथा दोअर्थी बातें करनेवाला होता है।

ऐसा व्यक्ति समाज से बहिष्कृत रहता है, तथा निन्दनीय जीवन व्यतीत करता है।

(५) प्रजापति-क्षेत्र पर यदि क्रॉस हो तो व्यक्ति आलसी, अकर्मण्य तथा भीरु होता है, शत्रुओं से वह परास्त रहता है, तथा उसका स्वभाव दब्बू एवं चिड़चिड़ा होता है।

(६) चन्द्र-क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो तो व्यक्ति जीवन में कई बार पानी में डूबता है, तथा बचता है। इसकी मृत्यु जल में डूबने से ही होती है। ऐसे व्यक्ति को जलोदर, तथा मस्तिष्क-सम्बन्धी रोग घेरे रहते हैं। विदेशों में यह घोर दुःख उठाता है।

(७) केतु-क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो तो व्यक्ति प्रारम्भिक जीवन में दुःखी रहता है, तथा उसकी शिक्षा भली प्रकार नहीं होती जिससे उसका भावी जीवन संकटपूर्ण ही कहा जा सकता है।

(८) शुक्र-क्षेत्र पर यदि क्रॉस का चिह्न हो तो व्यक्ति प्रेम के मामलों में असफल रहता है, तथा बदनामी उठाकर निंदनीय जीवन बिताने को बाध्य होता है, जीवन में निराशा घर किये रहती है, तथा यह अपने प्रयत्नों में सफल नहीं होता।

(९) यदि किसी व्यक्ति के मंगल-क्षेत्र पर क्रॉस हो, तो यह व्यक्ति निश्चय ही कारावास-भोगता है। ऐसा व्यक्ति अत्यन्त क्रोधी होता है, तथा लड़ाई-झगड़े में वह मरने-मारने को उतारू हो जाता है। ऐसा व्यक्ति आत्महत्या भी कर सकता है।

(१०) यदि राहु-क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो तो वह चेचक से ग्रस्त होता है, तथा यौवनावस्था में दुःख भोगता है। अभाग्य सदैव उसके साथ चलता है।

(११) यदि जीवन-रेखा पर क्रॉस हो तो जिस स्थान पर क्रॉस है, आयु के उस भाग में वह मरणान्तक कष्ट भोगता है।

(१२) यदि ऐसा क्रॉस मस्तक रेखा पर हो तो जहाँ यह क्रॉस है, आयु के उस भाग में वह व्यक्ति दिमाग-सम्बन्धी बीमारियों से ग्रस्त होता है, या पागल हो जाता है।

(१३) यदि हृदय-रेखा पर क्रॉस हो, तो आयु के उस भाग में व्यक्ति को रक्तचाप या हृदय-सम्बन्धी बीमारी होता है। ऐसा व्यक्ति कमजोर हृदय का होता है।

(१४) रवि-रेखा पर क्रॉस हो, तो व्यक्ति की उन्नति में बाधा पड़ती है, तथा वह अपने ध्येय में सफल नहीं हो पाता।

(१५) यदि भाग्य-रेखा पर क्रॉस हो तो जिस स्थान पर क्रॉस है, आयु के उस भाग में व्यक्ति का भाग्य-परिवर्तन होता है, तथा उसकी स्थिति पूर्वावस्था की अपेक्षा निम्न ही होती है।

(१६) स्वास्थ्य-रेखा पर क्रॉस की उपस्थिति व्यक्ति के स्वास्थ्य में गिरावट की सूचना देती है।

(१७) विवाह-रेखा पर यदि क्रॉस का चिह्न हो तो उसका विवाह नहीं होता। यदि होता भी है, तो पति-पत्नी मे अनबन बनी रहती है। इसी प्रकार संतति-रेखा पर क्रॉस का चिह्न संतति की न्यूनता स्पष्ट करता है।

(१८) यात्रा-रेखा पर क्रॉस होना यात्रा में आकस्मिक मृत्यु को स्पष्ट करता है।

(१९) वस्तुतः बृहस्पति-क्षेत्र के अतिरिक्त हाथ में कहीं पर भी क्रॉस होता है, तो उसके प्रभाव को न्यून कर विपरीत फल देने लगता है।

बिन्दु—बिन्दुओं का प्रभाव भी हथेली पर बहुत महत्त्वपूर्ण देखा गया है। सफेद बिन्दु सर्वदा उन्नतिसूचक कहे गए हैं, लाल रंग के बिन्दु रक्तचाप आदि बीमारियों को प्रकट करते हैं, पीले बिन्दु व्यक्ति के शरीर में रक्त-न्यूनता को स्पष्ट करते हैं, तथा काले बिन्दु व्यक्ति के जीवन में लक्ष्मी (धन) की प्राप्ति स्पष्ट करते हैं।

इन सभी में काले बिन्दु (या तिल) ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माने

गए हैं, अतः हम इन पृष्ठों में काले बिन्दुओं के बारे में ही विचार करेंगे।

यदि काला बिन्दु या तिल हथेली में हो तथा मुट्ठी बन्द करने पर मुट्ठी में रहता हो, तो व्यक्ति के पास स्थायी लक्ष्मी रहती है। यदि ऐसा तिल मुट्ठी की पहुँच से बाहर हो तो उस व्यक्ति के पास धन आता है, पर संग्रह नहीं होता, या टिकता नहीं, ऐसा समझना चाहिये।

(१) यदि काला तिल गुरु-क्षेत्र पर हो तो व्यक्ति के विवाह में अड़चनें आती हैं, तथा बदनामी उठानी पड़ती है, साथ ही उसे धन-हानि का भी सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपने ध्येय में सफल नहीं होता।

(२) शनि-क्षेत्र पर काला तिल हो तो प्रेम के मामले में उसे बदनामी ओढ़नी पड़ती है, तथा पति-पत्नी में परस्पर कलह रहती है, एवं दोनों में से एक अग्नि में जलकर आत्महत्या करता है।

(३) यदि रवि-क्षेत्र पर काला तिल हो तो व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचाता है, तथा समाज में निंदनीय जीवन बिताता है। ऐसा व्यक्ति नेत्र-रोग से भी पीड़ित रहता है।

(४) बुध-क्षेत्र पर काला तिल हो तो व्यक्ति धोखेबाज, ठग या जेबकतरा होता है। व्यापार में इसे लगातार हानि उठानी पड़ती है।

(५) प्रजापति-क्षेत्र पर तिल की उपस्थिति यह स्पष्ट करती है कि व्यक्ति ऊपर से गिरकर अपने किसी अंग को भारी चोट पहुँचायेगा।

(६) चन्द्रमा के क्षेत्र पर यदि काला तिल हो तो व्यक्ति का विवाह-सम्बन्ध बड़ी देर से होता है, तथा प्रेम के क्षेत्र में निराशा ही प्राप्त करता है। जलघात भी इसके जीवन में एक से अधिक बार होता है।

(७) केतु-क्षेत्र पर काला तिल हो तो व्यक्ति बचपन से ही बीमार रहता है।

(८) शुक्र-क्षेत्र पर काला तिल हो तो व्यक्ति कामपिपासु होता

है, पर गुप्तांगों में रोग रहने के कारण अपनी कामाग्नि शान्त नहीं कर पाता। ऐसा व्यक्ति प्रेमिका के हाथों तिरस्कृत भी होता है।

(९) राहु-क्षेत्र पर काला तिल हो तो व्यक्ति यौवनावस्था में धन की कमी के फलस्वरूप घोर दु:ख उठाता है।

(१०) जीवन-रेखा पर यदि काला तिल हो तो व्यक्ति टी० बी० या लम्बे समय तक चलनेवाली बीमारी से ग्रस्त रहता है। उसका स्वभाव चिड़चिड़ा तथा खीजभरा हो जाता है।

(११) मस्तक-रेखा पर यदि तिल हो तो सिर पर भारी चोट लगती है, तथा उसे मस्तिष्क-सम्बन्धी कई बीमारियाँ घेरे रहती हैं।

(१२) हृदय-रेखा पर काले तिल की उपस्थिति हृदय की दुर्बलता को प्रकट करती है।

(१३) रवि-रेखा पर काला तिल व्यक्ति की उन्नति में बाधास्वरूप होता है, तथा उसे निरन्तर असफलताएँ ही हाथ लगती हैं।

(१४) भाग्य-रेखा पर काला तिल हो, तो ऐसा तिल दुर्भाग्य-पूर्ण ही कहा जायेगा। यह भाग्योन्नति में बाधास्वरूप गिना जाता है।

(१५) स्वास्थ्य-रेखा पर काला तिल हो, तो व्यक्ति निरन्तर बीमार रहता है तथा अस्वस्थता के कारण कभी सुख का अनुभव नहीं करता।

(१६) विवाह-रेखा पर काले तिल की उपस्थिति विवाह-संबंधी अड़चनें ही स्पष्ट करती है।

(१७) मंगल-रेखा पर यदि तिल हो तो व्यक्ति दब्बू, कायर तथा पस्त-हिम्मत होता है।

(१८) चन्द्र-रेखा पर तिल मानव की उन्नति में बाधास्वरूप होता है तथा जलघात स्पष्ट करता है।

(१९) यात्रा-रेखा पर यदि काला तिल हो तो व्यक्ति की मृत्यु यात्रा के दौरान होती है।

वृत्त—छोटे-छोटे गोल घेरों को वृत्त कहा जाता है। इसे कन्दुक, घेरा या सूर्य भी कहते हैं।

१—गुरु-क्षेत्र पर वृत्त का चिह्न हो तो व्यक्ति निश्चय ही उच्च पद प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली गिना जाता है, तथा अपने प्रभाव से काफी सफलताएँ प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति को विवाह में भारी दहेज मिलता है।

२—यदि शनि-क्षेत्र पर वृत्त हो तो व्यक्ति अचानक धनलाभ करता है, भाग्य उसका साथ देता है।

३—रवि-क्षेत्र पर वृत्त हो तो व्यक्ति उच्च विचारोंवाला, तथा देश-विदेश में प्रसिद्धि प्राप्त करनेवाला होता है।

४—बुध-क्षेत्र पर वृत्त हो तो व्यक्ति व्यापार में भारी सफलता प्राप्त करता है, तथा ऐश-आरामपूर्ण जीवन व्यतीत करने में समर्थ होता है।

५—प्रजापति-क्षेत्र पर वृत्त का चिह्न मानव को निष्क्रिय एवं पुरुषार्थहीन बना देता है।

६—चन्द्र-क्षेत्र पर वृत्त का चिह्न व्यक्ति को बीमार बनाता है, तथा जल से घात होता है।

७—शुक्र-क्षेत्र पर वृत्त का चिह्न व्यक्ति को कामासक्त, इन्द्रिय-लोलुप तथा भोगी बना देता है। ऐसे व्यक्ति नपुंसक भी देखे गए हैं।

८—मंगल-क्षेत्र पर वृत्त की उपस्थिति व्यक्ति को कायर तथा रणभीरु बना देती है।

९—जीवन-रेखा पर वृत्त का होना मनुष्य की दृष्टि को कमजोर करता है।

१०—मस्तिष्क-रेखा पर वृत्त मानव को मस्तिष्क-सम्बन्धी रोगों से पीड़ित रखता है।

११—हृदय-रेखा पर वृत्त मानव को हृदयहीन बनाता है।

१२—रवि-रेखा पर यदि वृत्त हो, तो व्यक्ति अपूर्व सफलता प्राप्त करता है, तथा वह धन-मान-पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करने में समर्थ होता है।

१३—भाग्य-रेखा पर वृत्त मानव के भाग्य को क्षीण करता है। ऐसा व्यक्ति जीवनभर परेशानियों से ग्रस्त रहता है।

हस्त-चिह्न		
त्रिभुज △ ⊳ ▷ ▷ ≿	+ × χ धन चिन्ह या क्रॉस	कोण
बिन्दु	○ ⬭ 0 कन्दुक गोल	द्वीप
वर्ग या चतुर्भुज □ ▯	जाल	नक्षत्र या तारा ✳ ✕ *

१४—विवाह-रेखा पर वृत्त व्यक्ति को आजीवन कुँवारा रखने में सहायता देता है।

१५—यात्रा-रेखा पर वृत्त या बन्दुक का चिह्न व्यक्ति को यात्रा में मरणांतक कष्ट दिखाता है।

द्वीप—हथेली में किसी भी जगह यह द्वीप चिह्न मिल सकता है। द्वीप जहाँ भी होता है, उस स्थलविशेष को हानि पहुँचाता है, पर यह हानि जीवनभर नहीं रहती, अपितु जितना भाग यह द्वीप घेरता है, आयु के उतने ही भाग में कष्ट उठाने पड़ते हैं।

१—गुरु-पर्वत पर द्वीप हो तो व्यक्ति के आत्मविश्वास में कमी आ जाती है, तथा उसे अपनी कार्यक्षमता पर कोई भरोसा नहीं रहता।

२—शनि-क्षेत्र पर यदि द्वीप हो तो व्यक्ति को पग-पग पर तकलीफें उठानी पड़ती हैं।

३—रवि-क्षेत्र पर द्वीप हो तो व्यक्ति सदैव हतोत्साहित रहता है, तथा ईर्ष्यालु प्रकृति का हो जाता है।

४—बुध-क्षेत्र पर द्वीप का चिह्न व्यापार या वैज्ञानिक कार्यों से हानि पहुँचाता है, तथा समाज में उपहास का पात्र बनाता है।

५—चन्द्र-क्षेत्र पर द्वीप हो तो व्यक्ति निस्तेज, हतोत्साहित तथा क्रूर बन जाता है।

६—शुक्र-क्षेत्र पर द्वीप का चिह्न हो तो उसे अपने प्रिय का वियोग सहना पड़ता है। जीवन में चतुर्दिक् इसे निराशा का सामना ही करना पड़ेगा।

७—जीवन-रेखा पर द्वीप हो तो व्यक्ति वर्णसंकर होता है।

८—मस्तिष्क-रेखा पर द्वीप हो तो व्यक्ति वंशपरम्परागत मस्तिष्क-सम्बन्धी रोगों से दुःखी रहता है।

९—हृदय-रेखा पर द्वीप की उपस्थिति हृदय की कमजोरी व्यक्त करती है, तथा हृदय-सम्बन्धी रोग बढ़ते हैं।

१०—रवि-रेखा पर द्वीप हो तो व्यक्ति अपने सभी कार्यों में बदनामी सहन करता है।

११—भाग्य-रेखा पर द्वीप का चिह्न भाग्यहीनता की ओर ही

संकेत करता है।

१२—स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप हो तो व्यक्ति को कई प्रकार के रोग घेरे रहते हैं।

१३—विवाह-रेखा पर द्वीप का चिह्न शीघ्र ही प्रिय की मृत्यु को देखता है।

१४—चन्द्र-रेखा पर द्वीप मानसिक शक्ति को कमजोर करता है।

१५—यात्रा-रेखा पर द्वीप का चिह्न यात्रा में मृत्यु का होना बताता है।

वर्ग—चार भुजाओं से घिरे हुए क्षेत्र को वर्ग कहा जाता है। कुछ लोग इसे कोण अथवा समकोण भी कहते हैं।

१—गुरु-क्षेत्र पर वर्ग का चिह्न हो तो व्यक्ति सफल प्रशासक होता है, तथा देशव्यापी ख्याति अर्जित करता है। एक साधारण कुल में भी जन्म लेकर ऐसा व्यक्ति उच्चपद पर पहुँच जाता है।

२—शनि-क्षेत्र पर वर्ग हो तो व्यक्ति किसी आकस्मिक संकट से छुटकारा पाता है। ऐसा व्यक्ति मौत के मुँह में भी जाकर सकुशल बच जाता है।

३—यदि रवि-क्षेत्र पर वर्ग हो तो व्यक्ति अपने जीवन में धन, मान, पद, प्रतिष्ठा इत्यादि प्राप्त करता है, तथा उसकी ख्याति शुभ कार्यों के परिणामस्वरूप होती है।

४—यदि बुध-क्षेत्र पर वर्ग हो तो व्यक्ति किसी दैवी या व्यापारिक संकट से उबरता है, तथा जेल जाने से बच जाता है।

५—चन्द्र-क्षेत्र पर वर्ग हो तो व्यक्ति की कल्पना-शक्ति बढ़ जाती है, तथा वह विवेकवान्, धैर्यवान्, क्षमावान् तथा दयावान् बन जाता है।

६—केतु-क्षेत्र पर ऐसा वर्ग हो तो व्यक्ति का भाग्योदय शीघ्र होता है, तथा ऐसा वर्ग उसे यौवनावस्था तक संकटों से मुक्ति दिलाता है।

७—शुक्र-क्षेत्र पर यदि ऐसा वर्ग हो तो व्यक्ति प्रेम के क्षेत्र में सहिष्णुता बरतता है। कामान्ध होने पर भी वह बदनामी से बचा रहता है।

८—यदि मंगल-क्षेत्र पर वर्ग हो तो व्यक्ति झगड़े-टंटे से दूर रहता है तथा अपने क्रोध को संयत रखने का सफल प्रयास करता है।

९—राहु-क्षेत्र पर वर्ग का चिह्न हो तो व्यक्ति कारावास-दण्ड न भोगकर जंगलों में रहता है।

१०—यदि जीवन-रेखा पर वर्ग का चिह्न हो तो व्यक्ति मरणांतक कष्ट के क्षणों में भी जीवित बच जाता है।

११—मस्तिष्क-रेखा पर वर्ग का चिह्न मानव-मस्तिष्क को उर्वर तथा क्रियाशील बनाता है।

१२—हृदय-रेखा पर वर्ग हो तो व्यक्ति के विवाह में किसी भी प्रकार की अड़चनें नहीं आती, तथा वह हृदय से सबल रहता है।

१३—रवि-रेखा पर यदि वर्ग का चिह्न हो, तो व्यक्ति धन, मान, प्रतिष्ठा और यश प्राप्त करता है।

१४—भाग्य-रेखा पर यदि वर्ग का चिह्न हो तो व्यक्ति का भाग्योदय शीघ्र होता है।

१५—स्वास्थ्य-रेखा पर पड़ा हुआ वर्ग स्वास्थ्य को उन्नत कोटि का रखता है।

१६—विवाह-रेखा पर यदि वर्ग का चिह्न हो तो उसे ससुराल से प्रचुर द्रव्य मिलता है तथा सुशील पत्नी मिलती है।

१७—चन्द्र-रेखा पर वर्ग का होना मानव की उन्नति में सहायक होता है।

१८—यात्रा-रेखा पर वर्ग की उपस्थिति व्यक्ति के जीवन को सानन्द बिताने योग्य बताती है।

जाल—आड़ी रेखाओं पर खड़ी रेखाएँ होने से एक प्रकार का जाल सा बन जाता है। यह व्यक्तियों की हथेलियों में कई स्थानों पर देखने को मिलता है। हथेलियों पर विभिन्न स्थानों पर पड़े इन जालों का फलादेश भिन्न-भिन्न है।

१—यदि गुरु-क्षेत्र पर रेखा-जाल हो तो व्यक्ति घमण्डी, स्वार्थी, निर्दयी तथा निर्लज्ज हो सकता है।

२—शनि-क्षेत्र पर जाल हो तो व्यक्ति आलसी, अकर्मण्य, कंजूस

तथा अस्थिर चित्तवाला होता है।

३—यदि यह जाल रवि-क्षेत्र पर हो तो व्यक्ति समाज में निन्दा तथा उपहास का पात्र बनता है।

४—बुध-क्षेत्र पर यदि रेखा-जाल हो तो व्यक्ति अपने ही किये कार्यों से नुकसान उठाता है, तथा जीवन-भर पछताता रहता है।

५—प्रजापति-क्षेत्र पर जाल हो तो व्यक्ति के हाथ से हत्या होती है।

६—चन्द्र-क्षेत्र पर यदि जाल हो तो व्यक्ति अधीर, असन्तुष्ट तथा चंचल चित्तवाला होता है।

७—केतु-क्षेत्र पर यदि यह जाल हो तो व्यक्ति चेचक आदि छूत की बीमारियों से ग्रस्त रहता है।

८—यदि शुक्र-क्षेत्र पर रेखा-जाल हो तो व्यक्ति भोगी, लम्पट, अधीर और कामातुर होता है।

९—मंगल-क्षेत्र पर जाल की उपस्थिति मानसिक अशान्ति का चिह्न है।

१०—राहु-क्षेत्र पर यदि जाल का चिह्न हो तो व्यक्ति का दुर्भाग्य जिन्दगी-भर उसका पीछा नहीं छोड़ता।

११—मणिबन्ध पर यदि रेखा-जाल हो तो व्यक्ति का हद से ज्यादा पतन हो जाता है।

नक्षत्र या तारे—हाथ में कई स्थानों पर नक्षत्र या तारों के चिह्न दिखाई देते हैं। विभिन्न स्थलों पर इनके होने से फलादेश में भी अन्तर आता है।

१—गुरु-क्षेत्र पर यदि नक्षत्र का चिह्न हो तो व्यक्ति को निश्चय ही अपने जीवन में शक्ति, अधिकार, पद, कीर्ति, बड़ाई और लक्ष्मी प्राप्त होती है। उसकी समस्त कार्य-क्षमताएँ उन्नति की ओर अग्रसर होने लगती हैं तथा शीघ्र ही वह सम्माननीय पद प्राप्त कर लेता है। उसे जीवन में अचानक धन-प्राप्ति भी होती है।

२—यदि शनि-क्षेत्र पर नक्षत्र का चिह्न हो तो व्यक्ति भाग्यवान्, सही दिशा में चिन्तन करनेवाला, गुणवान् तथा प्रसिद्ध होता है। वृद्धावस्था इन लोगों की शुभ नहीं कही जा सकती।

३—यदि रवि-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो तो व्यक्ति जीवन में पूर्ण ऐश्वर्य-भोग करता है। उसके जीवन में किसी भी प्रकार की कमी नहीं रहती। जीवन में मानसिक शान्ति बनी रहती है।

४—बुध-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न व्यक्ति को कुशाग्र-बुद्धि, उदार, सम्मानवान् तथा महान् प्रभावशाली बनाता है। यह व्यक्ति समाजसेवी, परोपकारी तथा धनी होता है।

५—चन्द्र-क्षेत्र पर यदि नक्षत्र का चिह्न हो तो व्यक्ति ऊँचे स्तर का कलाकार होता है, तथा काव्य के माध्यम से वह धन और यश दोनों अर्जित करता है।

६—यदि केतु-क्षेत्र पर नक्षत्र का चिह्न हो तो व्यक्ति का बाल्यकाल सुखमय बीतता है, तथा जीवन में धनी बनता है।

७—शुक्र-पर्वत पर नक्षत्र का चिह्न व्यक्ति की काम-भावनाओं को तीव्र करता है; वह प्रेम के क्षेत्र में सफल होता है, तथा श्रेष्ठ सुन्दरी से उसका विवाह होता है।

८—मंगल-क्षेत्र पर नक्षत्र का चिह्न हो तो व्यक्ति शूरवीर, धैर्यवान् तथा साहसी होता है। युद्ध में अपूर्व साहस दिखाने के फलस्वरूप इसकी प्रसिद्धि होती है, तथा देशव्यापी सम्मान मिलता है।

९—राहु-क्षेत्र पर नक्षत्र हो तो व्यक्ति का शुभ-भाग्य सर्वदा उसका साथ देता है, तथा वह अपार कीर्ति का अधिकारी होता है।

१०—अंगूठे पर नक्षत्र का चिह्न हो तो व्यक्ति की इच्छाशक्ति अत्यन्त प्रबल होती है, तथा वह कर्मठ, सहनशील और सफल व्यक्तित्व-सम्पन्न होता है।

११—आयु-रेखा पर नक्षत्र हो तो व्यक्ति के लिए अशुभ होता है, तथा वह आकस्मिक मृत्यु का शिकार होता है।

१२—मस्तिष्क-रेखा पर नक्षत्र की उपस्थिति व्यक्ति की बुद्धि कुण्ठित कर देती है, तथा वह स्नायविक दुर्बलताओं से ग्रस्त रहता है।

१३—हृदय-रेखा पर नक्षत्र का होना व्यक्ति की हृदय-सम्बन्धी बीमारियों को बढ़ाने में सहायक होता है।

१४—रवि-रेखा पर नक्षत्र हो तो व्यक्ति को भारी सफलता मिलती है तथा आकस्मिक द्रव्य-लाभ होता है।

१५—स्वास्थ्य-रेखा पर यदि नक्षत्र का चिह्न हो तो व्यक्ति को जीवन में मरणांतक कष्ट उठाना पड़ता है, तथा उसका स्वास्थ्य चौपट हो जाता है।

१६—विवाह-रेखा पर यदि यह चिह्न हो तो व्यक्ति के विवाह में कई बाधाएँ आती हैं, तथा उसका वैवाहिक जीवन सुखी नहीं रहता।

१७—मंगल-रेखा पर नक्षत्र हो तो व्यक्ति की मृत्यु आत्मघात से होती है।

१८—चन्द्र-रेखा पर यदि तारे का चिह्न दिखाई दे तो व्यक्ति जलोदर रोग से ग्रस्त रहता है, तथा उसकी उन्नति में बाधा पहुँचती है।

१९—यात्रा-रेखा पर नक्षत्र हो तो व्यक्ति की मृत्यु निश्चय ही यात्रा के दौरान होती है।

नक्षत्र-चिह्न का अध्ययन तथा फलकथन पूरी देखभाल करने के पश्चात् ही सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

१६

विशेष योग

पीछे के अध्यायों में हमने प्रमुख रेखाओं तथा चिह्नों का सम्यक् अध्ययन किया। इस अध्ययन में हम कुछ प्रमुख योगों का विवेचन करें। यद्यपि यह विषय अपने-आप में इतना विस्तृत है कि इसपर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ का निर्माण हो सकता है, फिर भी पाठकों की जानकारी के लिए मैं प्रमुख योगों का वर्णन प्रस्तुत कर रहा हूँ।

१. राज्य योग—जिस पुरुष के दाहिने हाथ के मध्य में अश्व, घड़ा या कदली-स्तम्भ का चिह्न हो, वह निश्चय ही उच्चतम पद

प्राप्त करता है।

२. लक्ष्मी योग—जिसके दाहिने हाथ में धनुष, चक्र या माला का चिह्न सुशोभित हो, वह जीवन-भर लक्ष्मी भोगता है, तथा अटूट लक्ष्मी का स्वामी रहता है।

३. प्रधान योग—हथेली में सूर्य रेखा निर्दोष होकर मस्तक-रेखा से मिल रही हो, तथा मस्तक-रेखा ऊपर उठकर गुरु-पर्वत को छूती हो तथा इस प्रकार श्रेष्ठ चतुर्भुज बनता हो तो व्यक्ति देश का प्रधान—राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री—बनता है।

४. प्रचण्ड योग—हथेली में गुरु-पर्वत तथा सूर्य-पर्वत ऊँचे उठे हुए हों, तथा शनि-रेखा एवं बुध-रेखा निर्दोष, गहरी, स्पष्ट और लालिमा लिये हुए हों तो व्यक्ति प्रान्त का प्रधान(राज्यपाल)होता है।

५. राज्याधिकारी योग—जिस पुरुष के हाथ में शनि-पर्वत पर स्पष्ट त्रिशूल हो, तथा चन्द्र-रेखा एवं भाग्य-रेखा परस्पर मिल रही हों तो व्यक्ति आई०ए०एस० अधिकारी बन सफलता प्राप्त करता है।

६. कूटनीतिज्ञ योग—गुरु-पर्वत तथा मंगल-पर्वत ऊँचे उठे हुए हों तथा मस्तिष्क-रेखा द्विजिह्वी हो तो व्यक्ति निश्चय ही राजदूत होता है, तथा सफलता प्राप्त करता है।

७. कमिश्नर योग—मंगल-पर्वत ऊँचा हो, तथा सूर्य-पर्वत भी ऊँचा हो, साथ ही सूर्य-रेखा प्रबल हो तो ऐसा योग कमिश्नर-योग कहलाता है।

८ अधिकारी योग—यदि गुरु, शनि तथा सूर्य-पर्वत ऊँचे हों, तथा रवि-रेखा प्रबल, घनी और लम्बी हो तो व्यक्ति शिक्षा-विभाग में उच्च पद सुशोभित करता है।

९. न्यायाधीश योग—जिसके हाथ में हृदय-रेखा तथा मस्तिष्क-रेखा के बीच चतुष्कोण बनता हो, मस्तिष्क रेखा स्पष्ट हो, तथा बुध की उँगली का पहला पोर कोणीय हो तो व्यक्ति न्यायाधीश के पद को सुशोभित करता है।

१०. कानून योग—मस्तिष्क-रेखा सीधी और द्विजिह्वी हो तथा हथेली चपटी हो तो व्यक्ति वकील बनता है, तथा यश, धन, मान, और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

११. ब्रह्म योग—यदि हथेली में गुरु-पर्वत उभरा हुआ तथा ऊँगली लम्बी हो, चन्द्र-पर्वत उच्च हो तथा मस्तक-रेखा लम्बी और नीचे झुकी हुई हो तो व्यक्ति ब्रह्मज्ञानी या योगी बनता है।

१२. साधु योग—यदि शनि और गुरु-पर्वत उच्च हों, तथा शनि-पर्वत पर त्रिकोण का चिह्न हो, तो व्यक्ति जीवन में घरबार छोड़कर साधु बन जाता है।

१३. महापुरुष योग—यदि हथेली के मध्य में बड़ा चतुष्कोण बनता हो और विरोधक रेखाएँ न काटती हों तो महापुरुषयोग बनता है। ऐसा व्यक्ति निश्चय ही समाज में श्रेष्ठ पद का अधिकारी होता है।

१४. ज्योतिषी योग—जिस व्यक्ति के हाथ में गुरु-वलय हो तथा बुध, शुक्र और शनि-पर्वत उन्नत तथा पुष्ट हों, तो व्यक्ति सफल ज्योतिषी एवं भविष्यवक्ता बनता है।

१५. साहित्यज्ञ योग—जिस व्यक्ति के हाथ में कनिष्ठिका उँगली बड़ी, पुष्ट तथा सुनियोजित हो, तथा मस्तक-रेखा स्पष्ट हो तो व्यक्ति सफल साहित्यज्ञ बनता है, तथा धन, मान और यश अर्जित करता है।

१६. चिकित्सक योग—जिस व्यक्ति के हाथ में मङ्गल-पर्वत तथा बुध-पर्वत उन्नत हों, तथा बुध-पर्वत पर चार खड़ी लकीरें हों, तो वह सफल डॉक्टर होता है।

१७. महालक्ष्मी योग—यदि हाथ में शनि और सूर्य की उँगलियाँ मध्यमा तथा अनामिका के समान ऊँचाई की हों, तथा मस्तक-रेखा निर्दोष एवं गहरी हो तो व्यक्ति सफल व्यापारी होता है और लक्ष्मी उसकी दासी बनकर रहती है।

१८. कृषि योग—जिस व्यक्ति के हाथ में शनि उँगली की दूसरी पोर लम्बी हो, तथा हथेली सख्त हो तो व्यक्ति सफल किसान होता है और भूमि से लाभ उठाता है।

१९. प्रसिद्ध योग—कनिष्ठिका उँगली में अनामिका से अधिक ऊर्ध्व रेखाएँ हों, और बुध-रेखा तथा मस्तक रेखा का पारस्परिक सम्बन्ध हो तो व्यक्ति देश-विदेश में ख्याति अर्जित करता है।

२०. विज्ञान योग—यदि उँगलियाँ नोंकदार हों तो व्यक्ति

निश्चय ही विज्ञान उन्नतिमें कर सफल वैज्ञानिक बनता है।

२१. कलाकार योग—जिस व्यक्ति के हाथ में उँगलियाँ कोणदार तथा मजबूत हों, उनका पहला सिरा लम्बा हो, तो व्यक्ति निश्चय ही कलाकार बनता है।

२२. संगीत योग—शुक्र-पर्वत ऊँचा हो, तथा कलाकार-योग घटित होता हो, तो व्यक्ति संगीत के क्षेत्र में भारी सफलता प्राप्त करता है।

२३. दीर्घायु योग—आयु-रेखा स्पष्ट, गहरी तथा निर्दोष हो, एवं हथेली लाल हो तो व्यक्ति दीर्घायु प्राप्त करता है।

२४. भाग्योन्नति योग—भाग्य-रेखा प्रबल, गहरी तथा निर्दोष हो, एवं मस्तिष्क-रेखा स्वच्छ तथा उन्नत हो, तो व्यक्ति शीघ्र ही भाग्योदय प्राप्त करता है।

२५. पतिव्रता योग—जिस नारी के हाथ में मंगल-पर्वत पर गुणा का चिह्न हो तथा बृहस्पति-पर्वत उन्नत हो तो वह स्त्री पतिव्रता होती है।

२६. पराक्रम योग—जिसके हाथ में मगल उन्नत हो तथा कनिष्ठिका उँगली लम्बी तथा सुदृढ़ हो तो व्यक्ति पराक्रमी तथा सेना या पुलिस में उच्चपदाधिकारी होता है।

२७. शत्रु योग—यदि मणिबन्ध पर कोई रेखा सर्पाकार निकले तो उसे जीवनभर शत्रुओं से संघर्ष करते रहना पड़ता है।

२८. तस्कर योग—कनिष्ठिका उँगली टेढ़ी हो, तो बुध-पर्वत उन्नत हो, साथ ही हाथ में रेखा-जाल हो तो व्यक्ति तस्कर होता है।

२९. स्वार्थी योग—मस्तिष्क-रेखा तथा हृदय-रेखा आपस में मिली हुई हो एव हथेली का मध्य भाग श्वेत हो तो व्यक्ति प्रबल स्वार्थी होता है।

३०. प्रणय योग—शुक्र-पर्वत पर कई आड़ी रेखाएँ हों, पर वे जीवन-रेखा से न मिलती हों तो व्यक्ति प्रेम के क्षेत्र में सफल रहता है।

३१. व्यभिचारी योग—यदि भाग्य-रेखा पर द्वीप का चिह्न

हो तथा शुक्र-रेखा जीवन-रेखा को काटती हो तो व्यक्ति (या स्त्री) व्यभिचारी होता है।

१२. अकाल मृत्यु योग—भाग्य, आयु तथा मस्तिष्क-रेखा पर गुणक चिह्न हो तो व्यक्ति की अकाल मृत्यु होती है।

१३. मातृहन्ता योग—यदि भाग्य-रेखा के आरम्भ मे त्रिकोण या द्वीप हो तो व्यक्ति की माँ की मृत्यु बचपन में ही हो जाती है।

१४. सम्पत्तिनाश योग—यदि मंगल-क्षेत्र पर काले धब्बे हों तो व्यक्ति पूर्वार्जित संपत्ति नष्ट कर देता है।

१५. कमल योग—भाग्य-रेखा तथा मस्तिष्क-रेखा निर्दोष हों तो व्यक्ति जीवन में पूरी सफलता प्राप्त करता है।

१७

काल-निर्धारण

मानव-जीवन इतना अधिक जटिल और पेचीदा है कि इसे समझना सरल कार्य नहीं। वह भूतकाल में शिक्षा ग्रहण करता हुआ वर्तमान में जीता है, परन्तु वह भविष्य में सदैव आतंकित और उत्साहित रहता है। उसके मन पर निरन्तर एक प्रश्न कौतूहल की तरह छाया रहता है कि मेरा भविष्य क्या है? भविष्य में मैं कितना ऊँचा उठ सकूँगा? यदि मेरे जीवन में बाधाएँ हैं तो कैसी, कितनी और कब?

और यह 'कब'-प्रश्न हस्तरेखाविद् के लिए समस्या बन जाता है। वह रेखाओं के माध्यम से भावी फल स्पष्ट कर सकता है, भविष्य काल को पढ़ सकता है, परन्तु सही-सही समय-निर्धारण करना उसके लिए अत्यन्त कठिन हो जाता है।

मैंने अपना जीवन इसी कार्य में खपा दिया और उसका अधि-

काश समय इस पद्धति के निर्माण-हेतु लगाया कि क्या हस्त-रेखाओं के माध्यम से ठीक-ठीक समय निकाला जा सकता है ? अब मैं यह पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि मात्र हाथ की रेखाओं से किसी भी घटना के घटित होने का सही-सही समय निकाला जा सकता है। यानी, भाग्योदय कब होगा ? किस प्रकार से होगा ? कहाँ होगा—देश या विदेश में ? किन तरीकों से होगा ? नौकरी कब लगेगी ? उन्नति कब होगी ? व्यापार में लाभ कितना और कब होगा ? किस वस्तु के व्यापार से लाभ होगा ? आय व्यय कैसा रहेगा ? सन्तान-सुख कैसा रहेगा ? पत्नी-पक्ष कैसा होगा ? क्या ससुराल से धन मिलेगा या नहीं ? मृत्यु कब और किस बीमारी से होगी ? क्या विदेश-यात्रा होगी ? ये और ऐसे सैकड़ों प्रश्नों को हस्तरेखाविद् बता सकता है, और वह इनका समय निर्धारित कर सकता है।

इस अध्याय में मैं भावी की घटनाओं का समय निकालने की विधि स्पष्ट कर रहा हूँ। यद्यपि इस छोटी-सी पुस्तक में यह संभव नहीं कि मैं इस पद्धति का सांगोपांग विवेचन कर सकूँ, क्योकि यह पद्धति तथा इसे स्पष्टत: समझाने के लिए काफी क्षेत्र की आवश्यकता है ; फिर भी मैं संक्षेप में बिन्दु प्रस्तुत कर देता हूँ, जिसके प्रकाश में प्रेक्षक आगे बढ़ सके, अध्ययन-मनन करके सफलता प्राप्त कर सके।

पाश्चात्य हस्तरेखा-विशेषज्ञों ने समय-निर्धारण हेतु, 'सप्तवर्षीय नियम' तथा भारतीय आर्य-ऋषियों ने 'पंचवर्षीय नियम' अपनाया है, परन्तु यहाँ यह प्रश्न उठता है कि क्या इन पूरे पाँच वर्षों में एक-ही-एक घटना घटित होगी, जबकि जीवन इतना जटिल हो गया है ? वस्तुत: हमें कुछ और सूक्ष्मता में जाना होगा।

पीछे के पृष्ठों मे हमने जीवन-रेखा, हृदय-रेखा, मस्तक-रेखा, भाग्य-रेखा, स्वास्थ्य-रेखा, मंगल-रेखा, मणिबन्ध-रेखा आदि का परिचय दिया, इसके साथ-ही-साथ प्रभावक रेखाओं के बारे में भी जानकारी दी थी कि ये छोटी-छोटी सूक्ष्म रेखाएँ प्रत्येक रेखा से ऊपर की ओर उठती हुई-सी दृष्टिगोचर होती हैं। इन्हीं रेखाओं पर अधिक ध्यान दिया जाय, क्योंकि यही रेखाएँ प्रत्येक घटना का वर्ष, मास
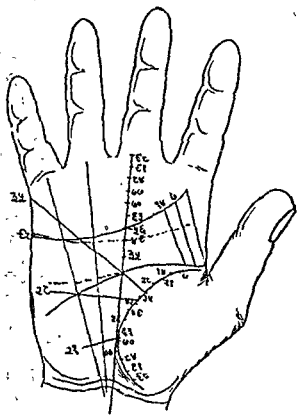
और दिन बताने में समर्थ होती हैं।

पर इसके साथ-ही-साथ ध्रुवांक की भी जानकारी आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति की हथेली में प्रत्येक रेखा पर ये प्रमावक रेखाएँ निश्चय ही होती हैं, साथ ही प्रत्येक व्यक्ति का ध्रुवांक अलग-अलग होता है।

ध्रुवांक निकालना पुरुष के दाहिने हाथ तथा स्त्री के बायें हाथ की पाँचों उंगलियों के प्रत्येक पोर के तीन-तीन पोरुओं पर स्थित खड़ी रेखाओं को गिन लिया जाय ; पर उन्ही रेखाओं को गिनना चाहिए, जो स्पष्ट, खड़ी, लम्बी और पूरी हों ; टूटी हुई या बहुत छोटी न हों। इसके साथ ही अंगूठे के नीचे शुक्र-पर्वत पर स्थित रेखाओं को भी गिनकर उनमें मिला दिया जाय। इन सब रेखाओं के योग को तीन से गुणा करके गुणनफल में से दो घटा दें, तथा जो शेष पीछे बचे, उसमें ९६ (छियानवे) का भाग दे दें। लब्धि वर्ष-मास-दिन निकाल दें।

उदाहरणार्थ यदि किसी व्यक्ति की कुल इस प्रकार की संख्याओं का योग २४ आया, तो उपर्युक्त रीति के अनुसार २४ को तीन से गुणा किया, ७२ हुए, इनमें से दो घटाए तो शेष ७० रहे. इसमें ९६ का भाग देने पर लब्धि आठ मास तेईस दिन (लब्धि में बाईस आये, और पीछे जो शेष रहा, उसे भी एक दिन मानकर तेईस दिन मान लिये) आये। यह समय व्यक्ति का न्यून समय कहलाता है।

इस समय को ३ से भाग देने पर शून्य आता है, अतः इस व्यक्ति का सूक्ष्म समय २ मास १६ दिन आये।

हमें न्यून समय और सूक्ष्म समय को ध्यान में रखना चाहिये।

अब उदाहरण के लिए एक चालीस-पचास वर्ष का व्यक्ति हाथ फैलाकर यह पूछता है कि मेरा भाग्योदय कब होगा ?

इस समय भी ध्रुवांक को ध्यान से रखना है, ध्रुवांक को ३२ से गुणा कर १८ से भाग दो तो व्यक्ति का चालू वर्ष-मास निकल आएगा।

पूर्व उदाहरण में ध्रुवांक २४ है। इस २४ को ३२ से गुणा किया, तो गुणनफल ७६८ आये। इसमें १८ का भाग दिया, तो लब्धि ४२

वर्ष ८ मास आये। अतः यह स्पष्ट हुआ कि सामने जो हाथ फैलाकर व्यक्ति बैठा है, उसकी आयु ४२ वर्ष ८ मास की है।

अब जो इसका भाग्योदय समय निकलना है, वह इस उम्र के बाद का ही निकलना है।

जो भाग्य-रेखा मणिबन्ध से आरम्भ होकर मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा को काटती हुई मध्यमा उँगली के तीसरे पोरुए तक पहुँचती है, इस पूरी रेखा का प्रमाण ६६ वर्ष का समझना चाहिए।

जहाँ भाग्य-रेखा मस्तक-रेखा को काटती है, वह स्थल ३६वाँ वर्ष है, और जहाँ यह भाग्य-रेखा हृदय-रेखा को काटती है, वह ५७ वर्ष की समाप्ति की सूचक है, और हृदय-रेखा से ऊपरवाली रेखा का प्रमाण ३९ वर्ष का समझना चाहिए।

हमें ४२ वर्ष ८ मास से बड़े *व्यक्ति का भाग्योदय देखना है*, और यह समय निश्चय ही भाग्य-रेखा व मस्तक-रेखा के कटान, तथा भाग्य-रेखा व हृदय रेखा के कटान के बीच में है। इस बीच की रेखा की दूरी २१ वर्ष की है। इसे २१ भागों में विभाजित कर दीजिये, तो प्रत्येक भाग एक वर्ष का सूचक होगा; परन्तु नहीं, यह भाग्य-रेखा के अनुसार १ वर्ष का, पर उस व्यक्ति के लिए यह एक भाग न्यून समय अर्थात् ८ मास २३ दिन का है। तारीख का प्रारम्भ १८ तारीख से समझना चाहिए।

मस्तक-रेखा से ऊपर के छठे बिन्दु के बाद में (जबकि ४२ वर्ष समाप्त होंगे) यदि कोई श्रेष्ठ प्रभावक रेखा हो, उत्तम शुभ भाग्योदयी चिह्न हो, तो उस समय की गणना कर व्यक्ति के भाग्योदय का सही-सही समय निर्धारित किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ ४४ वर्ष के ऊपर तथा ४५वें वर्ष के नीचे कोई शुभ-चिह्न हो, तो उस समय की *गणना कर व्यक्ति का भाग्योदय* ४४ वर्ष (तथा जो भी महीने हों) तथा मास बताया जा सकता है। यदि इस प्रकार पाँच मास आते हों, तो कहा जा सकता है कि भाग्य-उदय ४४ वर्ष ५ मास के अनन्तर होगा।

यद्यपि इन सबको लिखने में इतना समय लग गया, परन्तु अभ्यास के बाद हाथ देखने पर एक मिनट में ध्रुवांक ज्ञात किया जा सकता है,

और तीन-चार मिनट के भीतर-भीतर न्यून समय, और सूक्ष्म समय तथा सामने बैठे व्यक्ति की वर्तमान आयु ज्ञात की जा सकती है।

अनुभव हो जाने के पश्चात् यह नापने वगैरह की जरूरत नहीं पड़ती, अपितु अभ्यास से तुरन्त घटना घटित होने का ठीक-ठीक समय निकाला जा सकता है। यह सब-कुछ ज्ञात करने में कठिनता से तीन या चार मिनट लग सकते हैं।

परन्तु जबतक पूरा अभ्यास न हो, तबतक सही ध्रुवांक नहीं निकाला जा सकता। कल्पित ध्रुवांक या गलत ध्रुवांक से गणित करने पर फल भी ठीक नहीं उतरता, एतदर्थ इस पद्धति को अपनाने के पूर्व प्रेक्षक को चाहिए कि वह व्यक्ति का हाथ ठीक-ठीक देखे, और पर्याप्त परिश्रम करके अनुभव प्राप्त करे, और तत्पश्चात् ही फलादेश का समय बताने का साहस करे।

जिस प्रकार भाग्य-रेखा का समय निकला है, इसी प्रकार अन्य रेखाओं—स्वास्थ्य, आयु, मस्तिष्क, हृदय, पर से भी ठीक-ठीक समय ज्ञात किया जा सकता है।

१८

हस्तचित्र लेने की रीति

सम्भवतः शायद ही कोई ऐसा महीना बीता होगा, जिस महीने मेरे पास बाहर से तीस-चालीस हाथों के फोटो नहीं आये होंगे, जो कि सम्भवतः शुभाशुभ जानने के लिए ही भेजे जाते हैं।

इनमें से कई फोटो या हस्तचित्र कोरे कागज पर स्याही से बने होते हैं, तथा कई फोटो कैमरे से खिंचे होते हैं।

यद्यपि मैं फोटो की अपेक्षा हाथ को वास्तविक रूप में देखने को ज्यादा महत्व देता हूँ, क्योंकि उसमें ग्रह-पर्वतों का उठान स्वाभाविक

रूप से देखा जा सकता है, परन्तु यह सभी के लिए सम्भव नहीं कि व्यक्तिगत रूप से मिलकर हाथ दिखा सकें। जो दूर हैं, या विदेशों में हैं, उनके पास तो एकमात्र तरीका हस्तचित्र या फोटो ही होता है।

जहाँ तक मेरा अनुभव है, फोटो से भी ग्रह-पर्वतों का उठान स्वाभाविक रूप से जाना जा सकता है, यदि उसे अनुभव हो। कैमरे से हाथ (हथेली) का जो फोटो लिया जाता है, वह निर्दोष होता है, और उसमें ग्रह-पर्वत, रेखाएँ, बिन्दु आदि स्वाभाविक रूप में आ जाते हैं। उनका अध्ययन-विवेचन भी ठीक रूप से किया जा सकता है, तथा उनपर जो फलादेश किया जाता है, वह पूर्णतः सही-सही किया जा सकता है। इसलिए जो सही-सही शुभाशुभ जानना चाहते हैं, उन्हें मैं फोटो भेजने की सलाह देता हूँ।

पर इसके साथ ही कई हस्तचित्र स्याही-मुद्रित भी आते हैं। इनमें से कुछ चित्र तो वास्तविक रूप में आ जाते हैं, पर अधिकांश सदोष, भ्रष्ट, अधूरे तथा अपूर्ण ही होते हैं। कहीं स्याही के अधिक फैल जाने से रेखाएँ ही मिट जाती हैं, तो कहीं रेखाएँ उभरती ही नहीं। इसीलिए मैं यहाँ हाथ का सही चित्र लेने की विधि प्रस्तुत कर रहा हूँ।

हाथ का चित्र तीन विधियों से लिया जा सकता है। मैं यहाँ पाठकों की जानकारी के लिए तीनों विधियों का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत कर रहा हूँ—

(१) धुएँ के द्वारा चित्र उतारना—एक सफेद चिकना और कड़ा कागज लें, जो कि व्यक्ति की हथेली से इतना बड़ा हो कि चारों तरफ तीन-तीन अंगुल जगह छूटी रहे। इसके बाद एक बड़ी शुद्ध कपूर की टिकिया लेकर किसी कटोरी में उसे जला दें; जलने पर उसमें से धुआँ निकलेगा। कागज को दोनों कोनों से पकड़ उसे धुएँ पर छितरा दें, पर इतना ध्यान रखें कि कागज लौ को न छूने पावे, नहीं तो कागज जल जाएगा; न कोने ही अधिक निकट हों, क्योंकि इससे भी कागज के जल जाने का खतरा रहता है।

पाठक देखेंगे कि इस प्रकार सावधानीपूर्वक कागज छितराने से

कागज पर धुआँ जमता जाएगा। यह धुआँ समानरूप से चारों तरफ जमना चाहिए। ऐसा न हो कि कहीं तो यह गाढ़ा हो जाय, और कहीं कागज बिलकुल ही कोरा रह जाय।

यदि एक टिकिया समाप्त हो जाय, तो दूसरी टिकिया डाल दें। कार्य शुरू करने से पूर्व ही कपूर की ८-१० टिकिया अपने पास रखनी चाहिये। जब यह विश्वास हो जाय कि कपूर की कालिख कागज पर चारों तरफ समान रूप से छा गई है तो कपूर बुझा दें और उस कागज को मेज पर इस प्रकार बिछा दें कि कालिखवाला भाग ऊपर की ओर रहे। मेज खुरदरी तथा ऊबड़-खाबड़ न हो।

फिर शान्ति से अपने दाहिने हाथ को उस कालिखवाले भाग पर जमा दें, बाएँ हाथ से दाहिने हाथ को कुछ दबाएँ और फिर हाथ बिना हिलाये ऊपर उठा दें। इस तरह से आपका हाथ स्पष्ट पूरा-का-पूरा छप जाएगा। इसी प्रकार बाँया हाथ भी छाप दें, और फिर इस चित्र पर नाम तथा जन्म की तिथि या तारीख लिखकर हस्तप्रेक्षक के पास सावधानी के साथ मोड़कर भेज दें।

यह चित्र मोड़कर भेजने में खतरा भी होता है, क्योंकि इसकी स्याही कच्ची होती है, अतः मोड़ने से फैल जाने का खतरा भी रहता है। यदि सुविधा हो तो इस चित्र पर एक सफेद कागज रखकर फिर मोड़ें, या दोनों तरफ मोटे कागज लगाकर ज्यों-के-ज्यों भेजें।

(२) प्रेस की स्याही द्वारा चित्र उतारना— प्रेस में जहाँ पुस्तकों की छपाई होती है, एक रोलर होता है, जिसपर स्याही लगी होती है। जब पुस्तकों की छपाई पूरी हो जाती है तो स्याही गहरी न रहकर हल्की पड़ जाती है। हमें इस हल्की स्याही की जरूरत है।

एक सफेद साफ कागज मेज पर बिछा दें, और फिर अपना दाहिना हाथ इस हल्की स्याही-लगे रोलर पर लगा दें। ध्यान रखें कि हाथ हिले नहीं! जब यह विश्वास हो जाय कि हाथ पर पूरी तरह से स्याही लग चुकी है, तो बिना इधर-उधर हिलाये हाथ ऊपर उठा दें, तथा ज्यों-का-त्यों कागज पर लगा दें। कागज पर से भी बिना हिलाये-डुलाये ऊपर की ओर ही उठावें। आप देखेंगे कि

हाथ का प्रिंट साफ-साफ आ गया है।

पर कई बार बीच का भाग, अंगूठे तथा उंगलियों के जोड़ों का चित्र स्पष्टतः नहीं उभरता। आप ऐसी दशा में एक ही हाथ के तीन-चार चित्र ले लें, जिससे कि यदि एक चित्र में कोई भाग स्पष्ट नहीं उभरा है, तो दूसरे चित्र में यह भाग स्पष्ट आ जाता है।

इस प्रकार बायें हाथ के भी ३-४ प्रिंट ले ें, और फिर सूखने दें। तत्पश्चात् उसपर प्रिंट लेने की तारीख, जन्म-समय व जन्म-दिनांक लिखकर फलाफल-हेतु हस्तरेखा-विशेषज्ञ के पास भेजा जा सकता है।

(३) फोटो द्वारा चित्र लेना—यह पद्धति सबसे अधिक प्रामाणिक और सही है। यद्यपि वह कुछ महंगी अवश्य है, पर इतनी नहीं कि इससे परेशानी हो।

फोटो देते समय फोटोग्राफर को कह देना चाहिए कि लाइट-व्यवस्था इतनी तेज न हो कि सूक्ष्म रेखाएँ चकाचौंध में छुप जायें, और न लाइट-व्यवस्था इतनी हल्की हो कि सूक्ष्म रेखाएँ आयें ही नहीं। फोटोग्राफर को यह अच्छी तरह समझा देना चाहिए कि हाथ का फोटो वह इस तरीके से ले कि बड़ी रेखाओं के साथ-साथ सूक्ष्म रेखाएँ भी साफ-साफ आ जायें।

फोटो का कागज उत्तम कोटि का दानेदार होना चाहिए, जिसपर फोटो निर्दोष रूप में आ जाय। जहाँ तक मैं समझता हूँ, पोस्ट-कार्ड साइज का फोटो फलाफल के लिए उत्तम रहता है; इससे छोटा फोटो सूक्ष्म होने के कारण स्पष्ट रेखाएँ नहीं उभार पाता।

उपर्युक्त तीनों पद्धतियों में से कोई भी पद्धति अपनाकर अपने हाथ का चित्र हस्तरेखाविद् के पास भेजा जा सकता है।

१६

हस्तरेखाओं से जन्म-तारीख व जन्म-समय निकालना

इस अध्याय में मैं उस पद्धति का विवेचन कर रहा हूँ, जो है तो सर्वाधिक कठिन मगर जो अभी तक सर्वाधिक गोपनीय रही है।

पूरे भारत में बहुत ही कम ऐसे हस्तरेखाविद् होंगे जो हाथ की रेखाओं के माध्यम से जन्म-तारीख व समय निकालने में समर्थ हों। मैंने अपने यौवनकाल के ८ वर्ष इस पद्धति को सीखने में घुला दिये। घटना कुछ इस प्रकार से घटित हुई थी कि मैं पाठकों को घटना सुनाने का लोभ संवरण नहीं कर सकता।

घटना आबू की है। मैं अपनी पत्नीसहित ग्रीष्मावकाश में आबू पर गया हुआ था। मुझे साधु-संन्यासियों के प्रति श्रद्धा प्रारम्भ से ही रही है। एक दिन जब मैं और पत्नी वसिष्ठ-आश्रम की ओर जा रहे थे, तो मार्ग में थककर एक पेड़ के नीचे विश्राम करने बैठ गये। मुझे वहाँ बैठे पाँच-सात मिनट ही बीते होंगे कि एक साधु आता दिखाई दिया, जिसके पूरे शरीर पर एक लंगोटी के अलावा कोई वस्त्र न था। वह निर्भीक भाव से बिना हिचकिचाहट के मेरे पास से आगे बढ़ गया। उनका चेहरा भव्य और देदीप्य था। मैं उन्हें रोक तो न सका, पर मैंने तथा धर्मपत्नी ने श्रद्धासहित उन्हें प्रणाम अवश्य किया।

वह साधु लगभग पचास कदम जाकर फिर लौटे और हमारे पास आकर खड़े हो गए। मैंने उनके लिए दरी पर बैठने के लिए जगह दी, पर वह दरी के पास ही एक पत्थर-खंड पर निश्चिन्त बैठ गये।

मैंने साधु से उनका नाम पूछा, तो वह बोले नहीं। मैं चुप रह गया। कुछ क्षण यों ही बीत गये। पत्नी ने एक बार फिर उनका नाम जानने की जिज्ञासा की, तो वे बोले, 'कृष्णानन्द ! तुम मुझे 'आनन्द' के नाम से जान सकते हो।"

फिर वे लगभग चार-पाँच मिनट तक चुप बैठे रहे फिर एकाएक बोले, "तुम मुझे जानते हो?"

"नहीं महाराज; पहले-पहल आपके दर्शन कर रहा हूँ।"

आनंद साधु हँसे ; बोले, "तुम नहीं जानते पर मैं तुम्हें जानता हूँ। इससे पूर्व-जीवन में तुम मेरे बड़े भाई थे और मैं तुमसे छोटा था। तुम्हारा बहुत अधिक स्नेह मुझपर था, और मुझपर बहुत अधिक उपकार था, जिसे अभी तक मैं चुका नहीं सका।"

मैं हतप्रभ-सा सुनता रहा। मेरे लिए यह सब-कुछ नया था। मैंने पूछा "कहाँ ? कब ?'

पर वे इस प्रश्न का कोई उत्तर न देकर बोले, "तुम अब भी ज्योतिष में रुचि रखते हो ?'

मेरे 'हाँ' कहने पर उन्होंने कहा, "तो मैं तुम्हें हस्तरेखा के द्वारा जन्म-समय, तारीख व जन्मकुण्डली निकालना सिखाकर उपकारों से मुक्त होना चाहता हूँ। तैयार हो ?"

मैं बोला नहीं। उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर सही-सही तिथि व जन्म-समय बता दिया, फिर मेरी पत्नी के चरणों को दूर से छूकर बोले, "इस जन्म में साधु हूँ, भाभी तो कहूँगा नहीं, पर आद्या माँ के रूप में आपको नमस्कार करता हूँ, हाथ दिखाना।"

दूर से हाथ देखकर मेरी पत्नी का भी सही-सही जन्म-समय बता दिया।

मैं चकित था। फिर उन्होंने मेरे भावी जीवन की लगभग ८० बातें बताईं, इस प्रकार से कि मानो कोई फिल्म देखता-देखता उसका वर्णन कर रहा हो, और मैं शीघ्रता से डायरी में उतारता रहा।

फिर वे लगभग डेढ़ घंटे तक मुझे हस्त-रेखाओं से जन्म-समय व जन्म-तारीख निकालने की विधि समझाते रहे। हस्त-रेखाओं से इष्ट, लग्न व जन्म-कुण्डली बनाने की पद्धति समझाते रहे। जब मैं

भली प्रकार समझ गया, तो बोले, "समझ गये ?"

मेरे 'हाँ' कहने पर बोले, "तो कहो—पूर्व-जन्म के उपकारों से 'आनन्द' मुक्त हुआ।"

मैंने इन्हीं शब्दों को गद्‌गद स्वर में दोहरा दिया। तुरन्त वे उठे, दोनों को प्रणाम किया, और वायुवेग से बिना कुछ कहे अपने मार्ग पर आगे बढ़ गये। मुश्किल से तीन-चार मिनट के बाद तो उनका अता-पता तक न था।

मैं ऐसा महसूस करने लगा, मानो कोई चित्र देखा हो, पर सब-कुछ सामने था—मैं बैठा हुआ और डायरी के पृष्ठ भरे हुए।

तब से आजतक मैं हर साल गर्मियों में इन्हीं दिनों आबू जाता हूँ, रोज हम दोनों वसिष्ठ-आश्रम जाकर उस पत्थर के पास उनकी प्रतीक्षा करते हैं पर व्यर्थ, सब-कुछ व्यर्थ। फिर कभी प्रिय भाई आनन्द से मिलना हो ही नहीं सका। याद करता हूँ, तो रोमांच आ जाता है और पत्नी की आँखों से अश्रुधार बहने लग जाती है। अस्तु।

मैं पाठकों के लाभार्थ यहाँ जन्म-तारीख तथा जन्म-समय निकालने की विधि स्पष्ट कर रहा हूँ; यद्यपि केवल पढ़ने से जन्म-तारीख निकालनी सुगम न होगी, क्योंकि अभ्यास, परिश्रम और लगन की जरूरत तो रहती ही है।

जन्म-संवत् का ज्ञान—मध्यमा का मूल शनि-पर्वत है, तथा तर्जनी का मूल बृहस्पति-पर्वत है। इन दोनों पर्वतों को ध्यान से देखें। शनि-पर्वत पर जितनी खड़ी रेखाएँ हों, उन्हें गिन लें। ये खड़ी रेखाएँ वे होनी चाहिए जो लम्बी, पतली, स्पष्ट और निर्दोष हों, तथा जिनका मूल मध्यमा उँगली के तीसरे पोर की जड़ हो।

इसी प्रकार बृहस्पति के पर्वत पर भी जितनी ऐसी रेखाएँ हों, उन्हें भी गिन लें।

शनि-पर्वत पर जितनी भी रेखाएँ हों, उन्हें ढाई से तथा गुरु-पर्वत पर जितनी रेखाएँ हों उन्हें डेढ़ से गुणा करके परस्पर जोड़ दें, फिर इनमें मंगल पर्वत पर जितनी रेखाएँ दिखें, उन्हें भी जोड़ दें। व्यक्ति उतने ही वर्षों का होगा।

उदाहरणार्थ किसी व्यक्ति के शनि-पर्वत पर १४ रेखाएँ तथा गुरु-पर्वत पर ८ रेखाएँ एवं मंगल-पर्वत पर ३ रेखाएँ हैं। उपर्युक्त नियम के अनुसार १४ की ढाई से गुणा करने पर ३५, गुरु की ८ रेखाओं को डेढ़ से गुणा करने पर १२, तथा मंगल की ३, कुल योग ३५+१२+३=५० हुए, अतः सामने बैठा व्यक्ति पचास वर्ष का है। इस समय यदि सन् १९६९ चल रहा है, इसमें से ५० बाकी निकालने पर सन् १९१९ सिद्ध होता है, अतः उस व्यक्ति का जन्म सन् १९१९ में समझना चाहिए। या इस समय यदि संवत् २०२६ चल रहा है, ५० शेष करने से सवत् १९७६ सिद्ध होता है।

जन्म-मास का निर्णय—जन्म-मास ज्ञात करने के लिए राशि-चिह्न को समझना चाहिए। राशि-चिह्न आप सामने पृष्ठ नं० २०२ पर देखें।

राशि	चिह्न का स्वरूप
मेष	अंकुश के समान
वृष	चार के अंक के समान
मिथुन	सीधी दो रेखाओं के समान
कर्क	सात अंक का जोड़ा
सिंह	वृत्ताकार में जुड़ा ऋकार चिह्न
कन्या	अंग्रेजी के एन-पी के समान
तुला	चन्द्र के नीचे छोटी रेखा
वृश्चिक	अंग्रेजी के एम के समान
धनु	पेड़ की शाखा के समान
मकर	अंग्रेजी के वी-पी वर्ण के समान
कुम्भ	ऊपर-नीचे सर्पाकार
मीन	मिला हुआ छत्तीस का चिह्न

अब अनामिका उंगली के नीचे सूर्य-पर्वत पर इन चिह्नों में से एक चिह्न अवश्य होगा। उस चिह्न को ध्यान से देख लें, फिर इस चिह्न के मुताबिक मास निकाल लें।

राशि-चिह्न	
मेष †	४ वृषभ
II मिथुन	कर्क 66
सिंह ϰ	NP कन्या
Y तुला	वृश्चिक M
धनु Y	VP मकर
≈≈ कुंभ	मीन ӿ

चिह्न	भारतीय मास	अंग्रेजी तारीख
मेष का चिह्न हो तो	वैशाख—	२१ मार्च से १९ अप्रैल
वृष ,,	ज्येष्ठ—	१९ अप्रैल से १९ मई
मिथुन ,,	आषाढ़—	२० मई से २० जून
कर्क ,,	श्रावण—	२१ जून से २१ जुलाई
सिंह ,,	भाद्रपद—	२२ जुलाई से २१ अगस्त
कन्या ,,	आश्विन–	२२ अगस्त से २२ सितम्बर
तुला ,,	कार्तिक—	२३ सितम्बर से २२ अक्टूबर
वृश्चिक ,,	मार्गशीर्ष–	२३ अक्टूबर से २१ नवम्बर
धनु ,,	पौष—	२२ नवम्बर से २० दिसम्बर
मकर ,,	माघ—	२१ दिसम्बर से १९ जनवरी
कुम्भ ,,	फाल्गुन—	२० जनवरी से १९ फरवरी
मीन ,,	चैत्र—	२० फरवरी २० मार्च

इस प्रकार से व्यक्ति के जन्म-मास का ज्ञान किया जा सकता है।

पक्ष-ज्ञान—दाहिने हाथ के अंगूठे के पहले तथा दूसरे पोर की संधि पर यव-चिह्न हो तो कृष्ण-पक्ष, तथा यव-चिह्न न हो तो शुक्ल-पक्ष समझना चाहिए।

जन्मतिथि-ज्ञान—मध्यमा उंगली के दूसरे तथा तीसरे पोर पर जितनी रेखाएँ हों, उनमें ३२ जोड़कर ५ से गुणा कर दें तथा गुणनफल में १५ का भाग देने से जो लब्धि आवे वह जन्म-तिथि समझनी चाहिए। जैसे—

किसी व्यक्ति के दूसरे तथा तीसरे पोर पर ४ रेखाएँ हैं, उनमें ३२ जोड़ने से ३६ हुए। ३६ को ५ से गुणा करने से गुणनफल १८० आया, इसमें १५ का भाग देने से १२ लब्धि आई, शेष शून्य रहा, अतः व्यक्ति का जन्म अमावस्या को समझना चाहिए।

जन्मवार-ज्ञान—अनामिका के दूसरे तथा तीसरे पोर पर जितनी रेखाएँ हों, उनमें ५१७ जोड़कर, ५ से गुणा कर, ७ का भाग दें, जो शेष बचे, उसे रविवार से गिनें।

यथा अनामिका के दूसरे-तीसरे पोर पर तीन रेखाएँ हैं, इनमें ५१७ जोड़ें तो योग ५२० हुए; इसे पाँच से गुणा किया तो २६०० हुए; इसमें ७ का भाग दिया, तो लब्धि ३७१ तथा शेष ३ रहे; सूर्य से गिना, तीसरी संख्या मंगल आई, अतः व्यक्ति का जन्मवार मंगल समझना चाहिए।

जन्म-समय-ज्ञान—सूर्य-पर्वत पर तथा अनामिका पर, गुरु-पर्वत पर तथा तर्जनी पर, शुक्र-पर्वत पर तथा अंगूठे पर एवं शनि-पर्वत पर तथा मध्यमा पर जितनी खड़ी रेखाएँ हों, उन्हें गिन लें, फिर उनमें ८११ जोड़कर १२४ से गुणा कर दें, फिर इस गुणनफल में ६० का भाग दे दें, लब्धि घण्टे तथा शेष मिनट समझना चाहिए। यदि लब्धि २४ से ज्यादा हो तो २४ का भाग दे देना चाहिए।

उदाहरणार्थ कुछ रेखाएँ ८ हुई, इसमें ८११ जोड़ें तो कुल ८१९ हुए, इसे १२४ से गुणा किया, तो गुणनफल १०१५५६ हुए, इसमें ६० का भाग दिया तो लब्धि १६९२ तथा शेष ३६ रहे। १६९२ में फिर २४ का भाग दिया, तो लब्धि ७० तथा शेष १२ रहे, अतः १२ घण्टे ३६ मिनट का जन्म हुआ।

जन्म-समय की गणना अंग्रेजी पद्धति से रात बारह बजे से करनी चाहिए। इस प्रकार इस व्यक्ति का जन्म-समय दिन के बारह बजकर ३६ मिनट पर समझना चाहिए।

देखने में यह पद्धति जटिल लग रही होगी, परन्तु अभ्यास हो जाने पर पन्द्रह-बीस मिनटों के भीतर-भीतर हस्तरेखा से या हस्तरेखा के फोटो से व्यक्ति का सही-सही जन्म-समय तथा जन्म-तारीख निकाली जा सकती है।

इसके पश्चात् यदि प्रेक्षक को गणित-ज्योतिष का ज्ञान है तो वह इस समय पर से इष्ट तथा जन्म-लग्न निकालकर जन्म-कुण्डली बना सकता है। अपनी पुस्तक 'भारतीय ज्योतिष' में मैंने जन्म-समय पर से जन्म-कुण्डली बनाने की विधि भली प्रकार वर्णित की है। प्रेक्षक उसपर अभ्यास करके नष्ट जन्मपत्रिका सही-सही निकालकर बना सकता है।

२०

नष्ट जन्मपत्र बनाना

यद्यपि मैंने पिछले अध्याय में हस्त-रेखाओं से जन्म-समय व जन्म-तारीख निकालने की विधि देकर गणित-ज्योतिष से जन्म-तारीख निकालने की विधि समझाई है, परन्तु यदि किसी को गणित-ज्योतिष का ज्ञान न हो, तो केवल हाथ देखकर भी जन्म-कुण्डली बना सकता है। पाठकों के लाभार्थ मैं नष्ट जन्मपत्र बनाने की संक्षिप्त विधि प्रस्तुत कर रहा हूँ।

पीछे अध्याय में, मैं बारह राशियों के हस्तगत-चिह्न प्रस्तुत कर चुका हूँ। प्रेक्षकों को चाहिए कि वे भली प्रकार उन्हें समझकर दिमाग में बिठा लें, साथ ही ग्रहों के भी हस्तगत-चिह्न समझ लें। ग्रहों के चिह्न सामने पृष्ठ २०६ पर हैं और इसके अंग्रेजी पर्यायवाची निम्न-लिखित हैं :—

सूर्य	Sun	शनि	Saturn
चन्द्र	Moon	राहु	Rahu
मंगल	Mars	केतु	Ketu
बुध	Mercury	हर्शल	Herschel
गुरु	Jupiter	वरुण	Naptune
शुक्र	Venus	इन्द्र	Pluto

पाठकों को चाहिए कि वे ग्रहों के हस्त-चिह्नों को भी सावधानी-पूर्वक समझ लें।

अब सूक्ष्मदर्शक ताल की सहायता लें। अभ्यास के पश्चात् पाठक देखेंगे कि प्रत्येक ग्रह के पर्वत पर उसी ग्रह का चिह्न तथा बारह राशियों में से किसी-न-किसी राशि का चिह्न अंकित दिखाई देगा।

ग्रहों के संकेत चिन्ह तथा नाम	
4 गुरु या बृहस्पति	शनि h
रवि या सूर्य ⊙	☿ बुध
♆ प्रजापति	वरुण
शशि या चन्द्र ☾	♀ शुक्र
♂ मंगल या भौम	राहु केतु ←
इन्द्र	

जिस ग्रह के पर्वत पर जिस राशि का चिह्न दिखाई दे, उस ग्रह को जन्मपत्रिका में उसी राशि पर समझना चाहिए। उदाहरणार्थ यदि गुरु-पर्वत पर कर्क राशि का चिह्न (") दिखाई दे, तो जन्म-कुण्डली में कर्क राशि का गुरु ही होगा, ऐसा समझना चाहिए।

इस प्रकार समस्त ग्रहों की राशियाँ ज्ञात की जा सकती हैं।

जन्म-लग्न निकालना—दाहिने हाथ की हथेली की चौड़ाई नाप लेनी चाहिए, तथा उसका चतुर्थांश उसमे जोड़ देना चाहिए। फिर हृदय-रेखा तथा मस्तक-रेखा की लम्बाई भी नाप लेनी चाहिए। इन सबके जोड़ में ११ का भाग दें, जो शेष रहे वही लग्न समझना चाहिए।

जैसे हथेली की चौड़ाई ४ इंच है तो उसका चतुर्थांश १ इंच, हृदय रेखा साढ़े तीन इंच तथा मस्तक-रेखा ३ इंच, सबको जोड़ा तो ४+१+७/२+२=२३/२ हुए। साढ़े ग्यारह का तात्पर्य पूर्णांक १२ समझें।

इस १२ में ११ का भाग दिया तो शेष १ रहा, अर्थात् वृष लग्न आया। यहाँ मेष में ०, वृष को १, तथा मीन को ११ समझना चाहिए।

इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरण के व्यक्ति के जन्म-समय में वृष-लग्न चल रहा था।

ग्रह-अंश निकालना—यदि सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन करें तो प्रत्येक ग्रह के अंश भी निकाले जा सकते हैं।

पर्वत पर स्थित ग्रह-चिह्न तथा राशि-चिह्न की दूरी को पर्वत की चौड़ाई से गुणा करके उस गुणनफल को ४८ से गुणा कर दें। फिर इसमें ३० का भाग दे दें। जो शेष रहे, वही जन्म-समय में उस ग्रह के अंश समझने चाहिए।

उदाहरणार्थ गुरु-पर्वत पर गुरु-चिह्न तथा कर्क-राशि-चिह्न (पूर्व-उदाहरण के अनुसार) मे दूरी तीन-चौथाई इंच है, तथा गुरु-पर्वत की चौड़ाई १ इंच है। दोनों को गुणा किया, तो गुणनफल तीन-चौथाई इंच हुआ। इसे ४८ से गुणा किया तो ३६ हुए, तथा इसमें ३० का भाग दिया, तो शेष ६ रहे।

अतः पूर्व-उदाहरण व्यक्ति के जन्म-समय में बृहस्पति कर्क राशि

पर ६ अंशों में चल रहा था।

इस प्रकार प्रयत्न करने पर प्रेक्षक चाहे तो व्यक्ति की जन्म-कुण्डली, जन्मलग्न, जन्मकुण्डली में ग्रहों की स्थिति तथा ग्रहों के अंश तक ज्ञात किये जा सकते हैं।

प्रारम्भ में यह सब-कुछ जटिल लग सकता है, परन्तु अभ्यास करने पर नष्ट जन्मपत्र आध घंटे के अन्दर-अन्दर ज्ञात किया जा सकता है। यह पूर्ण परीक्षित है। आवश्यकता है परिश्रम, लगन एवं अध्ययन की। यदि सच्ची लगन है, तो दुनिया में कुछ भी असम्भव नहीं है।

पंचांगुलि देवी

अबतक हमने हाथ की समस्त रेखाओं तथा चिह्नरेखाओं से जन्म-तिथि, समय-निर्धारण, तथा रेखाओं से नष्ट जन्म-कुण्डली व ग्रह-अंशों का विवेचन करने की पद्धति को समझाने का प्रयास किया। इस अध्याय में पंचांगुलि देवी की साधना के बारे में सम्यक् ज्ञान प्रस्तुत किया जायेगा।

पंचांगुलि देवी तथा उसकी साधना के बारे में अनेक प्राचीन ग्रन्थों, जैन ग्रन्थों एवं संस्कृत ग्रन्थों में विवेचन आया है, जिसमें कहा गया है कि यदि नियमपूर्वक व्यक्ति पंचांगुलि देवी की साधना करे, तो शीघ्र ही भविष्यद्रष्टा एवं भविष्यवक्ता बन जाता है; हाथ देखते ही उस व्यक्ति का भूत, वर्तमान, और भविष्य उसके सामने साकार हो जाता है, तथा हाथ के अनेक सूक्ष्म रहस्यों से वह परिचित हो जाता है।

कहते हैं कि पाश्चात्य सामुद्रिक शास्त्री 'कीरो' या 'चैरो' इसी पंचांगुलि देवी की साधना किया करते थे। मेरा स्वयं का कई वर्षों का अनुभव है कि इसकी साधना से व्यक्ति को हस्त-रेखाओं का

पूर्ण और सहज ज्ञान हो जाता है। प्रसिद्ध हस्तरेखा-विद्वान् श्री लक्ष्मीनारायण जी त्रिपाठी ने भी इस सत्य को स्वीकार किया है। हस्त-रेखाओं की यह अधिष्ठात्री देवी है, अतः जो हस्तरेखा-विशेषज्ञ होना चाहते हैं, उन्हें तो इस देवी की साधना अवश्य ही करनी चाहिए।

विधि—हस्त नक्षत्र के दिन शुभ मुहूर्त में इस देवी की स्थापना करे, तथा षोडशोपचार पूजा कर पंचमेवे से ११०० आहुतियां देकर यज्ञ करे, एव नित्य दीपक तथा सुगंधित धूप जलाकर ध्यानपूर्वक निम्न मन्त्र की एक माला (१०८ जप) फेरे।

ध्यान—ओ३म् पंचांगुलि महादेवी श्री सीमन्धर शासने।
अधिष्ठात्री करस्यासौ शक्तिः श्री त्रिदशेशितुः ॥

जप-मंत्र—ओ३म् नमो पंचांगुली पंचांगुली परशरी परशरी माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौसठ काम विहंडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीवानमध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोटिंगमध्ये डाकिनीमध्ये शाखिनीमध्ये यक्षिणिमध्ये दोषेणीमध्ये शेकनीमध्ये गुणीमध्ये गारडीमध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपरे बुरो जो कोई करावे जड़े-जड़ावे तत चिन्ते-चिन्तावे तस माथे श्री माता श्री पंचांगुलिदेवि तणो वज्र निर्धार पड़े ओ३म् ठंः ठः ठंः स्वाहा।

उपर्युक्त मन्त्र मुझे मेरे पूज्य पिताजी ने सिखाया था, फिर यही मन्त्र एक विद्वान् से भी सुनने को मिला। त्रिपाठी जी की पुस्तक 'सामुद्रिक दीपिका' में भी इसे देखा, और उनके अनुसार इसका फल चमत्कारिक रहा। स्वयं मेरा अनुभव है कि इसकी साधना से मुझे आशातीत लाभ हुआ, अवर्णित ज्ञान और यश मिला। अतः यह स्पष्ट है कि यह मन्त्र चमत्कारिक है। यदि इस मन्त्र के माध्यम से पंचांगुलि देवी की साधना की जाय, तो व्यक्ति श्रेष्ठतम हस्तरेखाविद् बनकर विश्व में कीर्तिलाभ करता है।

जो पाठक इस क्षेत्र में रुचि रखते हो, उन्हें मेरी सलाह है कि वे पंचांगुलिदेवी का इष्ट रखें, तथा साधना कर सफलता के पथ पर अग्रसर हों।

उपसंहार

ईश्वर ने इस पूरे विश्व में जिस रूप में आपका निर्माण किया है, वह केवल आपका ही हुआ है; ठीक उसी रूप में न तो कोई और हुआ है, न है, और न होगा ही। अतः यह आपके हाथ में है कि इस विश्व में आप अपना क्या स्थान बनावें। यह आपपर निर्भर है कि शीघ्रता से बीतते हुए क्षणों का आप किस प्रकार से उपयोग करते हैं, किस प्रकार से आप अपना सामंजस्य इस विश्व के साथ कर पाते हैं, और यह भी आपके हाथ में है कि इस गतिशील विश्व के साथ आप कितना और किस गति से आगे बढ़ पाते हैं।

जीवन आपके सामने है, प्रत्येक क्षण आपके सामने खुला पड़ा है। आप प्रत्येक क्षण का सही-सही उपयोग करें, प्रत्येक अवसर को अपनी मुट्ठी में बन्द करें, और काल की प्रत्येक धड़कन को आप अपने अनुकूल बनावें। आप देखेंगे कि आपकी रेखाएं बदल रही हैं, ऊपर की ओर उठ रही हैं और सफलता के हाथों जयमाला पहनने लिए उत्साहपूर्वक व्यग्रता से आगे बढ़ रही हैं।

जीवन में प्रत्येक कार्य के दो पहलू है—पहला सृजनात्मक और दूसरा ध्वंसात्मक। यह आपपर निर्भर है कि आप सृजन करते हैं या ध्वंस; जीवन की महत्वपूर्ण घड़ियों का सृजनात्मक उपयोग करते हैं या ध्वंसात्मक। आप चेतन हैं, जड़ नहीं; सक्रिय हैं, निष्क्रिय नहीं; और सक्रिय का कर्त्तव्य है—हर क्षण गतिशील रहना, आगे बढ़ना, उन्नति के पथ पर अग्रसर होते रहना।

आप उठिये, सक्रिय बनिये, सृजनरत बनकर आगे बढ़िये। आप देखेंगे कि विजयश्री आपके सामने खड़ी मुस्करा रही है; आपके हाथों

की उँगलियाँ सफलता के द्वार खटखटा रही हैं : आपके चेहरे पर ताज़ा गुलाब के फूलों की तरह मुस्कराहट नाच रही है।

समय, शक्ति और श्रम आपके पास है। आप इन तीनों का उपयोग करिये। जितना जीवन, समय, शक्ति और श्रम आपको मिला है, उतना ही लिंकन, टैगोर, टॉलस्टॉय, ईसा और गांधी को भी मिला था। फिर क्या कारण है कि आप पीछे हैं? उठिये, आगे बढ़िये, सफलता की मंजिल आपको पुकार रही है।

हृदय में साहस और स्नायुओं में जोश भरकर कदम बढ़ाइये, अपने धुंधले पथ को उन्नति की ओर मोड़ दीजिये, अपनी दुर्बल रेखाओं को बदल दीजिये। यही समय है, और यही समय की पुकार है।

● ●